Bill No. 3/07-08

17

2008-0168

दैवस विनोद (सिद्धांत भाषा) -
By पं० मनीराम शर्मा - This is a
Unique treatise mostly in Hindi
with some part in Sanskrit,
Consisting several charts.
2/e, Venkatesvar Press, Mumbai,
1959 Vikram era.

1546

(30)

॥ श्रीः ॥

दैवज्ञविनोद.

(सिद्धान्तभाषा.)

जिसको

रामगढनिवासी-पं० मनीरामजी शर्मानें
विविधग्रंथोंके आधारसे निर्माण किया.

यह

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज " श्रीवेङ्कटेश्वर " (स्टीम्) यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया.

द्वितीयावृत्ति.

संवत् १९५९ शके १८२४



रामगढनिवासी-पं० मनीरामजी शर्मा.

दैवज्ञविनोदकी-भूमिका।



ज्योतिष शास्त्ररूपी रत्नाकर सागरमें अनेक रत्न जगमगाहट कररहे हैं जिनोंको आग्रह करके लेनेको सज्जन महज्जन राजा महाराजा आदि अनेक पुरुष उत्सुकभी हैं परंतु साधारण विद्वानोंको खरा रत्न मिलना बडा दुस्साध्य है तो औरोंकी तो बातही क्या है प्रथम इस समुद्रसे रत्न निकालनेमें विद्या और बुद्धिबल पूर्ण होना चाहिये फिर पीछे शरीरका उद्योगी पूर्ण हो और तीसरे किसीका आश्रयहो तब तो एक दोरत्न बडे मुष्किलसे मिल सकतेहैं नहीं तो काचके खोटे बनावटी रत्नोंसेही अपना गुजरा करलो और भोली भाली प्रजाकोंभी प्रसन्न करदो परंच "विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तमाहुर्ब्रह्मघातिनम्" इस वचनके देखनेसे ऐसे गुजारा करना ठीक नहीं ज्योतिष शास्त्र कुछ छोटा मोटा शास्त्र नहीं है किंतु सब शास्त्रोंसे शिरोमणी यही ज्योतिषशास्त्र है जिनको आगम निगम जैन बौद्ध चार्वाक स्मार्त वैष्णव शैव शाक्त फारसी यवन और बडे बडे अँग्रेजलोग मान देते हैं और सहस्रों रूपया खर्च करके नये नये आकाशके दूरदर्शी यंत्र बनवाते हैं जिनके द्वारा सूर्यग्रहणादिकोंकी यथा स्थिति आस पासके तारे ग्रहका उदयास्तकालआदि यथार्थ देखतेहैं और अपनी आत्माकों बडा कृतकृत्य मानतेहैं जैसा यह ज्योतिष शास्त्र सार्वजनिक शास्त्र है ऐसा और शास्त्र इसके दर्जे नहीं लाग सक्ता इसका मत सब मतोंमें मिलताहै जैसे वेदानुयायी लोग सूर्य चन्द्रादिक ७ वार मानतेहैं ऐसे मुसल्मानभी सातही मानतेहैं और इंग्रेज लोगभी सातही मानतेहैं और वेदांग ज्योतिष शास्त्रमें जैसा पृथ्वीका मान और ग्रहोंकी नीची ऊंची कक्षा मानीहैं ऐसे उन लोकोंनेभी ऐसाही मानाहै जिस शास्त्रका सहमत सभीका मिलताहै वह शास्त्र सर्वोत्तम और पूज्य मानाजाताहै इस शास्त्रका जाणकार हिन्दुस्थानके निवासी जनोंसे मानपावे उसमें तो आश्चर्यही क्या परंतु अन्य विलायतोंके वसनेवाले जो कि ईरानी पारसी इंग्रेज आदि लोगोंसेभी बडा मान पाताहै काशीनिवासी श्रीमान् बापुदेव शास्त्रीजीने इंग्रेज लोगोंसे महामहोपाध्यायका पद ग्रहण कियाथा और पूरा गणितका जाणकार जानकर वे लोग इनका बडाभारी आदर करतेथे महाराष्ट्र देशके निवासी वे० रा० रा० केरु लक्ष्मण छत्रेजीनेभी इंग्रेजी प्रोफेसर और अप्सरोंसे अच्छा मान पायाहै और आजकालके वर्तमान समयमें दक्षिण देशके बागलकोट निवासी वे. शा. सं. रा. रा. वेंकटेशकेतकर शर्म्माजीभी गणित शास्त्रके पूरे विद्वान हैं॥ और इन्होंने गणितके ग्रंथभी उत्तम संस्कृतमें श्लोकबद्ध निर्माण कियेहैं और मुद्रितभी हुयेहैं परन्तु उन ग्रन्थोंका विशेष प्रचार अद्यावधि कहीं देखनेमें नहीं आता कारण कि ग्रीन देशके निवासी मिष्टर लवर हानसेन न्यूकम्बसाहिब आदि इंग्रेज विद्वानोंने केन्द्रच्युति १ मन्दकर्ण २ पात ३ नीच ४ शर ५ और मध्यमगति ६ यह मूलांक उत्तमोत्तम यंत्रोंके बलसे ग्रहको वेधके यथार्थ निश्चय करके उन्होंने इंग्लिश भाषामें ग्रंथ बनायेहैं और उन्ही ग्रंथोंसे बना हुवा नाटिकल एलमनाक आदि इंग्लिश पंचांगभी देखेगयेहैं और उन्हीं ग्रंथोंका आश्रय लेके उक्त केतकरजीने यह ग्रंथ निर्माण कियेहैं॥ जिन ग्रंथोंके आश्रयसे हिन्दुस्थानका पंचांग निर्माण किया जाय तो ठीक दृक् तुल्य होसक्ताहै परंतु धर्मशास्त्रोंसे उनके तिथ्यादिकोंमें विरोध आताहै॥ कारण कि वेदांग आर्ष ग्रंथोंसे एकतिथि ६ घटीसे न्यून और ५ घटीसे अधिक कभी नहीं होसक्ती और इनके गणितसे ९ वा १० घटीकी घट बध होसक्तीहै जिससे व्रतोपवासादिमें कुछका कुछ हेर फेर

होना संभव है अतः इन ग्रंथोंका प्रचार होना बडा मुश्किल है हाँ यदि भौमादि पंचताराओंका उदयास्तसंबंधि गणित ज्योतिर्विद इन ग्रंथोंसे निज निज पंचागोंमें निवेशभी करले तो किसी प्रकारका हर्जा नहीं क्योंकि कालके अंतरसे ग्रहगणितमें अंतर हमेशा पडताही रहताहै जिसको श्रीगणेशदैवज्ञ आप कहतेहैं "ब्रह्माचार्यवसिष्ठकश्यपमुखैर्यत्खेटकर्मोदितं तत्तत्कालजमेव तथ्यमथ तद्दूरीक्षणेऽभूच्छलथम् ॥ प्रापातोथ मयासुरः कृतयुगांतेर्कात्स्फुटं तोषितात्तच्चास्तिस्म कलौतु सांतरमथाभूच्चारुपाराशरम् ॥ १ ॥ तज्ज्ञात्वार्यभटःखिलं बहुतिथे कालेऽकरोत्प्रस्फुटं तत्स्रस्तं किल दुर्गसिंहमिहिराद्यैस्तान्निबद्धं स्फुटम् ॥ तच्चाभूच्छिथिलं तुजिष्णुतनयेनाकारिवेधात्स्फुटं ब्रह्मोक्त्याश्रितमेतदप्यथवहौ कालेभवत्सांतरम् ॥ २ ॥ श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान् हिसौरार्यासन्नमेतदपि षष्टि मितेगतेद्वे ॥ दृष्ट्वाश्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टंयथा स्वकृतदृग्गणितैक्यमत्र" ॥ ३॥ भावार्थ–ब्रह्मा, बृहस्पति, वशिष्ठजी और कश्यपजी आदि महर्षियोंने ग्रहगणितशास्त्र बनाये थे सो उसी समयमें दृक्तुल्य थे पीछे अधिक कालके होनेसे सांतर उनको देखके मयासुरनाम दैत्यने सूर्यनारायणसे प्रार्थना करी तब सूर्यसिद्धांत बना और सूर्यसिद्धांतमें अंतर देखके पाराशर ग्रंथ हुआ पाराशरके विशेष कालांतरसे आर्यभट्टने आर्यसिद्धांत निर्माण किया आर्यसिद्धांतको सांतर देखके दुर्गसिंह वराहमिहर आदि आचार्योंने अपने अपने सिद्धांत बनाये और उनमें अंतर देखके जिष्णुतनय ब्रह्मगुप्तने ब्रह्मसिद्धांत बनाया और ब्रह्मसिद्धांतके पीछे भास्कराचार्यने सिद्धांतशिरोमणि कर्णकुतूहल आदि बनाये और उनमें अंतर देखके केशवाचार्यने निज नामका ग्रंथ निर्माण किया और इसके ६० वर्ष पीछे इनके पुत्र गणेशदैवज्ञने ग्रहलाघव बनाया जिसको आज ३८१ वर्ष व्यतीत हुये हैं ॥ यद्यपि बहुत वर्षोंके बीतनेसे इसके भौमादिकोंके गणितमें कुछ कुछ अंतर आताभीहै तथापि ग्रहलाघवका गणित फिरभी और ग्रंथोंसे ठीक है इसके पीछे ग्रहगणितको सुधारके नवीन ग्रंथ बनानेवाला आचार्य कोई नहीं हुवा अब इन सिद्धांतोंके बाबत कोई यह शंका करे कि कर्ण ग्रंथोंमें तो स्थूल मंदोच्चादिकोंके पठनेसे कालांतरसे ग्रहांतर होभी सक्ताहै ॥ परंतु सिद्धांतोंके गणितमें अंतर पडनेका क्या कारण है? जिसका यह समाधान है कि प्रतिवर्ष अयनकी गति चलतीही रहतीहै और ग्रहगणित सब अयनके आश्रित हैं जब वामन भगवानका जन्म भाद्रपद शुक्ला १२ का हुवाथा तब अयनस्थिति मेष और तुला ऊपरथी जिससे उनका जन्म उत्तरायणमें शास्त्रकारोंने लिखाहै ॥ और युधिष्ठिर महाराज राज्य करतेथे उस समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान आश्लेषार्ध और धनिष्ठाद्य भागमें था और वर्तमान समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान मूल और आर्द्रा नक्षत्र उपरि है ॥ यह अयनगति बडी जटिल है जिसमें जुदे जुदे आचार्योंका मतभेद है ग्रीनदेशके इंग्रेजों ने ५० पल प्रति वर्षकी मानीहै और किसी आचार्यने ५५ और किसीने ५७ पल मानीहै किसीने ५९ पल मानीहै और गणेशदैवज्ञादिकोंके मतसे ६० पल अयनकी गति विराम होतीहै जिससे विशेष वर्षोंके अंतरसे सिद्धांतगणितमें भी अंतर होना संभव है ॥ क्योंकि ऋतुका बदलना शरदी गर्मीका न्यूनाधिक होना केवल अयनके आश्रित हैं जब अधिक कालके बीतनेसे ऋतुमें फेर फार होताहै तब तो ग्रहगणितमें अंतर होना संभवही है जिससे वर्ष वर्ष के प्रति उत्तम ज्योतिर्विद ग्रहगणित देखते रहेंगे और नलिकाआदियंत्रोंसे वेध करते रहेंगे तो उनकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होगी ऐसे मैंभी इस ग्रहलाघवका नतिसंस्कार बिगडा हुवा सुधारकर इसी ग्रंथमें उसकी सारिणी बनाके लिखाहै सो विद्वज्जन योग्यबुद्धिसे देखेंगे तो स्वयं अनुभव होजायगा मेरे वृद्ध प्रपितामहा-

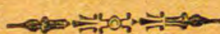
भूमिका.

दिकोंके पूर्वज कूर्मजातिके क्षत्रियोंके पुरोहित थे और वह क्षत्री नैषध देशके राजा थे और उनसे इनको भेटमें गांगवती ग्राम मिलाथा और इसी ग्रामके नामसे हमारे पूर्वज गांगवत कहलायेहैं फिर समयके फेरफारसे यजमानोंका राज्य आमेरका हुवा तबसे हमारे पूर्वजभी इस आमेर राज्यांतर्गत निवास किया इसी आमेराधिपतीके सात राणियाँ थीं जिसमें खींचीक्षत्री कुलकी कन्या आमेराधिपतीको विवाही उसके साथमें सेढोजी पाराशर ब्राह्मण आयेथे उनको शकुन शास्त्रका अच्छा ज्ञानथा किसी समयमें उनकी शकुनकी बात ठीक मिलनेसे महाराजा प्रसन्न होके खींचणजीके संतानका सेढैजीको पुरोहित बनाया छै राणियोंका और आपका पुरोहित गांगावतोंकोही रखा ॥ फिर समयकी बिलोमतासे छै राणियोंके संतानका अभाव हुवा एक केवल खींचणजीके संतान हुई जिससे छे राणी और महाराजा देवलोक हुये बाद कुर्मबंशकी पुरोहिताई गांगावत ब्राह्मणोंसे समाप्त होके पाराशर पुरोहितोंको प्राप्तभई तबसे मेरे वृद्ध प्रपितामहादिकोंका निवास स्थान जैपुर राज्यांतर्गतखंडेलेके राज्यमें गोवटी ग्राममें हुवा फिर किसी कारणसे मेरे पितामहादिकोंको सीकर राज्यांतर्गत रामगढ निवास किये आज ८० वर्षके अनुमान हुये ॥ मैं गौड गांगावतवंशज भारद्वाज १ आंगिरस २ बार्हस्पत्य ३ त्रिप्रवरान्वित भारद्वाजगोत्र माध्यन्दिनीशाखाका विद्वानोंका सेवक हूं ॥ मेरे पितामहका नाम सदारामजी था और मेरे पिताका नाम रूपरामजी था रूपरामजीके ज्येष्ठपुत्र- नरहरि और कनिष्ठ पुत्र मनीराम हुवा रूपरामजीके सहोदर सुरूपरामजीके पुत्र श्रीवल्लभको अपुत्र जाण बांधव भावसे मेरेको श्रीवल्लभजीका दत्तपुत्र बनाया मेरो जन्म वैक्रमीय संवत् १९१७ के प्रथम आश्विन शुक्ला ४ मंगलवार निशीथ समयको है और मैंने ज्योतिष शास्त्र ज्येष्ठ भ्राता नरहरिजीसे पढाहै और पीछे उज्जैण निवासी श्रीशांदीपनवंशोद्भव दीनानाथजी महाराजसे पढाहै तथापि इस ग्रंथमें किसी स्थानमें त्रुटि देखके विद्वज्जन मुझ दीन ऊपर क्षमाकरेंगे क्योंकि यह ग्रंथ भाषाका दैवज्ञोंके विनोदार्थहै और साधारण छात्रोंके पढने योग्यहै छात्रलोग इससे परिचित होंगे तो उनकी सिद्धांतोंमें प्रवेश करनेकी गति सम्यक् प्रकारसे होजायगी और वे नक्षत्रसूचीके दोषोंसे अलग होंके दर्शनीय होजाँयगे शास्त्रमें लिखाहै कि तिथिकी उत्पत्ति जाने नहीं और ग्रहसाधनभी नहीं जानै और ज्योतिषविद्याकी उपजीविका करै वह नक्षत्रसूची कहलाताहै और सिद्धांतपाठीके दर्शन करनेसे दशदिनका पाप दूर होताहै और श्राद्धमें पूज्य और भोजनार्ह है नक्षत्रसूची श्राद्ध और धर्मकृत्यमें त्याज्य गर्हणीयहै इससे नक्षत्रसूचकत्व दोष दूरकरने के लिये इस ग्रंथका अवश्य पठन पाठन ज्योतिर्विदोंको करना परमावश्यक है ॥

पं० मनीरामशर्मा.

॥ श्रीः ॥

दैवज्ञविनोदस्थविषयानुक्रमः ।



विनोदसंख्या — पृष्ठाङ्कः

विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः

इति दैवज्ञविनोदविषयानुक्रमः समाप्तः ।

दैवज्ञविनोदः।

अथ प्रथम विनोद १.

श्रीविनायकाय नमः ॥ प्रथम शास्त्रके प्रारंभमें अव्यक्त और अचिंत्यरूप परमात्माको अनेक धन्यवाद है कि, जिसकी कृपाकटाक्षके प्रकाश से सूर्यादिमंडल अखिल विश्वमें प्रकाशित होरहेहैं और उसीकी आज्ञासे कालज्ञानको सूचित करतेहैं. और वही जगत्के उत्पत्तिका मूल है.जिसके भयसे इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, धनद, रुद्र इत्यादि देव अपने अपने कर्मोंमें नियुक्त होरहे हैं. अतएव उसी करुणावरुणालय सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरको प्रणाम करके और उनकी कृपासे महाराव राजाजी श्रीमाधवसिंहजी बहादुर सीकरनरेशके रामगढ़निवासी मनीरामशर्माने जगत्का उपकार समझके यह "दैवज्ञविनोद" नाम ज्योतिष ग्रंथ बहुत ग्रंथोंका सार लेके आर्यभाषा (हिंदुस्थानी) में संग्रह कियाहै. उक्त ज्योतिष शास्त्रके तीन भेद हैं. सिद्धांत १ संहिता २ होरा ३ इन तीन भागोंमें आद्य भाग जो कि, सिद्धांत शास्त्र है उसीका कथन यहां होताहै. अब सिद्धांत किसको कहते हैं ? त्रुट्यादि प्रलयांतकालकी रचना जिसमें हो वही सिद्धात कहलाता है. सिद्धांतोंमें कौन सिद्धांत मुख्य है ब्रह्म १ सूर्य २ आर्य ३ यही तीन सिद्धात मुख्य हैं और इन्हींकाही गणित विश्वप्रचलित और मान्य है.उक्त सिद्धांतोंमें पृथ्वी और आकाशकी रचना लिखी वही इस ग्रंथमें यथार्थ लिखीहै. जिससे अधिक और भी अनुभवसिद्ध बातें जो कि, प्रत्यक्षप्रमाणमें ठीक ठीक हों वेभी यहां लिखीगई हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, इस संपूर्ण ब्रह्मांडका कारण इच्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ब्रह्म परमात्माकी प्रकृति (माया) है. वह माया नित्य है. जैसे सूर्यकी प्रतिच्छाया. और वही माया जड है. अतः चैतन्य परमात्माके संयोगसे इस संसारने नटवत् मायया करती हुई प्रथम बुद्धि उपजाती भई. वह बुद्धि कैसी कि,इच्छामयी.

महत्तत्व जिसके स्वरूप हैं.महत्तत्वसे अहंकार हुवा. वह अहंकार रजोगुण, १ सतोगुण २ तमोगुणमय ३ तीन प्रकारसे हुवा. रजोगुण और सतोगुण यह दोनोंसे दश इन्द्रियाँ उत्पन्न भई और उक्त दोनोंसे मनभी उत्पन्न हुवा. दश इंद्रियोंमें कर्ण १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ यह पांच ज्ञानेंद्रियें कहलातीं हैं और वाणी १ हाथ २ पैर ३ लिंग ४ गुदा ५ इन्होंका नाम कर्मेंद्रिय हैं. तमोगुण और सतोगुणसे अहंकार मिलके पंचतन्मात्रा जो कि, शब्द, १ स्पर्श, २ रूप, ३ रस ४ गंध ५ उत्पन्न हुवाहै और पंचतन्मात्रासेही पंच महाभूत जो कि शब्दसे आकाश, १ स्पर्शसे वायु, २ रूपसे अग्नि, ३ रससे जल, ४ गंधसे पृथ्वी, ५ उत्पन्न हुए हैं, उक्त पांच ज्ञानेंद्रियोंमें कर्णविषय शब्द, १ त्वचा विषय स्पर्श, २ नेत्रविषय रूप ३ जिह्वा विषय स्वाद ४ नासिका विषय सुगंध दुर्गंधका पहिचानना. ५ और कर्मेंद्रियोंमें वाणी विषय शब्द, १ हाथ विषयग्राह्य २ पैर विषय हलन चलन, ३ लिंगविषय मैथुनादि, ४ गुदाविषय मलका परित्याग करना. प्रधान, प्रकृती, शक्ति, नित्या, विकृति, यह प्रकृतीकेही विशेषण हैं.महत्तत्त्व, १ अहंकार, २ पंचतन्मात्रा, ७ प्रकृती; ८ दश इंद्रियाँ, १८ एक मन, १९ पंच महाभूत २४ एवं चौवीस तत्वोंसे मिलके शरीररूपी घर बनताहै फिर जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मोंके अधीन हो उक्त शरीररूपी घरमें मन दूतके वश हो निवास करताहै. अतएव जीवसंयुक्त शरीरको नामही देही है ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सृष्ट्युत्पत्तिकथनं नाम प्रथमविनोदः ॥ १ ॥

अथ कालमीमांसां व्याख्यास्यामः ।

मनुष्य देहीके सुखके साधन वेदमें लिखे दर्श पूर्णमास याग और अमुक तिथी, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न, नवमांशोंमें अमुक काम करनेसे सुख होना वा दुःख होना यह विवेक ज्योतिष शास्त्रसेही जाना जायगा. अतएव

ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान्के नेत्र हैं. जैसे नेत्रोंसे वर्तमान वस्तुवोंको मनुष्य देख सक्ताहै वैसे ज्योतिष शास्त्रसे भूत भविष्य और वर्तमान कालकी बातें ज्योतिर्विद् देख सक्ताहै इसी कारणसेही तो इसका नाम कालविधान शास्त्र है. अतएव इस शास्त्रके पढनेवालोंको प्रथम कालज्ञान होना चाहिये. वह काल दोप्रकारसे है अमूर्तकाल १ और मूर्तकाल २ जिसमें अमूर्तकालकी मीमांसा नारदके मतसे लिखतेहैं. भली भाँति मनुष्य सोताहुवा नेत्र खोले उन्हीं नेत्रके खुलती समयके त्रिंशत् भागका नाम एक तत्पर है. और तत्परके शतांशका नाम एक त्रुटि है. एवं त्रुटिके सहस्रांशको एक लग्न कहाजाताहै.यह लग्न योगाभ्याससे योगीराजही जान सक्ताहै. बाकी और मनुष्य नहीं जान सक्ता. इति अमूर्तकालकी मीमांसा.

अथ मूर्तकालकी मीमांसा—यह मूर्त कालका वर्णन सूर्यसिद्धान्तसे लिखा जाताहै. स्वस्थ मनुष्यके ६ प्राणका नाम एक पल और ६० पलकी एक घडी. और साठ घडियोंका एकदिन और ३० दिन का एक मास, एवं बारा मासोंका एक वर्ष यह ३६० दिनोंका सावन वर्ष कहलाताहै. और इन सावनदिनके प्रमाण ३६५ दिन १५ घडी ३१ पल ३० विपल यह सौर-वर्ष कहलाताहै.सौर वर्ष क्या १ उक्त दिनादिमें सूर्य घूमके वही ठिकाने आताहै कि, जहांसे चलाथा. और वही सावन दिनके प्रमाण ३५४ दिन, २२ घडी १ पल २३ विपल यह चाद्रवर्ष कहलाताहै चांद्रवर्ष क्या १ चैत्रशुदि १ से फिर चैत्रवदि ३० पर्यंत यह चांद्रवर्षका भोग है. और उक्त सावनदिनोंके प्रमाणही ३६१ दिन १ घडी ३६ पल ११ विपल यह बार्हस्पत्य वर्ष कहलाताहै. बार्हस्पत्य क्या १ बृहस्पतीका राशिभोग और प्रभवादिसंवत्सरभोग इतने दिना-

---

१ नारदः—स्वस्थेनरेसुखासीनेयावत्स्पंदातिलोचनम्॥तस्यत्रिंशत्तमोभागस्तत्परः परिकीर्तितः ॥१॥ तत्पराच्छतशा भागस्त्रुटीरित्यभिधीयते ॥ त्रुटेःसहस्रभागोयो लग्नकालः स उच्यते ॥ २ ॥ देवोपितंन जानातिकिंपुनःप्राकृतोजनः ॥ निमित्तमात्रंदैवज्ञतद्वशाच्चशुभाशुभम् ॥ ३ ॥ इति विवाहवृं-दावनटीकायां विवक्षितम् ।

दिकोंका है. अब इन सबका प्रयोजन यह है कि, नित्य व्यापार प्रतिदिनके व्याजमें वा अहर्गणादि तो सावनवर्षसे सिद्ध होताहै और वसंतादि ऋतुओंका ज्ञान सौर वर्षसे सिद्ध होताहै. एवं श्रौतस्मार्त कर्म वा गर्भाधानादिगणना चांद्र-सेही सिद्ध होसक्तीहै. और संवत्सरादि फलकांक्षा, संकल्पसिद्धि बार्हस्पत्य वर्षसेही सिद्ध होतीहै. अतएव इन चार प्रकारके वर्षादिमानही यहां लिखा-गया. वर्षोंका मान तो औरभी है परंच ग्रंथविस्तृतिभयसें वे यहां नहीं लिखा. उनकी अपेक्षा किसीको हो तो वह सूर्यसिद्धांतमें देख लेवें इति मूर्तकालकी मीमांसा.

अथ कालांगवर्णनम्.–कालभगवान्‌का आत्मा सूर्य ॥ मन चंद्रमा ॥ सत्व मंगल ॥ वाणी बुध ॥ ज्ञान और सुख गुरु॥ काम शुक्र ॥ दुःख शनी और इसी प्रकारसे कालभगवान्‌का मस्तक मेष ॥ मुख वृषभ ॥ ग्रीवा मि-थुन ॥ हृदय कर्क ॥ उदर सिंह ॥ कटि कन्या ॥ बस्ति तुला ॥ व्यंजन वृश्चिक ॥ ऊरू धन॥जानु मकर ॥जंघा कुंभ॥ पैर मीन॥ अब यहां ध्यान देनाचाहिये कि, सूर्यचंद्रमाके अंतरसे तिथि बनती है और केवल चंद्रमासे नक्षत्र बनताहै. एवं सूर्य चंद्र इन दोनोंके मिलानेसे योग बनताहै. और तिथिका भोग आधा करनेसे करण बनताहै अत एव सूर्य चंद्रमा कालभगवान्‌के अंग हैं जब तिथि वार नक्षत्र योग करण यह सब पाँचो तो कालांग होनाही चाहिये क्योंकि इनकी सिद्धिभी तो उक्त सूर्य चंद्रमासेही है. इसीसे इन पांचवस्तुवोंके गणित का नाम पंचांग लिखा जाता है.॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते कालमी-मांसावर्णनं नाम द्वितीयविनोदः ॥ २ ॥

---

१ सायनसंक्रांतिसे ऋतुकी प्रवृत्ति होतीहै जैसे मीन मेषसे वसंत १ वृष मिथुनसे ग्रीष्म २ कर्क सिंहसे वर्षा ३ कन्यातुलसे शरद ४ वृश्चिक धनसे हेमंत ५ मकर कुंभसे शिशिरऋतु ६ होतीहै ।

अथ भूगोलवर्णनम् ।

इस ब्रह्मांडको पंचास कोटि योजनके विस्तारमें पुराण शास्त्रकारोंने लिखा है जिसमें भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्य यह सप्त लोक आर तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल यह सप्त पाताल मिलके चतुर्दशलोकों की स्थिति है और इसी ब्रह्मांडके बीच यह भूगोल (पृथ्वी) नारंगीसदृश गोल है.जिसका गोला ज्योतिषके मतसे ४९६७योजनोंके लगभग है.परंच शास्त्रकारोंने रेखामापसे जो पृथ्वीका माप लिखाहै वही यहां लिखाजाता है. उक्त पृथ्वीके चारदिशामें चार पुरं प्रथम वसे हैं. जिसमें पूर्व यमकोटि, १ दक्षिण लंका, २ पश्चिम रोमकपत्तन, ३ उत्तर सिद्धपुर, ४ इनमें दक्षिण लंकासे उत्तर सिद्धपुरपर्यंत जो दक्षिणोत्तर सूत्ररेखा है वह भूमध्यरेखा कहलाती है और पूर्व यमकोटीसे पश्चिम रोमकपत्तनके सूत्रकी पूर्वापर रेखा है जिसे विषुवति रेखा कहते हैं.जिसका वर्णन सविस्तर आगे होगा यहां तो भूमध्यरेखाका वर्णन होरहा है. लंकासे उत्तर१२५ योजन कुमारी कन्या इससे उत्तर८०योजन कांचीपुरी, एवं ३६ योजन किष्किंधा जिससे उत्तर ९ योजन परेल ग्राम, जिससे उत्तर १० योजन बासिंब गांम. जिस्से उत्तर ५० योजन उज्जैनपुरी, उज्जैनसे उत्तर१०८योजन कुरुक्षेत्र जिस्से उत्तर ८२४ योजनपर सुमेरु है. अब यह दक्षिणोत्तर सारे १२४२ योजन

---

१ अंडमध्यगतःसूर्यो द्यावाभूम्योर्यदंतरं॥सूर्यांडगोलयोर्मध्ये कोटयःस्युः पंचविंशातिः॥इति भागवते. पृथ्वी सांडकटाहेन पंचाशत्कोटिविस्तरा इत्यग्निपुराणे । योजनानां च पंचाशत्कोटिसंख्या प्रमाणतः । ब्रह्मांडस्यैव विस्तारो मुनिभिः परिकीर्तितः । इति महाशिवपुराणे ।

२ पृथ्वीका गोला २५ हजार मैलका सूर्यके गिरद घूमरहाहै. ऐसे इंग्लिशभूगोलोंमे लिखाहै. और शास्त्रकारोंने वीसहजार कोशके लगभग सारी पृथ्वी लिखी. जिससें दोनोंका मत एक मिलताहै. क्योंकि मीलके मापसे शास्त्रके कोश कुछ बडेहैं.परंच पंचसिद्धांतिकाचार्य वराहमिहर कहताहै की पृथ्वी घूमे तो पक्षियोंकूं अपना ठिकाना कहांसे मिले.क्योंकि वे तो हमेश आकाशमेंही रहाकरतेहैं.इससे पृथ्वी अचला है।

३ पुरीराक्षसीतत्वभूदेवकन्याततो नग्रकांचीतुखाष्टप्रमाणैः॥ सितः पर्वतोमंगरामैश्च संख्याततोयोजनैर्नन्दभिः पर्यलीस्यात् ॥ ततोयोजनैःखेंदुभिर्वत्सगुल्मंखबाणैः सुदूरैरवंतिप्रमाणम् ॥ कुरुक्षेत्रमष्टोत्तरैर्योजनैःसज्जिनैर्नागयुक्तैः प्रमाणैः सुमेरुः इति सिद्धांतसारे. प्रोक्तो योजनसंख्ययाकुपरिधिःसप्तांगनंदाब्धयः इति शिरोमणौ ।

लंकासे सुमेरुतक हुवा और सुमेरुसे उत्तर पारिवेट, मेलविल सौद, आलव-त्सलांट, लाद, श्रेत्सलेव, अपावास्का, ब्रिंतिस, आकेगान, वगलानदी, कारि-एतेसकेप, ज्वालापहाड, कालिंमाज्वलत गालपा गासवेटतक १२४२योजन सिद्धपुर है और सिद्धपुरसे उत्तर सालाईगोमेथ, आल, अलेकसांदवेट, और समुद्र विक्टोरिया लांदसें. ८४०मैल आगे दक्षिण ध्रुवके ठीक अधस्थ १२४२ योजन असुरस्थान है जिससे ऐदर्विलांद, साक्दानल्दसवेट, करग्वे-लनलांद, आमस्तरदामवेट, सेत पालवेट, सेन्ट्रीवेट, और चागास बेटके सूत्रतक घूमके १२४२ योजन फिर वही लंकातक एवं सर्व मिलके भूगोल-योजन ४९६७ के विस्तारमें है और उक्त शहरोंका नाम लिखे वे ठीक मध्य रेखाके समीप वसते हैं. और इन शहरों के सूत्र बीच जो शहर वा ग्राम है उन्हींको भी मध्यरेखाके बीचही समझना चाहिये. जिनका योजनात्मक परिमाण मुझको ठीकठीक नहीं मिला जिससें वे यहां नहीं लिखागया अतएव ज्योतिर्विदोंको उचित है कि, जो मध्य रेखाके ग्राम पूर्वापर जो कि अपने समीप है उसीकी मध्यरेखा ग्रहणकरे दूरकी न करे. जैसे कि, टोसी गर्गराट, वैराट इत्यादि ग्रामोंकी इनके समीप वसनेवाले ग्रहण करते हैं अब ध्यान देना चाहिये कि, यह पृथ्वीका भ्रमणहोना आर्यसिद्धांतमें लिखा है और "आयंगौ" इत्यादि वेदमेंभी लिखाहै. बाकी और सिद्धांतोंमें पृथ्वीको अचलही मानाहै.लेकिन चल वा अचल जो हो सो हो ज्योतिर्विदको चल वा अचलसे कुछ प्रयोजन नहीं.ग्रहगणित तो दोनोंसेही समान आसकेगा. उक्त पृथ्वी सूर्यके आकर्षणसत्तासे ब्रह्मांडके बीच ठहर रही है नीचे आधार इस्के किसीकाभी नहीं. यदि आधार मानोगे तो फिरभी उसके नीचे किसी काभी आधार मानना होगा.आखिर थकते थकते पीछे यही कहोगे कि पृथ्वी

---

१ आर्यभट्टः अनुलोमगतिनौंस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत् ॥ अचलानिभानितद्वत्समपश्चिम-गानि लङ्कायाम् ।

२ प्रजानान्मित्रोदाधारपृथ्वीमुतद्यांमित्रः कृष्टीरनिमिषाभिचष्टे। यह प्रमाण ऋग्वेदसंहिताके तीसरे अष्टक और चौथी अध्यायके पंचमवर्गमें है ।

स्वशक्त्याश्रित है जिससे पहिलेही स्वशक्त्याश्रित कहना श्रेष्ठ है. जैसे सूर्य चन्द्रादिकभी तो अपनी अपनी सत्तासे ठहर रहेहैं वैसे पृथ्वीभी ठहर रही है. और कितने शास्त्रकारोंने चारों दिग्गज चारों दिशावोंमें लिखेहैं वे यथार्थ हैं.परंच वह दिग्गज भूगर्भके अधोभागमेंही है बाह्य नहीं.और सप्त पातालरचनाभी उक्त पृथ्वीके उदरमेंही है. जो पृथ्वीके बाह्यके विवर (दरार) हैं वे उन पातालवासियोंके आनेजानेके मार्ग हैं.और शेष वा कूर्मभी उक्त पृथ्वीके उदरहीमें होंगे. वस्तुतः अनेक शास्त्रोंमें जो लिखाहै उसे सत्य नहीं कहना—यह एक अस्मदादिकोंकी भूल है क्योंकि शास्त्रोंकी एक संगति लानी बडी कठिन है. इन बातोंमें बडे बडे आदमी चक्कर खाजातेहैं. तो अस्मदादिलोक तो किस बागकी मूली है. अब आगे देखिये कि, इसी पृथ्वीके चौफेर पशु पक्षी मनुष्य समुद्र, नदी, बन, पर्वत इत्यादि बसरहेहैं. और उन पर्वतोंके बीच जो पृथ्वीहै उसीको खंड बोलते हैं. अब यह दक्षिण समुद्रसे उत्तर समुद्रपर्यंत और पश्चिमसमुद्रसे पूर्वसमुद्र पर्यंत पृथ्वीके अर्धभागकोही शास्त्रवेत्ता जंबुद्वीप कहते हैं. उक्त समुद्रके जल खारा होनेके कारण इसका नाम क्षारसमुद्र रक्खागया.उक्त जंबुद्वीपके नव खंड हैं. और जिसमें अस्मदादि बसते हैं. यह भारतवर्ष कहलाता है. और भरतखंडभी इसीको कहते हैं. जिसकी सीमा पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो समुद्रसे घिरा है.और उत्तरसीमा इसकी हिमालय पर्वत है.वह हिमालय और सब पर्वतोंसे ऊंचा है. ब्रह्मपुत्रनद इसकी पश्चिम सीमासे निकलके तिब्बतके देश हो आया है इन पहाडोंमें हिम अर्थात् बर्फ अधिक रहनेके कारणसेही इसका नाम हिमालय रक्खागया

---

१ वाल्मीकीयरामायणे–खन्यमानेततस्तस्मिन्ददृशुःपर्वतोपमम्॥दिशागजंविरूपाक्षंधारयंतं महीतलम्॥ ब्रह्माके एकदिनमें पृथ्वीके चौफेर एक योजन उंचेतक मृत्तिका चढतीहै. और ब्रह्माकी रात्रिमें वही मृत्तिकाकी हानि होतीहै इसका प्रमाण आर्यसिद्धांते ब्रह्मदिवसेनभूमेरुपरिष्टाद्योजनंभवतिवृद्धिः॥ दिनतुल्यैयैवरात्र्यामृदुपचितायास्तदिहहानिः॥

२ भूगताब्धिजलंक्षारंलवणार्णवसंज्ञकम्॥ तद्वेलावलयस्थानांसमंताद्यत्रकुत्रचित्॥ इतितत्वविवेकसिद्धांते। ततः समंतात्परिधिः क्रमेणायं महार्णवः इत्यादिसिद्धांतवाक्यों से इसी समुद्रसे अनेक समुद्र भेद हुयेहैं।

इस पर्वतपर पशुपक्षी भी नहीं जासक्के तो मनुष्य क्योंकर जायगा. आकाशके रहनेवाले बादलभी कटिमेखलासे अधोभागमेंही लटकते रहते हैं. किसी दिन आकाश निर्मलमें बर्फ बिनाके ऊँचेसे पहाडचढनेसे चित्तको बडा आनंद आता है. पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो पहाडही पहाड दृष्टिआते हैं कि, जहां अपनी दृष्टि टिके और कितने कितने हाथ लंबे और मोटे जंगली वृक्षोंको हरियाली के मानो उन पर्वतोंको हरित वस्त्र पहनाये हैं. और अच्छीं अच्छी नदियोंका पानी इन वृक्षोंकी जडोंमें सूर्यके तेजसे ऐसा चमकता है मानो उन वस्त्रोंको किनारीगोटा लगाये हैं. और समुद्रके तरंगकी तरह ऊंचे नीचे दिखाई देरहेहैं. इन्हीं शिखरोंके उत्तरकी तरफ अर्धचंद्राकार अपनी दृष्टि टिके जहांतक बर्फहीके पहाड दीख पडतेहैं वे पर्वत इतने ऊंचे हैं मानो ईश्वरने आकाशके सहारेके लिये खंभे बनायेहैं. सूर्यके तेजसे ऐसे चमक रहेहैं कि, मानो पृथ्वी अपना हाथ निकालके हीराके जटित कंकण दिखलारहीहै. और अपने पैरोंकी तरफ देखो तो हरित वनस्पती और फूलोंके मानो गालिचे बिछ रहेहैं. इन पहाडोंमें सबसे ऊंचे शृंग धवलगिरीके हैं जिसमेंसे गंडकीनदी निकलीहै जमनोत्रीके पहाड इनसे कुछ उत्तर है. जिसको वहाँवाले पुरगिलनामसे बोलाकरते हैं.और सतलज वा दौली यह दोनों नदियाँ बदरीनाथके पश्चिमपहाडोंसे निकलीहै. और इन पहाडोंकी श्रेणी सिंधुनदसे ब्रह्मपुत्र नदतक चलीगई है.उक्त पहाडों पैं साढेछहजार हाथ ऊंचेतक वृक्ष या खेतीवारियां उत्पन्न होतीहैं. इसके ऊपरबर्फही बर्फ है शीतऋतुमें तो छःहजारहाथ नीचे भी कुछ कुछ बर्फपडतीहै. परंच गर्मीके दिनोंमें नहीं पडती. यहांतक मनुष्य पशु पक्षी पहुँच सक्केहैं. यह अजब महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरकी है कि, एकऋतुमें एकही जगह तीनों ऋतु दरशा रहेहैं पृथ्वीके समीप तो गर्म ऋतुके वृक्ष और जिससे ऊंचा वर्षाऋतुके वृक्ष और उससे ऊंचे पहाड चढदेखो तो शरदतुके वृक्ष दिखलाई देरहेहैं और बर्फकी हदके समीप जानेपर भोजपत्रके सिवाय कोईभी वृक्ष दि

खलातानहीं. उक्त हिमाद्रि पर्वतोंसे छोटा विंध्याचल इसी भारतवर्ष के मध्यमें है.यह पर्वत खम्भातकी खाडीसे नर्मदानदीके उत्तर जीले भागलपूरमें गंगाके किनारेतक गयाहै. और सह्याद्री विंध्याचलके पश्चिम शिरेसे लेके समुद्रके निकटही निकट कुमारी अंतरीपतक चला गयाहै इसी सह्याद्रीके दक्षिण भागका नाम मलयागिरीहै. और बंगालेकी खाडीके निकटही निकट कावेरी से विंध्यके पूर्वसिरेतक पहाडोंकी छोटी एक श्रेणी है.जिससे पूर्वघांट बोलतेहैं. और पूर्वघांटके बीच दक्षिणकी तरफ और जो पहाड है उसीका नाम नीलगिरी है. और शेखावाटीमें मालकेतुकी श्रेणियाँ कितनीही दूरतक चलीगई हैं.और पुष्करतीर्थके चौफेर जो पहाडहै वे अर्बली वा अजयमेरु के नामसे बोले जातेहैं. और उक्त पर्वत अर्बुदाचलकी श्रेणियाँही जानपडतीहैं.आर छोटे छोटे पहाड तो शेखावाटीमें कितने स्थानोंपर हैं लेकिन ग्रंथविस्तृतिभयसे वे यहां नहीं लिखेगये उनके नाम उनके समीप बसनेवाले कहकर पुकारतेहैं. वही ठीक हैं.अब जहां इतने बडे बडे पहाड हैं वहां नदीभी जरूर होना चाहिये सो नदी इस भरतखंडमें इतनी मुख्य हैं. जिनका नाम गंगा, यमुना, सरयू, गंडकी, शोण, कोसी, तिष्ठा, चम्बल, सिंधु, झेलम, चनाव, रावी, व्यासा, सतलज, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, तापी, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इन्होंमें इस देशकी प्रधान नदी गंगा है यह गंगा गंगोत्रीके पहाडसे चलके और अनेक नदियोंका पानी अपने साथ लेतीहुई पांचकोसके पाटसे कपिलमुनीके आश्रम होके समुद्रसे मिलीहै.जिसको गंगासागरसंगम कहते हैं. और ब्रह्मपुत्र-नद हिमालयके उत्तर अलंग मानससरोवरसे निकलके गंगासे मिलाहै. और यमुना जमनोत्रीके पहाडसें बहके प्रयागमें गंगासे मिलीहै. सरयू और गंडकी कौशिकी और त्रिस्रोता,वा तिष्ठा यह चार नदियां हिमालयके बर्फी पहाडों-से निकलके पहली छपरेके समीप दूजी पटनेके सामने तीसरी भागलपुरके नजदीक चौथी करतोयाने लेतीहुई नबाबगंजके पासही गंगासे मिलीहै. और कर्मनासा एक छोटी नदी काशी और बिहारके जिलेके बीच बहकर

गंगासे मिलीहै. चर्मण्वती वा चंबल और शोण यह विंध्याचलसे चलके पहली इटावेके नजदीक जमुनामें खपीहै.दूसरी सरयू और गंडकीके बीच जाके छपरेकेपास गंगासे मिली है. सिंधू नदी जिसको भाषामें अटक कहते हैं यह नदी हिमालयके पार गारु शहरके पास कैलासपर्वतकी उत्तर अलंगसें निकलके हजार उन्मान कोश बहके पश्चिमसमुद्र में मिली है और झेलम चनाब व्यासा रावी सतलज यह पांचों नदियां हिमालयसे निकलके सब इकट्ठीहो पंचनद के नामसे मिटनकोटके नीचे सिंधुमें मिली है. इन पांच नदियोंके देशका नाम पंजाब कहलाता है उक्त पांच नदियोंमें सतलज नदी हिमालयके उत्तर भागसे मानससरोवरके पास रावणहृदसे निकली हैं. और बाकी रही वे नदियां हिमालयकी दक्षिण अलंगसे आई हैं झेलम वितस्ता जंगसियालेसे दशकोशनीचे चनावमें मिली है. और रावी जिसका नाम शुद्धऐरावती है वह मुलतानसे वीसकोस ऊपर चलके चनावहीमें मिली है. व्यासा वा विपासा अभयकुंडसे निकलके हरिपत्तनके समीप सतलजमें मिली है. और सतलज जिसका शुद्धनाम शतद्रु है यह नदी मिटनकोटके नीचेही सिंधु में मिली है. चंनाव वा चंद्रभागा हिमालयसे निकलके मिटनकोटसे थोडी दूर जाके खपी है. और नर्मदा शोणके उद्गमस्थानके उत्तरसे निकलके भडोचके पासही खंभाहतकी खाडीमें मिली है. और तापीभी सतपुडा पहाडसे निकलके सूरतसे दसकोस पर पश्चिम समुद्रसे मिली है. महानदी नागपुरके इलाकेसे निकलके कटकके पास अनेकधारा होके समुद्रसे मिली है गोदावरी पश्चिमघांटमें त्र्यंबकसे निकलके बरदा और बाणगंगासे मिलके इनको साथ लेके राजमहेंद्रीके नीचे समुद्रसे मिली है.कृष्णाभी सह्याद्रीके पहाडोंसे सितारेके नजीक मालपर्व गतपर्व भीमा वा भीमरथी तुंगभद्रा इन पश्चिम घांटसे निकली हुई नदियोंको साथ लेके मछलीबंदरके पास समुद्रसें मिलीहै और कावेरी नीलगिरीसें निकलके तिरूचीसे थोडी दूर आगे समुद्रमें मिलीहै. और क्षिप्रानदी उज्जैनके पश्चिम तरफ बहती हुई आगे चलके और नदियोंमें मिलके समुद्रमें मिली है ॥ इति नद्युत्पत्तिः ॥

अथ देशव्यवस्था—अब भारत वर्षके मध्यके और आठोंदिशावोंके जो देश हैं वे क्रमसे यहां लिखे जाते हैं. पूर्व और पश्चिम समुद्रके हिमाचल और विंध्याचलके बीच जो देश बसताहै वह आर्यावर्त कहलाताहै. उक्त आर्यावर्तमें कुरुक्षेत्र पांचाल[1] मत्स्यदेश[2] और शूरसेन[3] इन देशोंको ब्रह्मऋषि देशके नामसे बोलते हैं. और भद्र, अरिमेद, मांडव्य, शाल्वनीक उज्जिहान. संख्यात मांडवार[4] वत्स[5]घोष यामुन[6] सारस्वत[7] मत्स्य माध्यमिक माथुर शूरसेन. उपज्योतिष. धर्मारण्य, गौरमुख, उद्देहिक पांडुगुड अश्वत्थ पांचाल. साकेत कंक कुरु[8] काल कोटि कुक्कुर पारियात्रपर्वत औदुंबर कापिष्ठल[9] हस्तिनापुर यह देश जंबूद्वीप-के मध्यमें है॥ और अंजन वृषभध्वज पद्म माल्यवान. व्याघ्रमुखजन; सुह्म-देश, कर्वटासहर चांद्रपुर शूर्पकर्ण खस[10] मगध शबरगिरि[11] मिथिल[12] समतट उड्र अश्ववदन दंतुर प्राग्ज्योतिष[13] लौहित्यनद क्षीरोद[14] पुरुषभक्षक उदयाद्रि भद्र गौडपौंड्र उत्कल काशि मेकल आंबष्ठ एकपद तामलितिक को-शल[15] वर्धमान यह देश पूर्वके[16] हैं॥ और दक्षिणकोशल कलिंग[17] वंग अंग[18] उपवंग जठरांग शूलिक विदर्भ[19] वत्स आन्ध्र[20] चेदि[21] ऊर्ध्वकंठ वृष-स्थान, नारिकेल, चर्मद्वीप विंध्यपर्वत त्रिपुरीलोक श्मश्रूधर हेमकूट व्यालग्रीव महाग्रीव किष्किन्धा[22]देश कंटकस्थल निषाद[23] राष्ट्र पुरीद दशार्ण[24] शबर पर्णशबर यह अग्निविदिशाके हैं॥ और लंका[25] कालाजिन सौरीकीर्ण-तालिकट गिरिनगर मलयाचल[26] दर्दुर माहेंद्र मालिंद्य भरु कच्छ कंकट टंकण वनवासी शिबिक फणिकार कोंकण[27] आभीर आकरस्थान. वेणानदी आवं-तक[28] दशपुर[29] गोनर्द[30] केरल कर्णाटक महाटवी चित्रकूट नाशिक कोल्लगिरी.

---

१ कानपुरप्रदेश. २ जयपुरराज्य. ३ कोसी मथुरावगेरे. ४ जोधपुर जेसलमेर राजधानी. ५ हरि-याणा. ६ पूर्वयमुनावासी. ७ सरस्वतीके समीपवासी. ८ कुरुक्षेत्र. ९ कैथल. १० खसियालोक. ११ पटनेसे दक्षिणवैराडतक. १२ बंगालेकी ईशानसीमातक. १३ आसाम. १४ ब्रह्मपुत्र. १५ अयोध्या. १६ अयो-ध्यासे दक्षिणराज्य. १७ बंगालो. १८ भागलपुरसे बंगालेतक. १९ नागपुरका जिला. २० तैलंग. २१ चंदेरी. २२ म्हैसुरप्रांत. २३ कोलीराज्य. २४ विंध्याद्रिके दक्षिण देश. २५ मालदीवबेटसे पूर्व. २६ मलबार. २७ सूरत मुंबई बीचमें. २८ उज्जेणवासी. २९ मालवखारीनदीसे उज्जेनतक. ३० तंजलीकी जन्मभूमी.

चौल क्रौंचद्वीप जटाधर कावेरीनदी ऋष्यमूक पर्वत मोतीखांन अत्रिऋषीक आश्रम वारिचर धर्मपत्तन गणराज कृष्णवेल्लूर पिशीक शूर्पाद्रि कुसुमनगर तुंबवन कार्मण्येक दक्षिण समुद्र तपस्याश्रम कांचीपुरी मरुचीपत्तन चेर्यायक सिंहल ऋषभ बलदेवपत्तन दंडकवन तिमिंगिलासन. भद्रकच्छ कुंजरदरी ताम्रपर्णी नदी यह दक्षिणके देश हैं॥ और पल्हव कांबोज सिंधु सौवीर वडवामुख अरवं अंबष्ठ कपिलनारीमुख आनर्त फेणगिरी यवन भाकर कर्णप्रावेय पारशव शूद्रवर्बर किरातखंड क्रव्याश्य आभीर चंचूक हेमगिरि सिंधुनद कालक रेवताचल सौराष्ट्र बादर द्रविडमहार्णव. यह देश नैर्ऋत्यदिशाके हैं॥ और मणिमानपर्वत मेघवान वनौघ क्षुरार्पण अस्ताद्रि अपरांतक शांतिक हैहय प्रणस्ताद्रि बाक्काण पंचनद रमठ पारत तारक्षितिजंग वैश्यकनक शक निर्मर्याद म्लेच्छ यह पश्चिमके देश हैं॥ और मांडव्य तुखार तालहल मद्र अश्मक कुलूत लहड स्त्रीराज्य नृसिंहवन, खस्त, वेणुमतीनदी, लूंका, गुरुहा मरुकच्छ चर्मरंग एकलोचन शूलिक दीर्घग्रीव दीर्घास्य. दीर्घकेश यह देश वायव्यके हैं॥ और कैलासगिरि हिमाचल वसुमान धनुष्मान क्रौंचमेरु उत्तरकुरु क्षुद्रमीन कैकेय वसति उत्तरयामुन भोगप्रस्थ अर्जुनायन आग्नीध्र आदर्श अंतर्द्वीप त्रिगर्त तुरगानन अश्वमुख, केशधर, चिपिटनासिक, दासेरक, वाटधान शरधान, तक्षशिल, पुष्कलावत, कैलावत, कंठधान, अंबर, मद्रक, पौरव, मालव, कच्छदंड, पिंगलक, माणहल, हूण, कोहत; शीतक, मांडव, भूतपुर, गांधार, यशोवती, हेमताल, राजन्यखचर, गव्य, यौधेय, दासेय, श्यामाकक्षेम, धूर्त, यह उत्तरके देश हैं॥ और मेरुक, नष्टराज्य, पशुपालकीर, काश्मीर, अभिसार, दरद, तंगण, कुलुध, सैरिंध्र, वनराष्ट्र, ब्रह्मपुर, दार्व, डामर, वनराज्य, किरात, चीण, कौणिंद भल्लापलोल जटासुर कुनट खस घोष कूचिक एकचरण अनुविश्व

१ शठकोपकी तपोभूमी. २ आर्यभटकी जन्मभूमी. ३ सिलोनबेट (लंकासमीपवर्तीदेश) ४ सिंधुनदीसें उत्तरदेश. ५ अर्बकामुल (मक्कामदीना) ६ पार्शियोंका मुलक. ७ काठियावाड. ८ अहमदाबादसे सोमनाथमहादेवतक. ९ खंदार. १० पिसावर.

सुवर्णभू वसुधन दिविष्ठ पौरव चीरनिवसन त्रिनेत्र मुंजाद्रि गंधर्वलोक यह देश भारत वर्षके ईशानदिशाके हैं ॥ अब शास्त्रीय नामके देशोंका अपभ्रंशनाम हुवा सो लिखते हैं जिसमें दो लीटींके बीचका शुद्धनाम और खाली रहे सो अपभ्रंशनाम समझना चाहिये. (अश्वक्रांत.) युरोप (रथक्रांत सूर्यारिका) आफ्रिका (रमनक) आस्ट्रेलेशिया, (स्वर्णप्रस्थद्वीप.) पालिनेशिया (आवर्तन). ब्रिटन (इंद्रद्वीप) इंदुद्वीप. इंग्लंड (पशुशील भावकच्छ) पोर्तुगाल, (सैनिक, कुकुट) हालेंडबेलजियम (अश्वक, आश्विया) आस्ट्रिया (तामसदेश.) स्पेन (विष्णुक्रांत, आसेचनक) एशिया (कुमारद्वीप, माहेय, स्वरसाभूमि) अमेरिका (रोमपडचेर) रूम (रोमांतःपातिदेश) इटाली (क्रमथ कामला क्रौंच) जर्मनी (मलिया) कुहक, फ्रान्स (मारक) डेन्मार्क (माठक) स्केनडीनेभिया (अणिकतुरस्क) युरोपियन टरकी, (शशिलीना) सिसिली (रथक्रांत) आफ्रिकाखंडके मुलक (मिश्र) मिसर,इजिप्त, (बर्बर) बार्बरी, (वारुण उपद्वीप राक्षसावास) बोरबना (विष्णुक्रांत) एसियाद्वीप (शक) मुशल (तुरुष्क) टरकी(ग्रामिकतुरुष्क) एसियाइरूंस (नैकपृष्ठयुगंधर) लापलेन्ड (तुखार) बुखारा (तालतोषक, तीर्बत) तिब्बत (शैलराज्यपार्वत) तातार (खस) इरान(हौरव) साइबिरिया (पारद, चीन) महाचीन चीन (कांबोज,आवर्त) आरब (पारस्य,पारसिक) पारस,फारस (शूद्रयवन) मक्का (अपवाह,अपरांत) मस्कत (केकय) हिरात (सुमित्राद्वीप) सुमात्राद्वीप (सिंहलद्वीप) गांधर्व (स्कलावास) लंका,सिलोन (चंद्रशक) सौम्य, तारकट, मारीचावास न्यूहालंड (ब्रह्मोत्तर, ब्रह्मदेश) बर्म्मा (कुमारिका, भारतवर्ष) हिंदुस्थान; इंडिया (नार्द्दिनाश,कारस्कार) मदीना (पल्हव) काबूल (गांधार)कंधार (मणिद्वीप) जापान (पंचजन्यद्वीप) हेनानद्वीप (गभस्तिमान,मरीचिद्वीप) मिरचद्वीप (नाकद्वीप) नाकरद्वीप (उपमल्वका) मलाकाद्वीप (प्राविंजया) जंतिया (शुर्माशृङ्गदेश) सिंगापुर (कुमारिकानाभिवर्ष) हिंदुस्थान(नेपाल.)

नैपाल. (मरु) मारवाड (स्थल) स्थली; बिकानेरराज्य (दरद) भुटान (दरदलिंग) दार्जलिंग (वैराटनाभिवर्ष,मत्स्यदेश) जयपूरराज्य (पंचनद) पंजाब (पांचाल) कान्हपुरप्रदेश (गौरिक,काश्मीर) काश्मीर (कोशल) कोशलदेश अयोध्या (उत्तरकोशल) फयजाबाद (शूरसेनमाथुर) मथुरा (काशी) काशी (वाराणसी) बनारस (कुरुजांगल) कुरुक्षेत्र, थानेश्वर (इन्द्रप्रस्थ) दिल्ली (गंगाद्वार) बद्रिकाश्रम (माया) हरिद्वार (अवंती, विशाला, पुष्करवर्तिनी, उज्जयिनी) उज्जेन (गुर्जर) गुजरात (कांची) कर्णाटक (माहिषिक) म्हैसूर (कोंकण) मुंबई (बर्बर किष्किन्धा) तुंगभद्राकिनारे (केरल) विंध्यसें पश्चिमदेश (मलय मोरिया) मलबार(उत्कल) उडीसा, श्रीक्षेत्र (औड्र कटक) कलिंगमाहेंद्र उडीसाकेसमीप (सौराष्ट्र) अहमदाबाद,सोमनाथ (महाराष्ट्र) पूना (द्राविड) पूर्वघांट (सिंध)सिंधुदेश (महोदय,कान्यकुब्ज) लखनौसमीपवर्तिदेश (पाटलपुत्र,बौद्धराजधानी) पटना (अंग) राजमहल (कर्णराज) चंपा भागलपुर कर्णराजधानी आराप्रभृतीदेश (पौंड्र) मेदिनीपुर (उपवंग) मैमनसिंहप्रदेश (वर्द्धमान) वर्दमान (वंग) मालदह मुर्शिदाबाद, नदिया, कलकत्ता (गौड) ढांका, पावना, वगुडा, राजशाही, फरीदपुर (सुह्म) चाटगांव (प्राग्ज्योतिष, कामरूप) आसाम चेदी टिपुरा. (कुमारद्वीप) अमेरिका (उत्तरकुमार) उत्तर अमेरिका (दक्षिणकुमार) दक्षिणअमेरिका द० अ०७८ (तलह) ब्राजील (हिरण्यपुर) पेरु (मुनिदेश,तावसदेश,ताम्रद्वीप) ग्रीनलेन्ड॥ अब जानना चाहिये कि "विपाशैरावतीतीरे" और "रेवापूर्वगंडकीपश्चिमे" और "अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्यात्सलंकपालकम् ॥भरण्यांचकिरातेशम्" इत्यादि वचनोंके प्रयोजन सिद्ध होनेकेलिये नदी पर्वत और देशोंका नाम यहां लिखागया जिससे अमुकदेश अमुक ठिकाने है ऐसा ज्योतिर्विद सहजही जान लेवेंगे. शेष और देश नदी पर्वत समुद्र वगैरे न लिखा सो भूगोलका नकसा देखके जान लेवेंगे इति देशव्यवस्था ॥

अथ दिग्व्यवस्था—उक्तदेश व्यवस्था तब मालुम होगी जब कि, प्रथम ज्योतिर्विद सूर्यके उदयास्त होनेका मार्ग जानता होगा क्योंकि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर यह दिशा और आग्नेय नैर्ऋत वायव्य ईशान विदिशावोंका ठीक-ठीक मालूम सूर्यउदयास्तसेही हो सक्ताहै अतएव सूर्यके उदयास्त मार्गोंका वृत्तांत यहां लिखा जाताहै.उक्त सूर्य जिस मार्गसे आकाशमें घूमताहै उसीको नाम क्रांतिवृत्त है यह क्रांतिवृत्त पृथ्वीकी पूर्वापरकी.सूत्रकी विषुवती रेखासे चौवीस अंशतक दक्षिणोत्तर झुकरहा है और सायन मेष तुलाकी संक्रांतिमें तो विषुवती रेखाके सूत्रही सूर्य घूमता रहता है परंच मकर और कर्कमें चौवीस अंश उत्तर दक्षिण विषुवती रेखासे दूरपर जाता है अतएव जिधर रवि उदय हो वही पूर्वदिशा अस्त होवे वही पश्चिमदिशा और सूर्योदयके सन्मुख मुँहकिये दहना हाथ जिधर हो वह दक्षिणदिशा और वामभागकी तरफ उत्तर दिशा है. और इन दिशावोंके बिचले भागोंको विदिशा जानना. जैसे उत्तर पूर्वके बीचका नाम ईशान वैसेही पूर्व दक्षिणके बीचका नाम आग्नेय और दक्षिण पश्चिमके बीचका नाम नैर्ऋत,पश्चिम उत्तरके बीचका नाम वायव्य विदिशा है.॥जानना चाहिये कि,जैसे दिशावोंका ज्ञान सूर्यसे हो सक्ताहै वैसेही दिन रात्रिके घटबढका और सरदी गरमीका ज्ञान भी सूर्यसे ही होसक्ताहै क्योंकि विषुवती रेखासे चौवीस अंशके अंतरसे सूर्य घूमताहै यही उनका कारण है. और इन अंशोंका नामही क्रांति है.॥यहां विषुवती रेखाके पूर्वापरसूत्रका देश वगैरे कुछ लिखाजाताहै. (कोलंबो) लंकामाले मंगादोस्को, वारिगाम, विक्टोरियागाम, धाकटालूत जिगम् (रोमकपत्तन.) सानलोमें बेट, मारानावो, गोआस्म, नेग्रानदी, मादा, पिचित्राज्य, (सिद्धपुर) पानामायेव, पिचिंचाज्वलित, गालपागासबेट, नाकरबेट, वूक, जार्विस (यमकोटी) वैरन. इमंदबेट, मातेवर्दावदीबेट, दामपीर, सामुद्रधुनी, जिलांलो बेट, मेसकापास, तामिंग; वार्निवो, शिंगापुर, सुमोच और निवास टोंकसे चलके बस वही लंकामें जा मिली॥उक्त विषुवती रेखासे तिरछा होके रवि

यदि दक्षिण भागको जावेगा तो वह दक्षिणायन कहलावेगा. और उत्तर को जानेसे उत्तरायण कहलावेगा. अयननाम घरका है. यह सूर्यके घूमनेकी सडक मेष और तुलामें तो विषुवती रेखासे मिली हुई है और उक्त राशियोंसे आगे चल कुछ कुछ तिरछी चलती चलती दक्षिणकी तर्फ मकरके ठिकाने २४ अशंके अंतरमें है और कर्कके ठिकाने २४ अंशतक उत्तरकी ओर तक दूरगई है. अब यहां ध्यान देनाचाहिये कि, आकाशमें नलिकासे वा दुर्बीनोंसे देखो तो यह सारे ग्रह सायन दीख पडते हैं. और संसारमें व्रतोपवासादि वैदिक धर्म साधनेके लिये निरयन गणित लेना पडताहै. क्योंकि सूर्यसिद्धांतादि जो सिद्धांत ग्रंथ हैं उन्हीं में निरयन गणितको ही सविस्तर लिखा और मानाहै. इन्हों में अयनगति अलग दिखलाई गईहै अतएव गणित दो प्रकारसे है. दृश्य १ अदृश्य २ जो दृश्य गणित है सो सायन कहलाता है और अदृश्य है वह निरयन गणित कहलाता है जब किसी दिन ग्रहोंका उदयास्तादि अपने आँखोंसे देखनेकी इच्छा होवे तब सायन गणित करना पडता है. नहीं तो निरयन गणितके पंचांग बने हुये प्रचलित सब होही रहेहैं कितने भोले भाले मनुष्य कहाकरते हैं साहब सिद्धांतके गणितमेंभी अंतर आने लगगया. क्योंकि पंचांगवालोंके शुक्रादि ग्रहोंके उदयास्त और ग्रहण अब ठीक ठीक नहीं मिलता परंच वह यह नहीं जानते कि, सिद्धांतका गणित तो जो पहिले था सोई अब है परंच ग्रहकी अयनगति ठीक होनी चाहिये क्योंकि अयनगति सदा एक नहीं रहसक्ती काल पाके अयनगतिमें कुछ अंतर आजाताहै इसलिये यहां अयनगतिके प्रत्यक्ष लानेकी विधी लिखते हैं. अयनांश देखनेवाला मनुष्य सहरके बाहिर कहीं भी जहां किसी वस्तुकी ओट न हो तहाँ जलवत्समान भूमि शोधके प्राची साधन करै.फिर उक्त भूमिमें

---

१ अयनविषयेभचक्रंपश्चिमतईश्वरेच्छयाप्रथमतः कतिचिद्भागैश्चलतिततः परावृत्य यथास्थितंभवतिततोपितद्भागैः क्रमेणपूर्वतश्चलतिततोऽपिपरावर्त्य यथास्थितमित्येकोविलक्षणोभगणः.

२ त्रिंशत्कृत्वोयुगेभानांचक्रंप्राक्परिलंबते. इति सूर्यसिद्धांते ।

प्राकारसे वृत्त निकालके उसमें द्वादश राशिके समान चिह्न निकाले और एक एकराशिके बीच तीस तीस अंशोंके चिह्न करे फिर उस वृत्तके मध्यभागमें द्वादशांगुल शंकू जो कि, अधोभाग जिसका पुष्ट और ऊर्ध्वभागसे तीखा जब रात्रिदिन बराबर हो उस दिन रक्खे फिर उक्त शंकूकी छाया प्रतिदिन देखता रहै. छः मासके लगभग जिस दिन छाया चलती पीछी हटेगी वही अयनका स्थान शुद्ध है. और उसके देखनेकी दूसरी विधि यह है कि, नलिकायंत्रसे स्पष्ट किया हुवा ग्रह और सिद्धांतसे स्पष्ट किया जो ग्रह इन दोनोंका अंतरका जो गणित है वही शुद्ध अयनांश कहलाताहै. अयनांश चीज क्या है.१ ग्रहकी स्थिति बिंब और प्रकाश बिंबके अंतरका नामही अयनांश है॥ इति दिग्व्यवस्था॥

अब जानना चाहिये कि, सूर्य उत्तर गोलपर जानेसे विषुवती रेखाके उत्तरके देशोंमें क्षितिजके समीपताके सबबसे जल्दीही उदय होता दीख पडताहै. और पश्चिममें अस्त होनेके समय क्षितिजके निकटताके कारण कितनी देरीतक दीखताचलाजाताहै. इसीसे सायन मेष संक्रांति प्रारंभसेही दिन बड़ा और रात्रि छोटी होने लगती है. जितना विषुवती रेखासे उत्तर देश दूर होगा उतनाही उत्तर गोलमें दिन जियादह बढेगा जैसे लंका विषुवती रेखाके ऊपर होनेसे वहां तो दिनरात्रि समानही ३० घडीका सदैव होगा. फिर लंकासे उत्तर उज्जैनमें ३३ घडी और राजपूतानामें ३४ घडी और पंजाबमें ३५ घडी आगे फिर जहां जहां उत्तरके मूलक विषुवती रेखासे दूर पडता जायगा त्योंत्यों दिन बढता चलाजायगा. और रात्रि घटती जायगी. कितने अंग्रेजी भूगोल जाननेवाले लोग कहतेहैं कि, रूसके राज्यके उत्तरभागमें कितनेदिनोंतक सूर्य आषाढ महीनेमें दिखलाई देता रहताहै. रात्रि नहीं होती. और जिसके आगे ध्रुवके वृत्तमें शीत अधिक होनेके कारणसे समुद्रका पानी जमारहता

१ सायनरविसे अयन और गोलभेद जानाजाताहै. मकरके रविसे उत्तरायण. कर्करविसे दक्षिणायन और मेषके रविसे उत्तरगोल तुलाके रविसे दक्षिणगोल कहलाताहै ।

२ उत्तरअक्षांश ८२ और दक्षिणअक्षांश ७८ के आगे शीतअधिकताके कारण मनुष्य नहीं जासक्ता बस यहांतक मुल्क बसताहै ।

है. वहां कितने महीनोंतक दिन होते चले जाते हैं. उस समुद्रको आर्तिक नामसे वे लोग पुकारतेहैं. और अस्मदादिकोंके शास्त्रोंमें उत्तर ध्रुवके नीचे सुमेरु लिखाहै वहां उत्तर सूर्य में छः महीनेका एकदिन होना. यह एक शास्त्र-सिद्ध बात तो हैही परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणसे भी ठीक मिलताहै. और ऐसेही जब दक्षिणगोल (सायनतुल) का सूर्य होगा तब उक्त मुल्कोंमें दिन घटता जायगा और रात्रि बढती चली जायगी. जहां छः महीनों तक दिन दिखलाई देताहै वहां छः महीनोंतक रात्रि ही बनी रहेगी सूर्य न दीख सकेगा. सूर्य दक्षिणायनमें लंकासे दक्षिण ध्रुवके ठीक नजदीक छः महीनोंका एकदिन होना शास्त्रकारोंने लिखाहै सबब कि, उस स्थानको असुरस्थान मानाहै अबके इंग्लिश भूगोल जाननेवाले लोगभी कहा करते हैं कि, दक्षिणध्रुवसे ८४० मैल ओछा विक्टोरिया ल्यांडमें पूस महीनेमें सूर्य कितने दिनोंतक दिखलाई देतारहताहै. रात्रि नहीं होती परंतु सूर्य दूरपर जानेके सबब वहां का समुद्र ठंढ़से जमा रहता है, वहां पासिफिक समुद्रकाही नाम भेदसे दक्षिण महासागर बोलाजाताहै. फिर जब सूर्य दक्षिण अयनको त्यागके उत्तर अयनको आवेगा तो वहां प्रतिदिन रात्रि बढती जायगी. दिन घटता घटता जब रवि उत्तर गोलपर पहुँचेगा तब तो दिनरात्रि समान ३० घडीके होजायँगे. ऐसेही जिन मुल्कोंके समीप सूर्य आवेगा वहां गरमी अधिक पडेगी. और उन मुल्कोंसे सूर्य दूर पर जानेके सबबसे वहां शरदी विशेष पड़ेगी. और इसी कारणसे वहां पानी का बर्फ होजायगा. यह शरदी गरमीके न्यूनाधिक्यका और दिन रात्रि छोटा बडा होनेका मुख्य कारण एक केवल सूर्य है और उसी के प्रकाशसे सब विश्व प्रकाशित होरहा है

---

१ मेरुर्योजनमात्रः प्रभाकरो हिमवता परिक्षिप्तः । नंदनवनस्य मध्ये रत्नमयःसर्वतो वृत्तः । इति आर्यभट्टः ।

२ भूमिके पश्चार्धगोलमें जल जियादह है. और ज्वालामुखी पर्वतोंमें आग धनक रहीहै वेमेरुस्थलमध्ये नरको बडवामुखश्च जलमध्ये' इति आर्यभट्टः ।

और उक्त भूगोलका संक्षिप्त वर्णन जो हमने किया है उसमें कहीं भूल हो वह पंडित लोग सुधार लेवेंगे. क्योंकि सर्वज्ञ तो एक ईश्वर है.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते भूगोल-
वर्णनंनाम तृतीयविनोदः ॥ ३ ॥

अथ खगोलवर्णनम्–इस खगोलकी रचना ऊंचेसे ऊँचे कहांतक कि, जहां तक सूर्यका प्रकाश पहुँच सक्ताहै परंतु मुझको तो [1]नक्षत्रकक्षातक ही खगोल रचना यहां कहनीहै. जिसका गणित विशेष करके सूर्यसिद्धांतसे लिखा जाताहै. और कोई बातें इसमें कहीं विशेष शास्त्रोंसे लिखनी होगी तो उनका प्रमाण उसी जगह दिया जावेगा. अब ध्यान देना चाहिये कि, इस ब्रह्मांडकी उत्पत्तिके ४७४०० दिव्य वर्षोंके पीछे सूर्यादि ग्रह अपनी अपनी कक्षा वृत्तमें चलने लगेहैं क्योंकि उक्तदिव्य वर्ष सृष्टिकर्ताको देव दैत्य चराचरकी सृष्टिरचते लगगये जब सृष्टिरचना करे पीछे इनके कालज्ञान होनेके लिये अपने नेत्रोंकी तेजज्योतिपुंजके प्रकाशमानबिंबरूप सूर्यको निजकक्षावृत्तपे चढाके प्रवह वायुसे आकाशमें घुमाया. जब प्रवह वायुसे प्रेरित हुवा सूर्य इसी पृथ्वीपे बसनेवाली प्रजा जो कि, लंका आदिमें थी उसको दीख परा जिससे वारोंकी गणना प्रथम रविवारसे होती है. फिर व्रतोपवासादिवैदिक धर्म साधनकेलिये और मृदुप्रकृतिवाली प्रजाको सुख उपजानेके लिये अमृतमयी मीठे जलको अपनी मानसी शक्तिसे बिंबरूप दृढ करके उसका नाम चंद्रमा धरके प्रवह वायुसे आकाशमें निजकक्षामें घुमाया. जब उक्त चंद्रमा सूर्य तेजको धारण करके प्रतिदिन प्रकाशवृद्धि करते हुवे चित्रानक्षत्रपे पहुँचके पूर्ण शरीरको धारण किया. जिससे मासका नाम चैत्र रक्खा गया. अतः मासोंकी गणना प्रथम इसीसे होतीहै. और [2]ग्रहोंका. मेषराशिके प्रथ-

---

१ पुराणसौरागमभूसदैक्या तद्योजनानां किल मानभेदात् ।

२ तेजसां गोलकः सूर्यो ग्रहर्क्षाण्यंबुगोलकाःप्रभावंतो हि दृश्यंते सूर्यरश्मिप्रदीपिताः ।इति तत्वविवेकसिद्धांते ।

मांशसे चलना शुरू हुवा. जिससे राशियोंकी प्रथम मेष आदिसे गणना चली. और प्रतिदिनकी रात्रि चंद्रमाके प्रकाशसे शुरूहुई जिससे शुक्लपक्षसे प्रथम गणना चली. और उक्त सूर्य चंद्रमाके सबबही प्रतिपदादि तिथि अश्विनी आदि नक्षत्र और विष्कुंभ योगादिकोंकी गणना चलीहै. जानना चाहिये कि, प्रवहवायु उत्तर ध्रुवके और दक्षिण ध्रुवके बीचमें षष्टिघट्यात्मक भचक्रको पूर्वसे पश्चिमतरफ घुमारहा है और ग्रहोंके कक्षावृत्त अपनी२गतिके कारण पूर्वको चल रहे हैं. परंच पश्चिमकी तरफही चलते दीख पडते हैं. जैसे कुम्हारके चक्रपे विलोम चलती हुई चींटी चक्रके गतिके मुवाफिक चलती दीख पडती है वैसेही ग्रहोंके दीखनेका हाल है.अब प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे क्या यह बात मिथ्या हो सक्ती है कि, ऐसे नहीं चलते हैं? देखिये कि, प्रथम अश्विनी नक्षत्रके तारोंका उदय होके पीछे भरणीके तारे दीख पडेंगे. तो कहो जी! ग्रह अश्विनी भोगके फिर भरणीको भोगेगा कि,नहीं? यदि अश्विनी भोगके फिर भरणीका भोग करेगा. तब तो पश्चिमसे पूर्वको ग्रहका चलना स्वयं सिद्धही है. और उक्त ग्रहोंके मंदोच्च शीघ्रोच्च पातादिकोंके वृत्त सब प्रवहरूपी रश्मिसे बँधे हुये हैं.वे अपनी मर्यादाके विशेष इधर उधर कभी नहीं होसक्के और यह भू वायु (पृथ्वीकी पवन) केवल पृथ्वीसे १२योजन ऊँचेतक है. यहांतक गये हुये मनुष्य पशु पक्षीभी पीछा आ सकेगा परंतु इससे ऊँचे प्रवहवायुके भीतर जब कभी कोई जावेगा वह फिर पृथ्वीपै पीछा न आवेगा.जैसे महाभारतमें भीमसेनने हस्तियोंको फेंकाथा और वे पीछे नहीं आये. क्योंकि इन दोनों पवनोंके धर्म इसी ढंगकेहैं पृथ्वी की वायु तो सर्व वस्तुवोंको पृथ्वीकी तरफही आकर्षण करता है और आकाशका पवन आकाशकी ओर ऊँचेकोही आकर्षण करता है. हाँ कोई अपने योगबलसे तो बेशक इन दोनों पवनोंको रोकटोकके पृथ्वी की ओर आकाशकी वस्तुवोंको एकमेक करसकेगा नहीं तो ऐसा होना मुश्किल है॥ और अब इसके आगे सूर्य चंद्रमा एक एक राशिके स्वामी हुए. और ग्रहोंको दोदो राश्यधिकार क्यों कर मिला उसका हाल यहां लिखाजाताहै. ॥ यह

आकाशमें मेष वृषादि राशियोंके नामसे बारह जातके मुल्क समझना चाहिये इन मुलकोंमें जो प्रधान मेष वृषादि वा सिंह मिथुनादि देव मनुष्य पशु पक्षि- आदि बसतेहैं वे मुल्क उन्हींके नामसे बोले जाते हैं. जब सूर्य चन्द्रादिक ग्र- होंको अपनी कक्षापर सृष्टिकर्ताने उपस्थित किया तब सूर्य और चन्द्रमा इन दोनोंने राशियोंके मुल्क आधे २ लेलिये विषमराशियोंके छ मुल्क तो सूर्यने लेलिये और सम छः मुल्कोंका राश्यधिपति चन्द्रमा[1] हुवा. फिर बुध शीघ्र- गतिसे दौडके चन्द्रमासे राज्य मांगा तो कन्याका राज्य तो बुधको चन्द्रमाने दिया और मिथुनका राज्य रवि देतेभये फिर इसीही तौरसे शुक्र राज्या- भिलाषाकरके दोनोंको कहा जिससे चन्द्रमाने वृषभका राज्य दिया और रवि तुलाका राज्य दिया और तत्पश्चात् मंगलनेभी राज्याभिलाषासे याचना करी तब चन्द्रमाने वृश्चिक का राज्यदिया. और सूर्यने मेषका राज्यदिया. इससे मंदगतिसे चलके गुरुभी सूर्य और चन्द्रमासे जामिला और राज्यस्प- र्धा जताई तब मीनका राज्य चन्द्रमाने और धनका राज्य रविने देदिया फिर अतिमंदगामी शनैश्चरजी दोनोंसे जा कहा कि, कुछ राज्य तो मुझको भी चाहिये इस बातपर ध्यान देके चन्द्रमाने मकरका राज्य और रविने कुंभका राज्य शनैश्चरको देदिया इसी कारण उक्त सूर्यके एक सिंहका राज्यही शेष रहा. और चंद्रमाके केवल कर्कका राज्य अवशेष रहा ॥

इसके आगे ग्रह जियादा कम क्यों चलते हैं वह हाल यहां लिखाजाताहै ॥

यह उक्त ग्रह अपने अपने लोकोंमें वसकर अपनी अपनी कक्षावों (सडकों) पै घूम रहेहैं. और वे कक्षा सब बारह राशियोंके सूत्रभाग जो कि, आकाश कक्षासे पृथ्वीपर्यंत आये हैं. सो खर्बूजके फलकी रेखावत् विभागोंसे विभूषित हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, जैसे खर्बूज की लकीरें नाकेके समीप तो

---

१ जब चन्द्रमा पृथ्वीपे सूर्यास्तहुये पीछे दीखताहै तब सूर्यसे ऊंचा दीखताहै जिसे व्यासजीने चन्द्रमंडल सूर्यसे ऊंचा मानाहै परन्तु वास्तवमें सूर्यसे चन्द्रमण्डल नीचाहै ॥ ऊर्ध्वाधरत्वंपरिकल्प्य शङ्कोर्वशेन यो दृश्य विधुः सदोर्ध्वः ॥ सर्वोर्ध्वगोर्कस्तदधोऽस्त्यवश्यं व्यासेरितं चेत्थमपि प्रमाणम् ॥ इति तत्त्व विवेकसिद्धांते।

ऐक्य हो जावें और ऊँचे मध्य भागमें जियादा अंतर होना ऐसेही राशि-येंके विभागोंकी और ग्रहोंकी नीची ऊँची कक्षावोंकी व्यवस्था है प्रथम चन्द्रमाकी कक्षा पृथ्वीसे ५१५६६ योजन ऊंची जिससे चन्द्रमाकी राशि एकके भोगमें केवल सवादो दिन लगते हैं. इससे ऊंचा बुध शीघ्रमंडल है. जो कि, पृथ्वीसे १६६०३२ योजन है जिससे चन्द्रमासे बुधको राशि भोगमें दिन जियादा लग्ता है यही रीतिसे ऐसे ही ऊंचा ४२४०८८ योजन शुक्रमंडल है. फिर ऊंचा ६८९३७७ योजन सूर्यमंडल है और १२९६६१९ योजन ऊंचा भौममंडल है और८१७६५३८ योजन ऊंचा गुरुमंडल है. और २०३१९०७१ योजन पृथ्विसे सब ग्रहों से ऊंचे शनि कक्षा है. जिसको राशिभोगमें सब ग्रहोंसे दिन जियादा लगता है. जिस ग्रहका लोक पृथ्वीके निकट होगा उसीको राशिभोगमें दिन कमती लगेंगे और जिस ग्रह का ऊँचा लोक है जिसको राशिभोगमें दिन जियादा चलना पडेगा और पृथ्वीसे सबसे जियादा ४१३६२६२६५८ योजन ऊंची नक्षत्र कक्षा है. और इसके फिर आगे राशिलोक जिससे आगे जनलोक उसके आगे तपलोक उसके आगे सत्यलोक उसके आगे ब्रह्मांडकी कक्षा है कि, जहांतकही सूर्यका प्रकाश जा सक्ता है.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते खगोलव्यवस्था-कथनं नाम चतुर्थविनोदः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ सृष्ट्याद्यहर्गणं व्याख्यास्यामः ॥ जिस दिनसे सूर्यादिग्रह अपनी कक्षा वृत्तमें घूमनेको शुरू हुये हैं उसीदिनसे लेके और अपने अभीष्टदिनपर्यंत जितने दिनोंका समूह है वह सृष्ट्याद्यहर्गण कहलाता है विक्रम संवत् १९४९ शालिवाहन शके १८१४ चैत्रशुक्ला १ भौमवारके दिन इस ग्रंथका जन्म-हुवा उसीसे उक्त दिनका अहर्गण लिखाजाताहै अब उक्त दिनोंसे पहले ब्रह्म-देवजी ५० वर्षके होचुके उक्त ब्रह्माके एकदिनमें १४ मनुराजा होते हैं.

जिन्होंका नाम स्वायंभुवमनु १ स्वारोचिष २ उत्तमौज ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इंद्रसावर्णि १४ इन उक्तराजाओंमें एक राजा ७१ महायुगतक राज्य करता है वह सत्ययुग १७२८००० त्रेता १२९६००० द्वापर ८६४००० कलियुग ४३२००० इन चारोंयुगोंके इकट्ठे वर्षों ४३२०००० कानाम महायुग कहलाता है उक्त महायुगके वर्षोंको ७१ से गुणनेसे एक मनुके राज्यके वर्ष होते हैं और दो मनुके बीच की संधिके वर्ष सत्ययुगतुल्य हैं. इन १५ संधिके वर्षोंको और चौदह मन्वंतरोंके. वर्षोंको इकट्ठा करनेसे एक ब्रह्माका दिन कहलावेगा और दिनतुल्यही रात्रि होती है. इसीही क्रमसे ब्रह्माके ५० वर्ष बीतके इकावनवें वर्षका पहिला दिन बीतरहाहै. इसीदिनमेंभी ६ मनु राज्य करचुके उन्हींके वर्ष १८४०३२०००० और संधिसात ७ के वर्ष १२०९६००० इतने गतहुये हैं. फिर महायुगों २७ के वर्ष ११६६४०००० इतने बीते और तीन युगोंके वर्ष ३८८८००० इतने गतहुये हैं अब अष्टाविंशतितम कलियुगके गत वर्ष ४९९३ और वे सब वर्षोंको इकट्ठा करनेसे सृष्टयब्द १९५५८८४९९३ इतने हुये इन वर्षोंका अहर्गण ७१४४०४१२०३४९ यह हुवा जिससे रवि बुध शुक्र ११।१५। १३।५० चंद्र ०।३।१७।२२ मंगल ७।१५।३९। ४५ गुरु ११।१४।३७।३५ शनि ४।२४।०।० राहु १ ।०।२५।५९ यह मध्यमग्रह हुवा. ॥और सूर्य ११। १७।१४।१७ चंद्रः ०।३। २३।१९ मंगलः ८।१४।४५।३५। बुधः ०।३ ।२१।४१ गुरुः ११ । १४ । ० । १२ शुक्रः १ ।१ । ५० । ५८ शनिः ५ । ० । १ । ० राहुः १।०।२५।५९ यह स्पष्ट ग्रह ४५।१८ के इष्टपे हैं. अब देखिये कि, उक्त अहर्गणादिकोंका भिन्नभिन्न उदाहरण कियेबिना सिद्धांतगणितकी समझ नहीं होसक्ती जिसके लिये पूर्वाचार्योंका कियाहुवा उदाहरण यहां भिन्न भिन्न लिखा जाता है. शके

१५०६ वैशाखशुक्ल ६ रविवारके दिन ७१ महायुगों से छैः मनुवोंके वर्ष- गुणे४२६हुये फिर एक महायुगके४३२००००वर्षोंसे उनको गुणनेसे मनुके वर्ष १८४०३२०००० इतने हुये. संधि ७ के वर्षों १२०९६००० को जोडनेसे ससंधि छेंमनुवोंके वर्ष १८५२४१६००० इतने गये फिरसप्तम- वैवस्वत मन्वंतरके सप्तविंशति महायुगोंके वर्ष ११६६४००००उक्त वर्षोंमें जोडनेसे ससंधि षट् मन्वंतर सहित सप्तविंशति महायुगपर्यंत के १९६९० ५६००० गतवर्ष हुये अब (अष्टाविंशति) अट्टाईसके महायुगमें सत्ययुग १ त्रेता २ द्वापर ३ तीन युगगत हुये जिसमें सत्य युगका वर्ष१७२८००० पूर्वोक्त वर्षोंमें योगकरनेसे सृष्टिआदिसे सत्ययुगपर्यंत १९७०७८४००० इतने वर्ष गत हुये.जब ब्रह्माके सृष्टि रचनेके दिव्य वर्षों४७४००को ३६० से गुणा जब१७०६४००० मनुष्यवर्ष हुये. यह पूर्वोक्त वर्षोंमें हीन करनेसे १९५३७२०००० इतना अवशेष रहा. इन्हों में त्रेता१२९६०००द्वापर ८६४०००कलिगतवर्षप्रमाण[1] ४६८५ इन तीनोंके वर्ष २१६४६८५ जोडनेसे सृष्ट्यादि वर्ष १९५५८८४६८५ इतने गतहुये॥

अथ अर्हगणानयनम् ॥ उक्तसृष्टिवर्षों १९५५८८४६८५ को १२ से गुणा जब २३४७०६१६२२० इतने मास हुए इन्होंमें एक मास जोडा जब २३४७०६१६२२१ यह मासगण हुवा. इसको दो जगह रखके फिर एकको सृष्ट्यधिमासों १५९३३३६ से गुणनेसे ३७ ३९६५७७६७७६७१०३२५६ इतने हुये. इन्होंके सूर्य मासों ५१८४ ०००० के भागसे सृष्टिआदिसे अहर्गणपर्यंत अधिमास७२१३८४६०१ इतने गत हुये इन्होंको दूसरी ठौरके अंकमें जोडनेसे स्पष्टमासगण२४१९२० ००८२२ हुवे उक्तमासगणको ३० गुणनेसे ७२५७६००२४६६० यह

---

१ कलिगतवर्ष लानेकी विधि. कलिके प्रारंभसे ३०४४ युधिष्ठिरके शाके. पीछे १३५ विक्रमका शाका रहा जिस वर्षमें अहर्गण लावे वह शालिवाहन गतशाकेके वर्षमें पूर्वोक्त वर्ष जोडनेसे कलियुगके गताब्द होतेहैं ।

दिन हुये इनमें गततिथि ५ जोडी जब ७२५७६००२४६६५ यह हुये. इन्होंको दो जगह रखके एकको सृष्टितिथिक्षयदिनों २५०८२२५२ से गुणे तो. १८२०३६९५८३०१७३७४५५८० यह हुये इन्होंके सृष्टिचांद्र दिनोंके १६०३००००८० भाग देनेसे सृष्टिरचनासे अहर्गणपर्यंत क्षय-तिथि ११३५६०१६७९४ इतनी आई इन्होंको पूर्वोक्त दूसरी जगेके अंकमें हीनकरणेसे अहर्गण सावन ७१४४०००७८७१ यह हुवा. उक्त अहर्गण सत्यासत्य परीक्षाकेलिये ७ भागसे अवशेषित अहर्गणसे १ रहा जिससे रवि-वार जिस दिन होनेसे यह अहर्गण सत्य है.

अथ मासपतिवर्षपत्योरानयनम्.—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ इसके ३० भागसे लब्ध २३८१३४६६९२९ हुये इनका द्विगुना—४७६२६९३३८५८ यह हुवा और इसमें १ और जोडा जब-४७६२६९३३८५९ यह हुवा इन्होंको सप्तावशेषित किया जब १ रहा जिससे मासेश्वर सूर्य हुवा. जिसका गतदिन १ और भोग्यदिन २९ समझना चाहिये. अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को ३६० के भागसे लब्ध १९८४४५५७७ यह आया इन्होंको ३ से गुणके ५९५३३६६७३१ और १ और जोडा जब ५९५३३६६७३२ यह हुवा. इन्होंके ७ भागसे शेष ५ बचनेसे गुरु वर्षेश्वर हुवा. जिसका भुक्त दिन १५१ और भोग्यदिन २०९ हुये.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते अहर्ग-णानयनंनाम पंचमविनोदः ॥ ५ ॥

अथमध्यमग्रहानयनविधिं व्याख्यास्यामः ॥ अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को सूर्य भगणोंसे ४३२०००० गुणके ३०८६२५३१४००२७२०००० फिर भूदिनोंके १५७७९१७८२८ भागसे लब्ध भगणः १९५५८८४६८५ भगणशेष २९०५५८२० को १२ से गुणा जब ३४८६६९८४० यह हुवा. इन्होंके पूर्वोक्त भूदिनोंका भाग दिया जब लब्ध राशि०

राशिशेष ३४८६६९८४० को ३० से गुणा जब १०४६००९५२००
यह हुवा. इन्हों के पूर्वोक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ६ अंशशेष ९९२५
८८२३२ को ६० गुणके ५९५५२९३९२० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे
लब्ध कला ३७ कलाशेष ११७२३३४२८४ को ६० गुणके ७०३४०
०५७०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४४ विकलाशेषः९११६
७२६०८ एवं भगणादिमध्यमरविः १९५५८८४६८५। ०। ६। ३७
।४४ अथ चंद्रः ॥ अहर्गण७१४४०४००७८७१ को चंद्र भगण ५७७
५३३३६ से गुणके ४१२५९२१४७०६३२०५०७६५६ फिर उक्त
भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः २६१४७८८५५०७और भगणशेषको ३२
२३८८६० फिर १२ से गुणके ३८६८६६३२० उक्त भूदिनोंके
भागसे लब्ध राशि २ राशि शेष ७१२८३०६६४ को ३० गुणके २१
३८४९१९९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेष ८७१९
८८१५६ को ६० गुणके ५२३१९२८९३६० उक्त भूदिनोंके भाग
से कला ३३ कला शेषः २४८००१०३६ को ६० गुणके १४८८०६२
१६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ९ विकला शेषः ६७८८०
१७०८ एवं भगणादिमध्यमचंद्रः २६१४७८८५५०७।२।१३।३३।९

अथ चंद्रोच्चानयनम्–अहर्गणः ७१४४०४००७८७१ को चंद्रोच्च
भगण ४८८२०३ से गुणके ३४८७७४१७९८५४६४५८१३इन्होंके
उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २२१०३४४३७ भगण शेष ११०४०
२९७७ को १२ गुणके १३२४८३५७२४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध
राशिः ८ राशिशेष ७०१४९३१०० को३०गुणके२१०४४७९३०००
उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेष ५३१७६१२३६ को६०
से गुणके ३१९०५६७४१६० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः
२० कलाशेष ३४७३१७६०० को ६० गुणके ३०८३९०५६०००
फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः १३ विकलाशेषः ३२६१२४

२३६ एवं भगणादि उच्च चंद्रः २२१०३४४३३७ । ८ । १३ । २० । २३ अथ चंद्रपातः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को चंद्रपात भगणों २३२२३८ से गुणके १६५९११५७९७९९४५२९८ फिर भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १७५१४६००६ भगणशेष ५६९५५०३३० को १२ गुणके ६८३४६०३९६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ४ राशिशेष ५२२९३१६४८ को ३० गुणके १५६८७९७९४४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ९ अंशशेष १४८६७१८९८८ को ६० गुणके ८९२०३१३९२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ५६. कलाशेष ८३९७४०९१२ को ६० गुणके ५०३८४४५४७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ एवं भगणादिचंद्रपातः (राहुः) १७५१ ४६००६ । ४ । ९ । ५६ । ३१ उक्त राश्यादि इनसे १२शोधनेसे चंद्रपातः ७ । २० । ३ । २९ अथ भौमः— अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को भौम भगण १०३९८९३१७८ से गुणके १६४०८६५९६६२०६३६ ४६७२ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १०३९८९३१७८ भगणशेष १४२४५८७२८८ को १२ गुणके १७०९५०४७४५६ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः १० राशिशेष १४१४८६९१७६ को ३० गुणके ३९४७६०७५२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंशः२५ अंशशेष २८२२९५८० को ६० गुणके १६८७७७४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १० कलाशेष १०९८५६७२ को ६० गुणके ६५९ १४१८८३२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४ विकला शेष २७ ९७४७००८ एवं भगणादिभौमः १०३९८९३१७८ । १० । २५ । १० । ४ अथ शीघ्रोच्चबुधः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को बुधभगणशीघ्रोच्च १७९३७०६० से गुणके १२८१४३०७५५३४२२५ ९९२६००फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ८१२१०२३३६७ भगणशेष १०२८७१२३८४ को १२ गुणके १२३४४५४८६०८ उ-

क्तभूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ७ राशिशेष १२९९१२३८९ को ३० गुणके ३८९७३७१४३६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २४ अंशशेष ११३६८६४८८को ६० गुणके ६६२२११८९२८० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धकला ४१ कलाशेष १५४६५५८५३२ को ६० गुणके ९२७९३५११९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकला ५८ विकलाशेषः १२७४२७७८८९६ एवं भगणादिशीघ्रोच्चबुधः ८१२१०२३३६७ । ७ । २४ । ४१।५८ अथ गुरुः–अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को गुरुभगण ३६४१२०से गुणके २६०२००२२७७४६०७५६२० उक्त भूदिनों के भागसे लब्ध भगणः १६४९००९९९ भगणशेष १५६९६६५४४८ को १२ गुणके १८८३५९८५३७६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११ राशिशेष ४७८८८९२६८ को ३० गुणके ४४३६६६७८०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २८ अंशशेष १८४९७८८५६ को ६० गुणके ११०९८९८७३१३६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ७ कलाशेष ५३३०५६६४ को ६० गुणके ३१९८३९३८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला २ विकलाशेषः ४२५५८१८४ एवं भगणादिमध्यमगुरुः १६४९००९९९ । ११। २८ । ७ । २ अथशीघ्रोच्चशुक्रः–अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को शीघ्रोच्चशुक्रभगण ७०२२३७६ से गुणके५०१६६१३५५९१७७१२१४९६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ३१७९३८८३४९ भगणशेष १२५१०४५३५२४ को १२ गुणके १३८५४४२६२८८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ८ राशिशेष १२३१०८३६६४ को ३० गुणके ३६९३२५०९९२०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २३अंशशेष ६४०३९९८७६ को ६० गुणके ३८४२३९९२५६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकलाः २८ कलाशेष ५५३९६४६८ को ६० गुणके ३३२३७८८२२८०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः २१ विकलाशेषः १०

१६०६८९२ एवं भगणादि शीघ्रोच्चशुक्रः ३१७९३८८३४९।८।२३।२३ । २१ अथ शनिः-अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को शनिभगण १४६५६८ से गुणके १०४७०८०६६३२५६३६७२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ६६३५८८२० भगणशेष १५०२५९३७६८ को १२ गुणके १८०३११२५२१६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११ राशिशेष ६७४०२९१०८ को ३० गुणके २०२२०८७३२४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १२ अंशशेष १२८५८५९३०४ को ६० गुणके ७७१५१५८२४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ४८ कलाशेष १४११४७९६ को ६० से गुणके ८४६८०२२९७६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ५३ विकला शेषः १०५८५८४८७६ एवं भगणादिमध्यमशनिः ६६३५८८२० । ११ । १२ । ४८ । ५३।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमध्यमानयनं नाम षष्ठो विनोदः ॥ ६ ॥

अथ ग्रहाणां मंदोच्चानयनम्.-अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को रविमंदोच्च भगण ३८७ से गुणके २७६४७५३५१०४६०७७५ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धभगण १७५ भगणशेष ३३८७३११४६०७७ को १२गुणके४०६४७७३७३७५२२९२४उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धराशिः २ राशिशेष ९०९९३८०९६९२४ को ३० से गुणके २७२६८१४२९०७७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १७ अंशशेष ४४३५३९८३२७२० को ६० गुणके २६६७१३८९९०३२०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १६ कलाशेष १३६५७०४६५५२०० को ६० गुणके ८१९४२२७९३१२००० उक्त भूदिनोंके भागसें लब्धविकलाः ५१ विकलाशेष १४६८४७००८४०० एवं भगणादि रविमंदोच्च १७५ । २ । १७ । १६ । ५१ अथ भौमः-अहर्गणको भौममंदोच्च भगण२०४

से गुणके १४५२३८४१७६०५६८४उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ९२ भगणशेष ५६९९७७४१९६८४ को १२ गुणके ६८३९७२९१५६२०८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः४ राशिशेषः ५१८७५७८४४२०८ को ३० गुणके १५८४१७३५३२६२४० उक्त भूदिनों के भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ६२५५७०४६२४० को ६० गुणके ३७५३४२२७७४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकला २२ विकला. शेष ११४१०३४८८८००० एवं भगणादिमंदोच्चभौमः ९२। ४। १० । २ । २२ अथ बुधः–अहर्गणको बुधमंदोच्चभगणोंसे ३६८ गुणके २६२९००६७४८९६५२८ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १६६ भगणशेष ९३६३१५४४०५२८को १२ से गुण करके ११५९५७८२७४२३३६ उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ७ राशिशेष ५५०३५७९४६३६ को ३० गुणके १६५१००३८३९००८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ७३१५६०११००८० को ६० से गुणके ८३८९३६०६६०४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला २७ कलाशेष १२८९८२५२४८८०० को ६० गुणके ७७३८९५१४९२८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः ४९ विकलाशेष ७१५४१३५६००० एवं भगणादिमंदोच्चबुधः १६६।७।१०।२७।४९ अथ गुरुः–अहर्गणको गुरुमंदोच्चभगणों ९०० से गुणके६४२४६३६०७०८३९००उक्तकल्पभू-दिनोंके भागसे लब्धभगण ४०७ भगणशेष ७५१०५१०८०९०० को १२ गुणके ९०१२६१३०५४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धराशि ५ राशिशेष ११२३९१४८०० को ३० गुणके ९०१२६१३०५४८०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धअंश २१ अंशशेष ५५४४४३०५६००को६० गुणके ३३२६६५८३३६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला २१ कलाशेष १३०८९७२०००को ६० गुणके ७८१८५३८३२०००

उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४ विकलाशेष १५०६८६७००८००० एवं भगणादि मंदोच्चगुरुः ४०७।५।२१।२१।४ अथ शुक्रः—अहर्गणको शुक्र मंदोच्चभगण ५३५ से गुणके ३८२२०६१४४२१०९८५ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २४२ भगणशेष ३५०००२९८३४९८५ को १२ गुणके ४२००३५८०१९८२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि २ राशिशेष १०४४५२२३८०० को ३० गुणके ३१३३५६७०९५६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला ५१ कलाशेष ८४०१७१७२८००० को ६० गुणके ५०४०७३०३६८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ विकलाशेष १४९१८५१०२००० एवं भगणादिमंदोच्चशुक्रः २४२।२।१९।५१।३१ अथ शनिः-अहर्गणको शनि मंदोच्च भगण ३९ से गुणके २७८६२७५६३०६९६९ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १७ भगणशेष १०३७१५३२३०९६९ को १२ गुणके १२४४५८३८०७१६२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि ७ राशिशेष १४००४१३९७५६२८ को ३० गुणके ४२०१२४१९२६८८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २६ अंशशेष ९८६५५५७४०८४० को ६० से गुणके ५९१९३३४४४५०४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३७ कलाशेष ८१०३८४८१४४०० को ६० गुणके ४८६२३०८८८६४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३० विकलाशेष १२८५५४०२४०००एवं भगणादिशनिमंदोच्चं १७ । ७ । २६ । ३७ । ३० ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमंदो
च्चानयनं नाम सप्तमो विनोदः ॥ ७ ॥

अथ भौमादीनां पातानयनम्—अहर्गणको भौमपात भगण २१४से गुणके १५२८८२४५७६८४३९४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ६९

भगणशेष १४०२३४६११९६३९४को१२गुणके१६८२८१५४२०१८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १० राशिशेष १०४८९७६०७६७२८ को ३० गुणके ३१४६९२८२३०१८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १९ अंशशेष १४८८४३५६९८४० को ६० गुणके ८९३३०६१४११९०४००उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कला:५६कलाशेष९६७२१५८२२४०० को ६० गुणके ५८०३२९४२३४४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकला:३३ विकलाशेषः १२२७९०७५३६००० एवं भगणादिभौमपातः ९६ । १० । १९ । ५६ । ३३ राश्यादि १२ से शुद्ध १ । १० । ३ ।२४॥अथ बुधः ॥अहर्गणको बुधपात भगण ४८८ से गुणके ३४८६२९११५५८४१००८ उक्त कल्पभूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २२० भगणशेष १४८७२३३६८८१०४८ को १२ गुणके १७८४६८०४१७२५६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि ११ राशिशेष ४८९७०८०६४५७६ को ३० गुणके २४६९१२४११९३७२८० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कला: १८ कलाशेष ९९६३६८२१२८०० को ६० गुणके ५९७८२०९१७६८००० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धविकला: ३७ विकलाशेष १३९९१३३१३२००००एवं भगणादिजातः बधपातः२२०।११ । ९ । १८।३७ राश्यादि १२ से शुद्ध० ।२०।४१। २३॥अथ गुरुः ॥अहर्गणको गुरुपात-भगण १७४ से गुणके १२४३०६२९७३६९५५४ उक्तकल्पभूदिनोंके भागसे-लब्ध भगण ७८ भगणशेष १२२८७०६०५५५४ को १२गुणके १४७२४४८१४२६६४८उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ९ राशिशेष ५४३२२०९७४६४८ को ३० गुणके १६२९६६२९२३९४४०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ५१७४५०९५९४४० को६० गुणके ३१०४७०५७५६६४००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला: ४० कलाशेषः १०६६६१८८३४४०० को ६० गुणके ६३९९७१३००

६४०००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४० विकलाशेष ८८०४१ ६९४४००० एवं भगणादिगुरुपातः७८ ।९ । १० । ४० । ४०राश्यादि १२ से शुद्धः २। १९ । १९।२० अथ शुक्रः—अहर्गणको शुक्रपात भगण ९३० से गुणके ४५०६८१९१०७५१३ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २०४ भगणशेष १३१६३४५२८३५१३ को १२ गुणके १५७९६१४३४०२१५६ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १० राशिशेष१६९६५१२२२१५६को ३० गुणके ५०८९५३६६४६८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश०अंशशेष ५०८९५३६६४६८ को ६० गुणके ३०५३७२१९८८०८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः१६ कलाशेष ५५६७८११४८८०० को ६० गुणके ३३४०१८६८९२ ८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः२१ विकलाशेषः २७०५९ ४५४००००एवं भगणादि शुक्रपातः २०४ । १० । ० । १९ । २१ राश्यादि १२ से शुद्धः १ । २९ । ४० । ३९ अथ शनिः—अहर्गणको शनिपात भगण ६८२ से गुणके ४७२९३५४५३१०६०२ उक्त कल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २९९ भगणशेष ११३८०२२६३८६०२ को १२ गुणके १३६५६२७१६६३२१४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध-राशि ८ राशिशेष १०३२९२९०३९२३४ को ३० गुणके ३०९८७८७११७६७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश१९ अंशशेष १००७४३२४४४७२० को ६० गुणके ६०४४५९४६६८३२०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३८ कलाशेष ४८५०६९२१९२०० को ६० गुणके २९१०४१५३१५२००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला १८ विकलाशेष ७०१६२२२४८०००एवं भगणादि शनिपातः २९९ । ८ । १९ । ३८ । १८ राश्यादि १२ से शुद्धः ३ । १० । २१ । ४२ इति भौमादीनां पातानयनम् । अथ संवत्सरानयनम्—गुरुके गत भगण १६४९००९९९ को १२ गुणके १९७८८११९८ फिर वर्तमानराशि

११को जोडके १९७८८११९९९फिर ६० के भागसें लब्ध ३२९८० १९ इतने विजयादि संवत्सर गया. और शेषांक ५९ यह रहा और मध्य-गुरुके अंशादि २८ । ७ । २ कोंनै १२ गुणके ३३७ । २४ । २४ फिर ३० भागसे लब्ध गतमासादि ११ । ७ । २४ । २४ शेषांक ५९ में २६ जोडनेसे प्रभवादि भुक्त संवत्सर २५ । ११ । ७ । २४ । २४ यह हुवा.

अथ देशांतरानयनम्–भूव्यासयोजन १६०० के वर्ग २५६०००० को १० गुणके २५६००००० इसका मूल ५०५९ यह भूपरिधि हुई. इस्को लंबज्या ३१०० से गुणके १५६८२९००० त्रिज्या ३४३८ के भागसे लब्ध स्वदेश काशीकी स्पष्ट भूपरिधि ४५६२ रविगति ५९ । ८ को देशांतर योजन ६० से गुणके ३५४८फिर स्पष्ट परिधिके भागसे लब्ध कलादि देशांतरफल०।४७ सूर्यका हुवा. ऐसे चन्द्र १०।२४ भौम ०।२४ बुध ३ । १४ गुरु ० । ४ शुक्र शीघ्रोच्च १ । १६ शनि० । २ चंद्रोच्च० । ५ चन्द्रपात० । ३ उक्त देशांतर फलको मध्य रेखासे काशी पूर्व होनेके सबब ग्रहोंमें हीन किया. जब देशांतरसंस्कृत मध्यम ग्रह हुवा. सूर्य ०।६। ३६ । ५८ चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४१ चन्द्रउच्च ८ । ११ । ४६ । २६ पातः ७ । १८ । २९ । ५० मंगलः १० । २५ । ० । ४० बुधः ११ । २४ । ५९ । ३४ बृहस्पतिः ११ । २४ । ४२ । ३४ शुक्रः ८ । १८ । ४२ । ० शनिः ११ । १७ । २९ । ५७ ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते भौमादिपातसंवत्सर-देशांतरानयनं नाम अष्टमविनोदः ॥ ८ ॥

अथ ग्रहाणां क्रमेण स्फुटीकरणम्–मध्यम रविः १० । ६ । ३४ । ५८ को मंदोच्च २ । १७ । २६ । ५२ में हीन किया जब मंदकेंद्र २।१० । ४१ । ५४ हुवा यह विषम पद होनेसे यही मत भुज २ । १० । ४१ । ५४ और गम्यभुज० । १९ । १८ । ६ हुवा. इसकी कोटी ० । १९ ।

१८ । ६ यही है. भुजलिप्ता ४२२४१। ५४ के तत्त्वलोचन २२५ भागसे लब्ध १८ तन्मितखंडज्या ३१७७ यह गत संज्ञक है. और गम्य संज्ञक ३२५६ इन दोनोंका अंतर ७९ इस्से शेष १९१ । ५४ इस्से गुणके ५१ ६० । ६ तत्त्वलोचन २२५ के भागसे लब्ध ६७। २२ को गतभुजज्या पिंडमें जोडे स्पष्टज्या ३२४४ । २२ यह हुई अथ स्पष्टपरिधि लानेकी विधिः–युग्मांत रविमंदपरिध्यंश १४३७ ओजांतपरिध्यंश १३ । ४० ओजयुग्मांत २० से भुजज्यागुणके ६४८८७ । २० त्रिज्याके भागसे लब्ध कलादि १८ । ५२ ओजवृत्तयुग्म वृत्तसे अधिक होनेके कारण युग्म-वृत्तमें ऋण किये स्पष्ट परिधिः १३।४१।८भुजज्यागुणके४४०१भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १२३ । २० यही धनु और यही कलादि मंदफल कहलाता है यहां मेषादि केंद्रवशसे मध्यमरविमें योगसे स्पष्ट रवि ० । ८। ४०। १६ अथ गत्यानयनम्–रवि केंद्रगति ५९ । ८ दोर्ज्यांतर ७९ से गुणके ४६७१३२ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध २० । २४५ को स्व-मंदपरिधिसे १३ । ४१०८ गुणके २८३५९ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि गतिफल० । ४७ मकरादि केंद्रवशसे मध्यगतिमें ऋण करनेसे रवि स्पष्टगतिः ५८ । २१ अथ चन्द्रः–मध्यम चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४५ मंदोच्च ८ । ११ । ४६ । २६ मंदकेंद्र ५ । २८ । २३ । ४१ भुज ० । १ । ३६ । १९ भुजज्या ९६ । १९ भुजज्यांतर २२५ स्पष्टमंद-परिधिः ३१ । ५९ । २६ मंदफल कलादि ३ । २५ मेषादि केंद्र होनेसे मध्यम चन्द्रमें धन किया जब स्पष्टचंद्रः २ । १३ । २६ ।१०अथ गतिः चन्द्रमध्यमगतिः ७ । ० । ३५ में उच्चगति १६ । ४१ हीनकिया मंदके-न्द्रगतिः ७८३ । ५४ को स्पष्ट परिधि ३ । ५९ । २६ से गुणके २५० ८८ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि १९ । ४२ कर्कादि केन्द्रवशसे मध्य गतिमें धनकिये चंद्रस्पष्टगतिः ८६० ।१६ अथ भौमः–भौम मध्यमः १० ।२५। ० । ४० भुजज्या २२८१ । ४० शीघ्रोच्चं० । ६ । ३४ ।

५८ शीघ्रकेन्द्रं १ । ११ । ३४ । १८ भुज १ । ११ । ३४ । १८ कोटि १ । १८ । २४ । ४२ भुजज्या ३२८१ । ४० दोर्ज्यांतर १६४ कोटिज्या २२७१ । ४२ कोटिज्यांतर १५४ स्पष्टशीघ्रपरिधिः २३३ । ० भुजज्या कोटिपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १४७ ६२१ एवं कोटिफल १६६५ । ३१ मकरादि केन्द्रसे त्रिज्याधन ५१० २ । ३१ हुवा इसका वर्ग २६०३५६७६ । २० भुजफलके वर्ग २ । ७९६०९ । १९ दोनों वर्गों के योग २८ । २१५२८५ । २९ इसका मूल चलकर्ण ५३११ । ४८ यह हुवा त्रिज्यागुणित भुजफल ५०७५६९० । १८ के चलकर्णके भागसे लब्ध १५५ । ३३ इसका धनु वही शीघ्र फल कलादि १६८ । ३६ इसका आधा ८४ । १८ मेषादिकेन्द्रसे मध्यम भौममें धन किये प्रथम कर्म संस्कृत भौम ११ । ३ । ४ । ५८ अथ द्वितीय कर्म मांदसंज्ञकः प्रथम कर्मसंस्कृत भौमः ११ । ३ । ४ । ५८ मंदोच्च० । १० । २ । २२ मन्दकेन्द्र ५ । ६ । ५७ । २४ भुज० । २३ । २ । ३६ भुजज्या ९३४४ । ४१ भुजज्यांतर २०५ स्पष्टमंदपरिधि ७३ । ५० परिधिसे गुणके भुजज्याको फिर भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल २७५ । ४७ इसका आधा १३८ मेषादि केन्द्र वशसे प्रथम संस्कृत भौममें धनकिये द्वितीयक० सं० भौमः ११ । ५ । २१ । ५८ अथ तृतीयकर्ममांदसंज्ञकः द्वितीय कर्मज भौमः ११ । ५ । २२ । १८ मंदोच्च ४ । १० । २ । २९ मंदकेंद्र ५ । ४ । ३९ । २४ भुज० । २५ । २० । ३६ भुजज्या १४७० । २६ भुजज्यांतर २०५ स्पष्टमंदपरिधिः ७३ । ४३ । परिधिसे गुणके भुजज्याको भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल ३०१ । ५ इसीकी धनु यही लिप्तादिमंदफल ३०१ । २३ को मेषादि केंद्रवशसे मध्यम भौममें धन किये मंद स्पष्ट भौमः ११ । ० । २ । ३ अथचतुर्थ कर्म-शीघ्रसंज्ञकमंदस्पष्टभौमः ११ । ० । २ । ३ शीघ्रोच्च ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रकेंद्र १ । ६ । ३२ । ५५ भुज १ । ६ । ३२ । ५५ कोटि

१ । २३ । २७ । ५ भुजज्या २४६ । ३४ दोर्ज्यांतर १८३ कोटिज्या २७६१ । ४१ कोटिज्यांतर १३१ स्पष्टशीघ्रपरिधि २३३ । ३ भुजफल १३२५४८ कोटिफल १७८८ । ४७ मकरादिकेंद्रवशसे त्रिज्यामें धनकिये ५२२६ । ४७ इसका वर्ग २७३१९२६४ । ३ भुजफलवर्ग १७५७७४५ दोनोंके योग २९०७७००९ । ३८ इसका मूलचलकर्ण ५३९२ । १८ इस्से धन किया जब कलादिशीघ्रफल ८५४ । ४ मेषादिकेंद्रवशसे तृतीयकर्मजभौममें धन किये स्पष्टभौमः ११ । १४ । ९६ । ७ अथ भौमगतिः-मध्यमगतिः३१ । २६ शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ में ऊनकिये प्रथमकेन्द्रगतिः २७ । ४२ शीघ्रफलकोटिज्या ३३०१ । १० चलकर्ण ५३ । ४८ इनके विवर २०१०३३ से गुणके ५५६९४५ फिर चलकर्णके भागसे लब्ध १० । २९ आधा ५ । १० यह शीघ्रफलके अर्द्धकर्णकोटिज्याके अधिकता वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगतिः ३६ । ४१ इस्को मंदोच्चगति०।० में हीनकिये मंदकेन्द्रगतिः ३६ । ४१ यहां द्वितीयमंदफलावसरमें दोर्ज्यांतर २०५ से गुणके ७५२० । ५ फिर तत्त्वनेत्र ३२५ के भागसे लब्ध ३३ । २५ को स्वमंदपरिधिः ७३ । ५० से गुणके २४६७ । ० भगणांशके भागसे लब्ध कला ६ । ५१ इसका आधा ३ । २५ वहां कर्कादिकेन्द्र वशसे जोडनेसे प्रथम द्वितीय कर्मगतिः ४० । ६ इस्को मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये तृतीय मंदकेंद्रगति ४० । ७ इस्को दोर्ज्यांतर २०५ से गुणके २२०० । ३० तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ३६ । ३२ इस्को स्वमंदपरिधि ७३ । ४३ से गुणके ३२०४४७ भगणांशके भागसे लब्ध कला ८५४ इसको कर्कादिकेन्द्रके कारण मध्यम गतिमें धनकिये मंदस्पष्टगतिः४०।२०अथ चतुर्थकर्म इस्को शीघ्रोच्चगतिः५९।८में हीनकिये १८ । ४८ हुये शीघ्रफल कोटिज्या ३३३१ । २४ कर्ण ५३९२ । १८ इन्होंको विवर २०६० ।५४ से गुणके ३८७४५ चलकर्णके भागसे लब्ध ७ । ११ यहां शीघ्रफल कोटिज्याकर्णसे अधिक होनेके कारण

मंद स्पष्टगतिमें धनकिये भौमकी स्पष्टगतिः ४७ । ३१ अथ बुधस्पष्टक-रनेकी विधि—बुधमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच्च ८ । ० । ५३ । ३२ शीघ्रकेंद्र ७ । २४ । १८ । ३४ भुज १२४ । १८ । ३४ कोटि १ । ५ । ४१ । २६ भुजज्या २७९२ । १३ कोटिज्या २००४ । ४२ स्पष्टशीघ्रपरिधि १३२ । १२ भुजफल १०२५ । ० कोटिफल ७३६ । १० कर्कादिकेन्द्र होनेसे त्रिज्यामें ऋण किये २००१।५० इसका वर्ग ७२९ ९९०३। २१ भुजफलवर्ग १०५०६२५ । ३ दोनोंका योग ८३५०५२ .८२१ इसका मूल वही चलकर्ण २८८९ । ३४ त्रिज्याभ्यस्त भुज फल ३५२३९५० । ० के चलकर्णके भागसे लब्ध १२१९२८ इसका धनु वही लिप्तादि शीघ्रफल १२४७।३८ इसका आधा ६२ २।४९ तुलादिकेंद्रसे मध्यम बुधमें ऋणकिये प्रथम कर्म ११।२६।११। ९ अथ द्वितीयकर्म प्रथम कर्मज बुधः ११।२६।११।९ मंदोच्च ७।१०। २७।४९ मंदकेंद्र ७।१४।१६।४० भुज ११।४।१६।४० भुजज्या १३ ९९।२४ दोर्ज्यांतर १६४ स्पष्टमंदपरिधिः २८।३५ भुजफल १९०।३० इस्का धनु वही कलादि मंदफल १९।३० इसका आधा ९।४५ तुलादिकें-द्रसे प्रथम कर्म में ऋणकिये द्वितीय कर्म ११।२४।३५।५४ अथ तृतीय कर्म द्वितीयकर्म ११।२४।३५।५४ मंदोच्च ७।१०।२७।४९ मंदकेन्द्रं ७। १५।५१।५५ मंदपरिधि २८।३४ भुजफल १९।४७ इसका धनु वही मंद-फल १९५।१० तुलादिकेन्द्रसे मध्यमबुधमें ऋणकिये तृतीयकर्म ०।३। १९।४७ अथ चतुर्थ कर्म ०।३।१९।४७ शीघ्रोच्च ८।०। ५३।३२ शीघ्र-केन्द्र ७।२७।३३।४५ कोटि १।२।२६।१५ भुजज्या २९००।३९ कोटिज्या १८४३।८ स्पष्टशीघ्रपरिधिः १।३२।१० भुजफल १०६४। ५४ कोटिफल ६७६।४० कर्कादिकेन्द्रसे त्रिज्याऋण २७६१।२० इसका वर्ग ७६२४९६११।४७ भुजफलवर्ग ११३४१०२ दोनोंका योग ८७५८ ९७३।४७ इसका मूलचलकर्ण २९५५९।३३ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ३६

६।११२३।१२ के चलकर्ण भागसे लब्ध १२३७।३ इसका धनु वही लिप्तादि शीघ्रफल १२६६।२८ तुलादिकेन्द्रसे मंदस्पष्टमें ऋणकिये स्पष्टबुधः ११। १२।१३।९। अथ बुधगति लानेकी विधि—बुधमध्यमगतिः५९।८शीघ्रोच्चगतिः २४५।३२ शीघ्रकेन्द्रगतिः १८६।२४ शीघ्रफल कोटिज्या ३२१२। ५६ चलकर्ण २८८९।४३ दोनोंके अंतरके चलकर्णके भागसे लब्ध २० ५ इसका आधा १०।२५ कर्ण वशसे मध्यगतिमें ऋणकिये प्रथम कर्म गति ४८।४३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्चगतिमें० हीन प्रथम कर्मगतिको किये मंदकेन्द्रगति ४८।४३दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ३५।३० स्वमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २।४९ इसका आधा १।२४ केंद्रवशसे प्रथम कर्ममें धन किये. द्वितीय कर्म गतिः ५०। ७ अथ तृतीय कर्म द्वितीय कर्म गति ५०।७ को मंदोच्च गतिमें हीनकिये ५०।७ इसको दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्रके भागसे लब्ध ३४।१७ को फिर स्वमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे तृतीय कर्मगति ६१।५१ अथ चतुर्थ कर्म इसको शीघ्रोच्च गतिमें हीनकिये चतुर्थ शीघ्रकेंद्रगति १८ ३।४१ शीघ्रफलकोटिज्या ३२०६।१९ चलकर्ण १२९५९।३३ इसका विवर करके फिर उक्त शीघ्रकेंद्रगतिको गुणके चल कर्णके भागस लब्ध १५।१९ चलकर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें ऋणकिये बुधस्पष्टगतिः ४६।३२ अथ गुरुः स्पष्टगुरुमध्यम ११५९।५९।३४शीघ्रोच्च ०।६।३४।५८ शीघ्रकेन्द्र ०।११।३५।२४।भुज०।११।३५२४ कोटि २।१८।२४। २६ भुजज्या ६९०।५६ कोटिज्या ३३६७।२२ स्पष्टशीघ्रपरिधि ७०२४ भुजफल १३५।७ कोटिफल ६५९।३० मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यादि धनकिये ४०९६।३० इसका वर्ग १६७८२३२२।१५भुजफलवर्ग १८२५६।३१ दोनोंका योग १६८००५६८।४६ के चलकर्णके भागसे लब्ध ११३।१९ इसका चाप धनु शीघ्रफल ११३।१९ इसका आधा ५६।५९ मेषादि केन्द्रसे मध्यम गुरुमें धन किये प्रथम

कर्म ११ । २५ । ५६ । १३ अथ द्वितीय कर्मः–प्रथम कर्म ११ । २५ । ५६ । १३ मंदोच्च ५ । २१ । २१ । ४ मंदकेंद्र ५ । २५ । २४ । ५१ भुज ० । ४ । ३५ । ९ भुजज्या २७ । ४ । ५५ दोर्ज्यांतर २२४। स्पष्टमंदपरिधि ३२।५५ स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २५।८इसका धनु वही मंदफल २५।८ इसका आधा १२।३४ मेषादिकेंद्रसे प्रथमकर्ममें धन किये द्वितियि कर्म ११।२६ । ८ । ४७ अथ तृतीयकर्म द्वितीयकर्म ११ । २६ । ८ । ४७ मंदोच्च ५ । २१ । २१ । ४ मंदकेंद्र५ । २५ । १७ । १७भुज० । ४ । ४७ । ४३भुजज्या २८ । २६ दोर्ज्यांतर करके जिसका चाप [illegible] वही मंदफल २६।१७ को स्पष्टमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २६ । १७ इसको मेषादि केंद्रसे मध्यम गुरुमें धनकिये तृतीय कर्म ११ । २५ । २५ । ५१ अथ चतुर्थ कर्म तृतीयकर्म ११ । २५ । २५ । ५१ शीघ्रोच्च ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रकेन्द्र ० । ११ । ९ । ७ भुज० । ११ । ९ । ७ कोटि २।१८ ५० । ५३ भुजज्या ६६५ । १२ कोटिज्या ३३७२ । ५८ स्पष्टशीघ्रपरिधिः ७० । २३ भुजफल १३० । ४ कोटिफल ६५९ । २७ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ४०९७ । २७ इसका वर्ग १६७८९०९६ भुजफलवर्ग १६९१७। २० दोनोंका योग १६८०६०१३ । ५० इसका मूल चलकर्ण ४०९९ । ३० त्रिज्याभ्यस्तभुजफलके चलकर्णको भागसे लब्ध २३३ । २९ इसका धनु वही शीघ्रफल १३३ । २९ मेषादिकेंद्रसे मंदस्पष्टगुरुमें धनकिये गुरुस्पष्टः ११ । २७ । ३९ । २० अथ गतिः गुरुमध्यमगतिः ४ । ५९शीघ्रोच्चगतिः १५।८ शीघ्रकेंद्रगतिः ५४।९ शीघ्रफलकोटिज्या ३४।३५।२८ चलकर्ण ४०९८ । ५१ दोनोंका विवरसे ६६४ । २३गुणके३५९९७६।२१चलकर्णके भागसे लब्ध८।४७इसका आधा४। २३ चलकर्णवशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगति ९।११अथ द्वितीयकर्म प्रथमकर्मगतिको मंदोच्च ० । ० गतिमें हीनकिये मंदकेन्द्र ९ । २१ इसको दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध९ ।१९को स्वमं-

दपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध० । ५१ इसका आधा ० । २५ कर्कादिकेन्द्रसे प्रथमकर्म गतिमें धनकिये द्वितीय कर्मगति ९ । ४७ अथ तृतीय कर्ममंदकेंद्रगति ९ । ४७ को दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ९ । ४४ को स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध १ । १० कर्कादिकेंद्रसे मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कमगति ६ । ९ अथ चतुर्थ कर्म मंदस्पष्टगति ६।९ शीघ्रोच्चगतिमें शाधस.शाघ्रकेंद्रगति ५३ । ० शीघ्रफलकोटिज्या ३४३३ । ५० चलकर्ण ४०९९३०२ दोनोंका अंतर-को ६६५ । ४० णके ३५२८० । २० चलकर्णके भागसे लब्ध ८।३५ कर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें धनकिये स्पष्टगरुकी गति १४ । ४४ अथ शुक्र स्पष्टः शुक्रमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच्च ८ । १८ । ४२ । ० शीघ्रकेंद्र ८ । १२ । ७ । २ भुज २ । १२ । ७ । २ कोटि ० । १७ । ५२ । ५८ भुजज्या ३२७१ । ० कोटिज्या १०५५ । १७ स्पष्ट शीघ्र-परिधि२६०।३भुजफल८५२६५।४०दोनोंका योग १२७४३८।३३।२८ ६०५।३३इसका वर्ग ७२५८५६७४८ भजफलवर्ग५८५२६५ । ४० दोनोंका योग१२७४३८३३२८इसका मलचलकण ३५६९।५१ त्रिज्या-भ्यस्त भुजफलके चलकर्णके भागसे लब्ध२२७६।४इसका धनु वही भुजफल २४८७।३०इसका आधा१२४३।४५तुलादि केंद्रसे मध्यम शुक्रम ऋण-किये प्रथम कर्म ११ । १५ । ११ । १३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्च २ । १९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र ३ । ४ । ०।१८भुज २ । १५ । ५९ । ४२ भुजज्या ३४२९ । ३० दोर्ज्यांतर २१ स्पष्टमंदपरिधि ११ । ० स्पष्टमंद-परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध १०४ । ४७ इसका चापकिये वही मंदफल १०४ । ४७ इसका आधा ५२ । २४ मेषादिकेन्द्रसे प्रथम कर्ममें धनकिये द्वितीयकर्म ११ । १६ । ४३ ।३७ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च २ । १९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र३ । ३ । ७ । ५४ भुज २ ।२६ ।५२। ६ भुजज्या ३४ । ३२ । ९ दोर्ज्यांतर ७ स्पष्टमंदपरिधि ११ भुज-

फल १०४। ५१ इसका चाप वही मंदफल १०४५। ५२ मेषादिकें-द्रसे मध्यम शुक्रमें धनकिये तृतीय मंदस्पष्ट शुक्र कर्म ०।८।१९।५० अथ चतुर्थकर्ममंदस्पष्ट ०।८।१९।५० शीघ्रोच्च ८।१८।४२। ० शीघ्रकेंद्र ८।१०।२२।१० भुज २।१०।२२।१० कोटि ०।१९।३७।५० भुजज्या १२३७।२७ कोटिज्या ११५४। १८ स्पष्ट शीघ्रपरिधिः २६०।७ भुजफल ३३३९। १२ कोटिफल ८३४।२ कर्कादि केन्द्रसे त्रिज्यामें ऋणकिये २६०४ इसका वर्ग ६७००८१६ भुज फलवर्ग ५४७१८५६।३८ दोनोंका योग ७१२६२६७२५४ इसका मूल चलकर्ण ३५००।२२ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ७१८५८०४२१६९।३६ चलकर्णके २२९७।३१ भागसे लब्ध २२९७। ३१ इसका चाप वही शीघ्रफल कलादि २५१६। ५२ तुलादिकेंद्रसे मंद स्पष्टशुक्रमें ऋणकिये स्पष्टशुक्रः १०।२६।५२।५८ अथ गतिः मध्यमगतिः ५९। ८ शीघ्रगतिः ९६।८ शीघ्रकेंद्रगतिः ३७।० शीघ्रफल कोटिज्या २५७६।४० चलकर्ण ३५६९।५१ इन्होंके विवरसे शीघ्रकेंद्रगतिको गुणके २३०७। ३४ चलकर्णके भागसे लब्ध ०। ३८ इसका आधा ०। १९ कर्णवशसे मध्यगति में धनकिये प्रथम कर्म गति ५९।२७ अथ द्वितीयकर्म इसको मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये द्वितीयमंदकेंद्र गति ५९।२७ दोर्ज्यांतर २२ से गुणके १३०७।५४ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ५।४८ को स्वमंदपरिधिसे गुणके ६३। ४८ भगणांशके भागसे लब्ध ०।११ इसका आधा ०।५ कर्कादि केंद्र से प्रथमकर्म में धनकिये द्वितीयकर्म गति ५९।३९ अथ तृतीयकर्म मंद केंद्रगति ५९।३२ को दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध को लब्ध परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध ०।३ मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति ५९।११ शीघ्रोच्च गति में शोधित किये चतुर्थ शीघ्रकेंद्रगति ३६।५७ शीघ्रफल कोटिज्या २५५६

। १५ चलकर्ण ३५००। २२ इन्होंका पूर्वोक्त कर्म करनेसे शुक्र स्पष्टगतिः ६९ । १५ अथ शनिःस्पष्टः– मध्यमशनिः ११ । १७ । २९ । ५७ शीघ्रोच्च ० । ६ ।३४ । ५८ शीघ्रकेंद्र ० । १९ । ५ । १ भुज० । १९। ५ । १ कोटि २ । १० ।५४ । ५९ भुजज्या ११२३ ।४० कोटिज्या ३२ । ४८ । ५८ स्पष्टशीघ्रपारिधि ३९ । २० भुजफल १२२।४६ कोटिफल ३५४ । ५८ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ३७९२ । ५८ इसका वर्ग १४३८६५९६ ।८ भुजफलवर्ग १५०७१। ३९ इन दोनोंका योग १४४०१६६७ । ४७ इसका मूल चलकर्ण ३६९४ । ५७ त्रिज्याभ्यस्त भुजफलको चलकर्णके भागसे लब्ध ११४। १३ इसका धनु स एव शीघ्रफल ११४ । १३ इसका आधा ५७ । ६ मेषादिकेंद्रसे मध्यमशनिमें धनकिये प्रथम कर्म ११ । १८ ।०।३ अथ दितीय कर्म, मंदोच्च ७ ।२६। ३७ । ३० मंदकेंद्र ८ । ८।१०।२७ भुज २ । ८। १० । २७ भुजज्या ३११९ । १२ दोर्ज्यांतर ७९ स्पष्टमंद परिधि ४८ ।५ उक्त प्रकारसे भुजफल ४२६ । १४ इसका धनु वही मंदफल ४२७। ८ इसका आधा २१३ । ३४ तुलादि केंद्रसे प्रथम कर्ममें ऋणकिये द्वितीय कर्म ११। १४ । ५३।१९ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च ७ । २६ । ३७ । ३० मंदकेन्द्र ८ । ११ । ४४।१ भुज २ । ११ । ४४ । १ भुजज्या ३२६४ । २३ दोर्ज्यांतर ६५ स्पष्टमंदपरिधिः ४८ । ४ से गुणके भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल ३४५ । ५१ का धनुषएव मंदफल ४३६ । ४७ तुलादि केन्द्रसे मध्यमशानि में ऋणकिये तृतीय मंदकर्मज शनिस्पष्टः ११ । १०।१३.। ० अथ चतुर्थकर्म तृतीय कर्म ११।१० । ३ । १० शीघ्रोच्च ० । ६।३४। ५८ शीघ्रकेंद्र ० । २६ । २१ । ४८ भुज, ० । २६ । २१।४८ कोटि २ । ३।३८ । २ भुजज्या १५२६ । ० कोटिज्या ३०८० । ४७ स्पष्ट शीघ्रपरिधि ३९ । २६ भुजफल १६७।९ कोटिफल ३३७।२८ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये पीछे इसका वर्ग१४२५४१४८।३३भुजफलवर्ग

२७९३९।७दोनोंका योग१४२८२०८७।४०इसका मूलचलकर्ण ३७७९।९ त्रिज्याभ्यस्त भुजफलके कर्णके भागसे लब्ध१५२।४इसका चाप वही शीघ्र फल१५२।४ मेषादि केंद्रसे मंदस्पष्टमें धनकिये शनि स्पष्ट ११।१२।५५।१४अथ गतिः शनिमध्यगतिः२।० शीघ्रोच्चगति ५९।८शीघ्रकेंद्रगतिः ५७।८शीघ्रफलकोटिज्या३४३४।२६ चलकर्ण३६९४।५७इन्होंके अंतर २६।३१से गुणके१४८७४।११चलकर्णके भागसे लब्ध४।०इसका आधा २।०कर्णके वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथमकर्मगति ४। ० अथद्वितीय कर्म मंदोच्चगति ०।० में हीनाकिये द्वितीयमंदकेंद्रगति ४ । ० दोर्ज्यांतर ७९ से गुणके २ । ६० तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध१।२४ स्वमंदपरिधिसे ४८ । ५० गुणके ६७ । १९ भगणांशके भागसे लब्ध ०।११ इसका आधा ० । ५ कर्कादिकेंद्रसे प्रथम कर्ममें धनकिये द्वितीय कर्मगति ४ । ५ अथ तृतीयकर्म मंदोच्चगति ० । ० में हीनकिये तृतीय मंदकेंद्रगति ४ । ५ दोर्ज्यांतरसे ६५ गुणके २६५ । २५ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध १ । १० को स्वमंदपरिधि ४८ । ४ से गुणके ५६ । ५ भगणांशके भागसे लब्ध ० । ९ कर्कादिकेंद्रसे मध्यमगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति मंदस्पष्ट २ । ९ अथ चतुर्थकर्म मंदस्पष्टगति २ । ९ से पूर्वोक्तगणित करके चलकर्ण ३७७९ । ९ इसके अंतरसे ३४४ । २० गुणके १९६२७ । ० चलकर्णके भागसे लब्ध ५ ।१० कर्णके वशसे मंदस्पष्ट गतिमें धनकिये शनि स्पष्टगति ७ । १९ सब इकठ्ठा ग्रहस्पष्ट यहां लिखेहैं. सूर्य ० । ८ । ४० । १६ गति ५८ । २१ चंद्र २ । ३० । २६ । १० गति.८६० । १८ मंगल ११ । १४ । १६ । ७ गति. ४० । ३१ बुध ११ । १२ । १२ । १९ गति ४६ । ३२ गुरु ११ । २७ । ३९ । २० गति. १४ । ४४ शुक्र १० । २६ । २२ । ५८ गति ६९ । ७ शनिः ११ । १२ । ५५ । १४ गतिः ७ । १९ ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे स्वभाषाविभूषिते ग्रहस्पष्टीकरणं नाम नवमविनोदः ॥ ९ ॥

अथ भौमादिकोंके पातस्पष्टकरनेकी विधि—भौमः १।१०। ३ । २४ चतुर्थशीघ्रफल १४ । १४ । ४में युक्तकिये स्पष्ट भौमपातः ० । २ । १७ । १८ अथ बुधपातः ० । २० । ४१ । २३ तृतीयमंदफल ३ । १५ । १० युक्तकिये स्पष्टबुधपात १० । २३ । ५६ । ३३ और गुरुपात. २ । १९ । ४० । २ को चतुर्थ शीघ्रफल २ । १३ । २९ में युक्तकिये स्पष्टगुरुपात २ । २१ । ५३ । ४९ । और शुक्रपात १ । २९ । ४० । ३९ में तृतीयमंदफल ० । ४४ । १२ में ऋणकिये स्पष्ट शुक्रपातः १ । २८ । ५६।२७ और शनिपात ३ । १० । २१ । ४२ म चतुर्थ शीघ्रफल २ । ३२ । ४ युक्तकिये स्पष्टशनिपात ३ । १२ । ५६ । ४६ ॥

अथ चंद्रादिकोंके विक्षेपानयनविधिः—स्पष्टचंद्रः २ । १३। २६।१० चंद्रपात ७ । १८ । २९ । ५० चंद्रोनपातकेन्द्र ५। ४ । ५३ । ४० भुज ० । २५ । ६ । २० भुजज्या १४५७ । २६ चंद्रमेषादिके वशसे याम्य विक्षेप ११।२८ चंद्रकी स्पष्टलिप्ता २७० से गुणके ३९३५०७। ० फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रवशसे याम्यचंद्र विक्षेप ११४ । २८ अथ भौमविक्षेपलानेकी विधिः—भौमस्पष्ट ११।१४।१६ । ७ भौमपात १ । २४ । १७ । २८ भौमोनपातकेंद्र २ । १० । १ । २० इसकी भुजज्या. ३२३०१८ भौमविक्षेपलिप्ता ९० से गुणके २९०७१२ । ० चलकर्ण ५३९२। १८ के भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्य भौमविक्षेपः५३ । ५४ अथ बुधशीघ्रोच्च० । ०।५३ । ३२ बुधपात १० । २३ । ५६ । ३३ शीघ्रोनपातकेंद्र ४ । २३ । ३ । १ भुज १ । ६ । ५६ । २९ भुजज्या २० ६६ । ९ बुधविक्षेपलिप्ता १२० से गुणके २४७९३८ । ० फिर चलकर्ण २९५९ । २३ के भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्यबुधविक्षेप ८३ । ४६ अथ गुरुः स्पष्टगुरुः ११ । २७ । ३९ । २० स्पष्टपात २ । २१ । ५३ । ४९ गुरूनपातकेंद्र २ । ४ । १४ । २९ भुजज्या ३४ । १९ । १३ गुरुविक्षेपलिप्ता ६० से गुणके २०५१५३।० चलकर्णके ४०९९।३० भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्यगुरुविक्षेप ५०।२

अथ शुक्रःशुक्रशीघ्रोच्च८।१८।४२।०स्पष्टपात १।२७।५५।४७शीघ्रोनपातकेंद्र५।९।१३।४७भुज२।२०।४६।१३भुजज्या१२१८०८को शुक्रविक्षेपलिप्ता१२०से गुणके१४६१७६१७६।०चलकर्ण३५००२२के भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्यशुक्रविक्षेप ४७।४५ अथ शनिः शनिःस्पष्टः ११। १२। ४५। १४ स्पष्टशनिपात ३। १२। ५२। ४६ शन्यूनपातकेन्द्र ४।०।८। ३२ भुज १। २९। ५१। २८ भुजज्या २९७३। २९ शनिविक्षेपलिप्ता १२० से गुणके ३५६८१८।० फिर चलकर्ण३७७९। ९ के भागसे लब्ध मेषादिकेन्द्रसे याम्यशनिविक्षेपः ९४। २५ ॥

अथ सूर्यादिकोंके क्रांतिसाधनविधिः–स्पष्टरविः ०।८। ३८। १८ सायन०। २४। ५४। १८ भुजज्या १४४६। २८ परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके २०२०७१३। ५६ फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध सूर्यक्रांतिज्या ५८७। ४५ इसका धनुः वही सायन सूर्यके मेषादिसे सूर्यकी उत्तर क्रांति लिप्ता ५९०। ३७ अथ चन्द्रः–स्पष्टसायनचंद्रः२। २९। ५९। १० भुजज्या ३४३८।० क्रांतिज्या १३९७ इसका धनु वही सायन मेषादिसे उत्तरचंद्र क्रांतिलिप्ता १४४० अथ भौमः–सायनभौम ०।०। ३२। ७ भुजज्या ३२। ७ को परमापक्रमज्यासे गुणके ४४८६७।० त्रिज्यासे लब्ध १३। ३ इसका चाप वही सायन मेषादि भौमके उत्तरक्रांतिलिप्ता. अथ बुधः–सायनबुधः ११। २८। २९। १९ भुज०। १। ३०। ३१ भुजज्या ९०३१ परमक्रांतिज्या ३६। ४७ फिर उक्त गणितसे चाप वही सायन बुधके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिप्ता ३६। ४७ अथ गुरुः सायनगुरुः ०। १३। ५५। २० भुजज्या ८२४। ५५ क्रांतिज्या ३३५। ११ उक्तगणितसे चाप वही सायन गुरुके मेषादिवशसे सौम्यक्रांतिलिप्ता ३३५। ४२ अथ शुक्रः सायनशुक्रः ११। १२। ३८। ५८ भुज ०। १७। २१। २ भुजज्या १०२४। ४४क्रांतिज्या ४१६। ८ इसका चाप वही सायन शुक्रके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिप्ता

४१७ । ० अथ शनिः सायनशनि ११ । २९ । १ । ४० भुज ० । ० । ५८ । २० भुजज्या ५८ । २० क्रांतिज्या २३ इसका चाप वही तुलादि शनिसायन दिवससे याम्य क्रांतिलिप्ता २३ । ५३ अथ इन्होंके स्पष्टक्रांति करनेकी विधि रविके शरको अभाव होनेसे क्रांति पूर्वोक्त है वही स्पष्ट है. अथ चंद्रः चंद्रयाम्य विक्षेप ११४ । २८ सौम्य क्रांतिलिप्ता १४४०क्रांति की और विक्षेपकी भिन्नदिशावशसे दोनोंका अंतरकिये स्पष्ट चंद्रक्रांतिः १३ २५ । ३२ अथ भौमः भौमयाम्यविक्षेपः ५३ । ५४ सौम्य भौमकी क्रांतिलिप्ता १३ । २ उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्ट भौम क्रांति ४० । ५२अथ बुधः बुधयाम्यविक्षेप ८३ । ४६ बुधकी याम्य क्रांतिलिप्ता ३६ । ४७ उक्त दोनोंके समानदिशावशसे योगकिये बुधकी क्रांतिलिप्ता १२० । ३३ अथ गुरुः याम्यगुरुविक्षेप ५० । २ सौम्यगुरुक्रांति ३३५ । ४२ उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्टगुरुक्रांतिः २८५ । ४० अथ शुक्रः याम्यशुक्रविक्षेप ४१ । ४५ याम्यशुक्रक्रांति ४१७ । ० उक्त दोनोंके एक दिशासे योगकिये स्पष्ट शुक्रक्रांतिः ४८५ । ४५ अथ शनिः याम्यशनिविक्षेप ९४ । २५ शनियाम्य क्रांति ३३ । ५३ क्रांतिविक्षेपकी समजातिवशसे योगकिये स्पष्ट शनिक्रांति ११८ । १८ अथ सूर्यादिकोंके दिनमानके लानेकी विधिः सायन सूर्य ० । २४ । ५४ । ३८ सूर्यकी स्पष्टगतिः ५८ । २७ को ग्रहप्राणोंसे १३२५ गुणके ७७३१३ । ४५ खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ४२ । ५८ को चक्रासुमें २१६०० युक्तकिये रविका स्वाहोरात्रसव २१६४२ । ५७ रविकी स्पष्टक्रांति ५९० । ३७ इसकी क्रमज्या ५८७ । ४५ उत्क्रमज्या ५२ । ७ इन्होंमें हीन त्रिज्याको किये दिन व्यास दल उत्तर३३७९।३४इन्होंके १२भागसे लब्ध कुज्या२८१ । ३८को त्रिज्यासे गुणके ९६८२५५ । २४ द्युज्याके ३३८५५३भागसे लब्ध चरज्या२८५।५८इसका चाप वही उत्तर चरासव। ।२८।६।१४यहां उत्तर चरासवके कारण स्वाहोरात्र चतुर्भागमें१४१०।४४

रवि दिनार्द्धासव १६९६।५८ और उक्त चरासवको हीनकिये रात्र्यर्द्धासव ५१२४।३० दिनार्द्धासवको द्विगुणा किये दिनमानासव ११३९३। ५६ और उक्त रात्र्यर्द्धासवको द्विगुणित किये रात्रिमानासव १०२४९।० दिनार्द्ध १५।४९।३० दिनमान ३१।३९ रात्र्यर्द्ध घटि १४।१४।५ रात्रिमान २८।२८। १० अहोरात्रिमान घटिका ६०।७।१० अथ चन्द्रः॥ सायनचंद्र २।२९।५२।१० स्पष्टगति ८।६०।१६ को ग्रहोदयप्राणों १८ २० से गुणके १५६६५६८५।२० फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ८६९।४९ को चक्रासुमें २१६०० योगकिये चंद्रके स्वाहोरात्रासव २२४६९।४९ चंद्र उत्तरक्रांति स्पष्ट १३।२५।३३ इसकी क्रमज्या १२९२।९ उत्क्रमज्या २४२।६४ इनको त्रिज्यासे हीनकिये दिनव्यास दल उत्तर द्युज्यासंज्ञक ३१८५।३६ क्रांतिज्या १२९२।२ को विषुवद्भा ५।४५ से गणके १४२९।५२ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ६१९। को त्रिज्यासे गुणके २१२८६३७।४२ फिर द्युज्या ३१८५। ३६ के भागसे लब्ध चरज्या ६६८।१२ इसका चापकिये चरासव सौम्य ६७२।९ यहां क्रांतिके कारण स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५६।७।२७ युक्त किये चंद्रका दिनार्द्धासव ६२८९।३६ और उत्तर चरासवकोही नकिये रात्र्यर्द्धासव ४९४५।१८ अथ भौमः सायन भौम ०।०।३२।७ स्पष्टगति ४७।३१ को ग्रहोदयप्राणों १३२५ से गुणके ६२९५९। ३५ फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ३४।५८ को उक्त चक्रासुमें युक्तकिये भौमका स्वाहोरात्रासव २१६३४। ५८ हुवा भौमकी स्पष्टक्रांति १४०।५२ इसकी क्रमज्या वही ४०।५२ उत्क्रमज्या१। ११इसीको हीन त्रिज्यामें किये द्युज्या ३४३६।४२ क्रांतिज्या ४०।५२ को विषुवद्भासे ५।४५ गुणके २३५।० फिर १२भागसे लब्ध कुज्या१९।३५ को त्रिज्यासे गुणके ६७३२७।३० द्युज्याके भागसे लब्ध चरज्या १९। ३६ इसका चाप वही चरासव याम्य १९।३६ इनको स्वाहोरात्र चतुर्भाग

५४०८। ४४ में हीन किये भौम दिनार्द्धासव ५३८९।८ और योगकिये रात्र्यर्द्धासव ५४२८। २० अथ बुधः॥ सायनबुधः ११। २८ २९। १९ स्पष्टगति ४६।३२ को ग्रहोदय प्राण १३२५ से गणके ६१६ ।४० खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध १५। ३५ को उक्त चक्रासुमें युक्तकिये बुधका स्वाहोरात्रासव २१६१५। ३५ स्पष्टगुरुक्रांति २८ ५। ४० इसकी क्रमज्या २८।४०।२३ उत्क्रमज्या १२। ५६ इसी-को हीनत्रिज्यामें किये दिनव्यासदल उत्तर द्युज्यासंज्ञकः३४२४।४ क्रांति-ज्या २८ ५। २३ को विषुवद्भासे ५। ४५ गुणके १६४०। ५७ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या १३६। ४५ को त्रिज्यासे गुणके ४७०१४६। ३० द्युज्याके ३४२५। ४ भागसे लब्ध चरज्या १३७। १६ इसका चाप वही चरासव उत्तर १३७। १६ को क्रांतिउत्तर के वशसे स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४०२।४३ युक्तकिये गुरुका दिनार्द्धासव ५५३९। ५९ और उक्त स्वाहोरात्रचतुर्भागमें हीनकिये गुरुका रात्र्यर्द्धासव ५२५६२७ अथ शुक्रः॥ सायनशुक्रः ११।१२। ३८। ५८ स्पष्टगतिः ६९।७ को ग्रहोदयप्राणों १३। २५ से गुणके ९१५७९। ३५ खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ५०।५२ को चक्रासुमें युक्तकिये चक्रके स्वाहोरात्रासव २१६५०।५२ शुक्रकी दक्षिण स्पष्टक्रांति ४५८। ४५ इसकी क्रम-ज्या ४५७। ३८ उत्क्रमज्या ३०। २६ इसीको त्रिज्यामें हीनकिये दिन व्यासदल दक्षिण. द्युज्यासंज्ञक ३४०७। ३४ क्रांतिज्या ४५७।३८ को विषुवद्भा ५।४५ से गुणके २६२१।३३ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या २१९। १७ को त्रिज्यासे गुणके ७५३८९६।६ फिर द्युज्याके ३४०७। ३४ भागसे लब्ध चरज्या२२१।१५ इसका चाप वही दक्षिणचरासव२२१। १५ को शनिकी दक्षिण क्रांतिवशसे स्वाहोरात्रचतुर्भाग ५४१२।४३ में हीनकिये दिनार्द्धासव ५१९८। २८ युक्तकिये रात्र्यर्द्धासव ५६६३। ५८ अथ शनिः॥सायनशनिः ११।२९। १। ४० स्पष्टगति ७।२० को

ग्रहोदयप्राणोंसे १३२५ गुणके ९७१६ । ४० खखाष्टैक १८०० भागसे लब्ध ५ । २४ को चक्रासुमें युक्तकिये शनिके स्वाहोरात्रासव २१६०५ । २४ शनिकी स्पष्ट दक्षिणक्रान्ति ११८ । १८ को विषुवद्भा ५ । ४५ से गुणके ६८० । १४ फिर १२ भागसे लब्ध कज्या ५६।४७ को त्रिज्यासे गुणके १९४८७१ । १८ द्युज्याके ३४३४ । १९ भागसे लब्ध चरज्या ५६।४४ इसीका चाप वही याम्य चरासव ५६।४६को क्रांतिके दक्षिणवशसे स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५४०१।२१हीन किये दिनार्द्धासव५३४४।३५और युक्तकिये रात्र्यर्द्धासव५४५८ । ७ इति दिनमानम् ॥

अथ अयनांश लानेकी विधिः— दिनगण ७१४४०४००७८७१ को युगायनांश भगणसे ६००गुणके४२८६४२४०४२२६०० कल्प भदिन १५७७९१७८२८के भागसे लब्ध भगण२७१६५०भगणशेष१०२६७ ४६४०० को१२गुणके१२३२०९५६८००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः७राशिशेष१२७५५३२००४ को३०गुणके ३८२६५९६०१२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश२४अंशशेष३९५९३२२४८को६०गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला१५कलाशेष८७१६७४६०को६०गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला३विकलाशेष४९६२९४११६एवं भगणादि अयनग्रह २७१६५० । ७ । २४ । १५ । ३ इसकी भुज १।२४। १५ । ३ को ३ गुणके फिर अंशकिये ५४ । १५ । ३ । इसको३ गुणके १६२ । ४५।९ भाग १० से लब्ध अयनांशाः१६ । १६।३१ अथ लंबज्या और अक्षांश लानेकी विधिः—त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ विषुवत्कर्ण १३ । १८ । १३ के भागसे लब्ध लंबज्या ३१०० इसका चापकिये वही दक्षिण लंबाशा ६४ । २४ । ५० फिर त्रिज्या३४। ३६ को विषुवत्प्रभा ५ । ४५ से गुणके १९७६८ । ३० विषुवत्कर्णके भागसे लब्ध अक्षज्या १४८५ । ३८ इसका चाप वही अक्षांशाः २५ । ३७ । १७ अथ विषुवत्प्रभा लानेकी विधिः—वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन

मध्याह्नकी छाया ३ । ५१ इसीको भुज समझके इससे त्रिज्याको गुणके १३२३६ । १८ स्वकर्ण १२ । ३६ । ९ के भागसे लब्ध १०५७ । १८ को चापकिये याम्यनत लिप्ता १०६७ । ४५ सायन तात्कालिक रवि ० । १९ । ३३ । २२ क्रांतिलिप्ता उत्तर ४९ । २१ याम्य नतलिप्ता और क्रांतिलिप्ताकी भिन्नजातिसे योगकिये अक्षांश लिप्ता १५३७३१७ इसकी ज्या १४८५ । २९ यही अक्षज्या कहलाती है. इसका वर्ग २२०६ ६० । ४५ को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ९६७३१८३।१५ इसका मूल लंबज्या ३१०० । ३० अक्षज्या १४८५ । ३८ को १२ गुणके १७८२७ । ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध विषुवत्प्रभा ५ । ४५ ॥

अथ छायार्कसाधनविधिः— स्वदेश अक्षलिप्ता १५३७ । १७ वैशाख वदि ३० भौमदिन मध्याह्ननतलिप्ता १०६७ । ४५ नताक्षेप की, समजातिके कारण अंतर किये शेषापक्रम ४६९ । ३२ इसकी ज्या४६९। १६ को त्रिज्यासे गुणके १६०९९००४८ परमापक्रमज्या १९७ के भागसे लब्ध ११५२ ।२४ को चाप किये मेषादिकारण से मध्याह्न स्पष्ट छायार्कः११७५४७ अथ मध्यमार्क लानेकी विधिः— स्पष्टरविः ० । ३ । १८ । ५२ मंदोच्च २ । १७ । १६।५२ मंदकेंद्र २ । १३ । ५८ ।१ भुजज्या ३३०३ । २२ परिधि १३।४० । ४९ भुजफल १२५ । ३१ को चाप करके मेषादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये मध्यम रवि ० १।१३।२० फिर मंदोच्च २ । १७ । १६।५२ मंदकेंद्र २ । १६ । २३। ३२ भुजज्या ३३३५ । १४ परिधि १३ । ४० । २६ भुजफल १२६ । ० चापरूप इसी को मेषादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये मध्यम रवि स्थिर ० । १ । १२ । ६॥

अथ मध्याह्न छाया और कर्णके लानेकी विधिः—वैशाख वदि ३० भौमदिन काशीकी याम्य अक्षलिप्ता १५३७ । १७ रविकी. उत्तर क्रांति ४६९ । २१ इन दोनोंके दिग्भेदसे अंतर किये नत लिप्ता दिनार्द्ध याम्य

१०६७ । ५६ यही भुजलिप्ताको चक्रलिप्ता ५४०० से हीनकिये कोटि- लिप्ता ४३३२ । ४१ भुजज्या १०५० । २८ कोटिज्या ३२७ । २९ भुजज्याको १२ गुणके १२६०५ । ३६ कोटिज्याके भागसे लब्ध इष्ट छाया ३ । ५१ त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ कोटिज्याके भागसे लब्ध इष्ट दिनमध्यकर्ण १२ । ३६ । २४ नत लिप्ताके दक्षिण कारणसे उत्तरा मध्यच्छाया समझलेनी ।

अथ इष्टदिनमें अर्काग्र लानेकी विधिः—मध्याह्न क्रांतिज्या ६६८ । ५ को विषुवत्कर्ण १३ । १८ । २३ से गुणके ६२२८ । ३१ कोटिज्या ३२७२ । २९ के भागसे लब्ध मध्याह्नकी अर्काग्रांगुल ५४ अथ उसी दिनकी इष्टाग्र लानेकी विधि इष्टछाया ९ को इष्टकर्ण १५ से गुणके मध्या- ग्रा २८ । ३० के मध्यकर्ण १२ । ३६ । २४ के भागसे लब्ध इष्टाग्रां- गुल २ । १५ उत्तर गोलके कारण यही विषुवच्छायामें हीनकिये शेष उत्तर भुज ३ । ३० इष्ट कालकी मध्याह्न छाया वही मध्यान्ह भुज ३ । ५१ अथ सममंडल कर्ण लानेकी विधिः—लंबज्या ३१०० । २८ को विषुवच्छाया ५ । ४५ से गुणके क्रांतिज्या ४६८ । ५ के भागसे लब्ध सम मंडल कर्ण ३८ । ५ अथ प्रकारांतरसे सममंडल कर्णके लानेकी विधिः—जब उत्तर क्रांति स्वदेशाक्षलिप्तासे स्वल्प रहै तब सम मंडल कर्ण का संभव समझना चाहिये वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन मध्याह्न कर्ण १२ । ३६ । २४ को विषुवच्छायासे गुणके ७२ । २९ । १८ मध्याग्रा १ । ५४ के भागसे लब्ध इष्टदिनका सम मंडल कर्ण ३८ । ८ अथ फिर अर्काग्रलानेकी विधिः—क्रांतिज्या ६३८ । ५ को त्रिज्यासे गुणके १६० ९२७० । २० लंबज्याके भागसे लब्ध मध्याह्नाग्रा १ । ५४ को इष्ट मध्य कर्ण १२ । ३६ । २४ से गुणके ६५४३ । १७ त्रिज्याके भागसे लब्ध मध्याह्नाग्रा १ । ५४ अथ अग्रज्यासे कोण शंकु छाया कर्ण साधनविधिः—त्रिज्यावर्गार्द्ध ५९०९९२२ को अग्रज्या वर्ग २६९३ ।

९५ । ३६ में हीनकिये ५६४०५२६ । २४ इसको १२ गुणके ६७६८ ६ । १६ । ४८ फिर १२ गुणे ८२२३३५८०१ । ३६ वर्गार्द्ध ७ । २ । ० को विषुवद्वर्ग ३ । ३ । ३ में मुक्त किये १० । ५ । ३ इसके भागसे लब्ध करणी ७७३१८९७। १२ विषुवच्छायाको १२ गुणके ६९ । ० फिर अग्रज्या ५१९ । २ से गुणके ३८८१३ । १८ पूर्वानीत शंकुवर्गार्द्ध संयुत ३२ विषुवद्वर्ग १०५ । ३ के भागसे लब्ध फल ३४० । ५५ इसका वर्ग ११६२२४ । १० में करणी युक्तकिये ७८४८१२१२२ फिर इसका मूल २८०१ । २७ उक्त फल ३४० । ५५ में उत्तरगोलके कारण युक्त किये आग्नेय कोणगत रवि शंकु ३१४२ । २२ इसका वर्ग ९८७४ ४६८ । १६ त्रिज्यावर्ग ११८१९८४४ इन दोनों वर्गोंका अंतर १९४ ५३७ । १२ के स्वशंकुके भागसे लब्ध वैशाख वदि ३० दिन अर्कांगुल शंकु छाया ५ । २० त्रिज्याको १२ गुणके ४१७५६ स्वशंकुके ३१४ २ । २२ भागसे लब्ध उसी दिनका कर्ण १३ । ८ अथ इष्टघटीकी छाया और कर्ण साधनकी विधिः—वैशाखवदि ३० दिन गत घटी १० सूर्य ० । ३ । १३ । २० सायन ० । १९ । २९ । ५१ भुजज्या ११४६ । ५१ क्रांतिज्या ४६६ । ० उत्तर क्रांतिकला ४६७१३ क्रांति क्रमज्या ४६६ । ० उत्क्रमज्या ३१ । ५० इसीसे हीन त्रिज्याको किये दिनव्यासदल उत्तर द्युज्या संज्ञक ३४०६ । १० क्रांति ४६६ । ० को विषुवद्भासे गुणके ३६७५ । ३० फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या २२३ । १८ त्रिज्यासे गुणके ७६७७०५ । २४ द्युज्या ३४०६ । १० के भागसे लब्ध चरज्या २२५ । २३ उत्तरमें त्रिज्यायुक्त किये अंत्याख्य ३६६३।२३

अथ तात्कालिक नत लानेकी विधि—रविको स्वाहोरात्रासव२१६४३। ८ इनका चतुर्थांश ५४१० । ४२ में चरासु २२५ । २३ युक्त किये दिनार्द्धासव ५६३ । १० इसीको इष्टघटिकासुमें ३६०० हीनकिये प्राङ्नतासव २० । ३६ । १० इसकी उक्त क्रमज्या ५८५ । ३० इसीसे हीन

किये ३०७७ । ५३ फिर द्युज्या ३४०६ । १० से गुणके १०४८३ त्रिज्याके भागसे लब्ध छेद ३०४९ । २३ को लम्बज्या ३१०० । २८ से गुणके ९५५४९११ । २३ त्रिज्याके भागसे लब्धशंकु ७०५० । ० इसका वर्ग ७५६२५० । ० इसको त्रिज्या वर्गमें ११८१९८४४ हीन-किये शेष ४२५७३४४ इसका पद वही द्युज्या २०६३। २० को १५ गुणके २४७६० । ० स्वशंकूके २७५० । ० भागसे लब्ध छाया ९०० । १३ त्रिज्याको १२ गुणके ४१२ शंकूके भागसे लब्ध करण १५।८ ।

अथ इष्ट छायासे घटी लानेकी विधिः–छायांगुल ९ । ० इससे त्रिज्याको गुणके ३०९४२०० इष्ट कर्णके १५ भागसे लब्ध दृग्ज्या २०६२ । ४८ इसका वर्ग ४२५५१४३ । ५० इसको त्रिज्या वर्गसे ११८१९८४४ हीन करके इसका मूल लेना वही शंकु २७५०। २४ कह-लाताहै इसको त्रिज्यासे गुणके ९४५५६०० । २३ लंबज्याके ३१००। २८ भागसे लब्ध छेद ३०४९ । ४४ को त्रिज्यासे गुणके १०४८३६ ७९८३ । ५६ द्युज्याके ३४०६ । १० भागसे लब्ध उन्नतज्या ३०७७ । ३९ इसीको अंत्या ३६३३ । २३ में हीनकिये शेष १८५ । १६ ३० इससे उत्क्रमज्याके खंडोंसे धनु साधितकिये जब नतासव २०३६।१० नतघटी ५ । ३९ । २ । १० दिनार्द्धमें हीनकिये दिनगत घटी १० । ०॥

अथेष्टाग्रासे छायार्कसाधनविधिः–इष्टाग्रा २ । १५ इससे लम्बज्या-को गुणके ६०७६ । ३ इष्ट कर्णांगुल १५ के भागसे लब्ध क्रांतिज्या ४६ ५। ४ कोटिज्यासे गुणके १५९८८९९१२ परमापक्रमज्या १३९७ के भागसे लब्ध ११४४ । ३१ इसका चाप ११६७ । २० इसका राश्यादि ० । १९ । २७ । २० यही स्पष्ट रवि है.

अथ प्रत्येक राशि तिनके स्वाहोरात्रार्द्ध लानेकी विधिः–एकराशि क्रांतिज्या ६९५३० इसका वर्ग ४८७९०२ । १५ को त्रिज्यावर्गमें ११ १९८४४ हीन किये शेष ११३३१९४१ । ४५ इसका मूल वही एकरा-

शिका स्वाहोरात्रार्द्ध ३३ । १८ हुवा राशिद्वयक्रांतिज्या १२१० । ५२ इसका वर्ग १४६४३०१ । ४० इसको त्रिज्यावर्ग से शोधके शेष १०३ ५४२५५ । २० का मूललिया वही राशिद्वयका स्वाहोरात्रार्द्ध ३२१८ । ० राशित्रय क्रांतिज्या १३९७ इसका वर्ग १९५१६०९ इसको त्रिज्या-वर्गमें हीनकिये ९८६८३५ इसका मूल वही रात्रि तृतीयको स्वाहोरात्रार्द्ध ३३६६ के भागसे लब्ध १६४ इसका चाप १६७० एकराशि द्विराशि-ज्या २९७८ त्रिभद्युकर्णार्द्ध ३१४१ से गुणके ९३५७९८ स्वाहोरात्रार्द्ध-के भागसे लब्ध २९०६ । ४४ इसका चाप राशिद्वयात्मक ३४६५१५ त्रिज्या ३४३८ को त्रिमधुक वर्गार्द्ध ३१४१ से गुणके १७९६०५८ स्वाहोरात्रार्द्ध के ३१४१ भागसे लब्ध ३४३८ इसका चाप ५४०० राशित्रयात्मक हुवा. एक राशिचाप लंकामेषासव १६७० एकराशिचाप ३४६५ हीनकिये वृषासव १७९५ एवं द्विराशिचाप ५४०० से हीनकिये शेष लंकामिथनासव १९३५ इनको विलोम कर्कादि तीनके जान लेना चाहिये. और एवं आगे तुलादि राशियोंके विलोम क्रमसे यही असु जान लेना अथ स्वदेशी लग्न करनेकी विधिः—इसके पहले चरखंडके लानेकी विधि.एकराशि क्रांति कला७०४इसकी क्रमज्या ६९० । ३० उत्क्रमज्या७२।३४इसको हीन त्रिज्यामें किये दिन व्यासदल ३६६५ । २६ क्रांतिज्या ६९० । ३० को विषुवद्भासे गुणके३९७०।२२ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ३३०५२ इसको त्रिज्यासे गुणके १३३७ ५११९ । ३६ द्युज्याके भागसे लब्ध चरज्या ३३८ इसका धनु३३८।३० द्विराशि क्रांतिकला १२३७ । ३७ क्रांतिक्रमज्या १२१०५ उत्क्रमज्या २२१ । ३१ इसको हीन त्रिज्यामें किये दिनव्यासदल ३२१६ । २९ कुज्या ५७ । ५० चरज्या ६१९ । ४५ इसका धनु ४२३ । २ द्विराशि चर यह हुवा तृतीय राशिकी क्रांतिकलाः १४४० इसका क्रमज्या१३९७ उत्क्रमज्या २९८११२ दिनव्यास दल ३१३९४८ कुज्या ६६९ । २४

चरज्या ७३२ । ५८ इसका चाप वही त्रिराशिचर ७३८४० हुवा एक-राशिचाप प्रथम खंड३३८ । ३० को द्विराशिचापमें हीनकिये द्वितीय खंड ८४ । ३३ फिर द्विराशिचापको त्रिराशिचापमें हीनकिये शेष तृतीय खंड ११५ । ३७ लंका मेषासव १६७० में प्रथमखंड ३३८ । ३० हीनकिये स्वदेशी मेषासव १३३१ । ३० लंकावृषासु १७९५ में द्वितीय चरखंड २८४ । ३३ हीनकिये स्वदेशी वृषासव १५११० । २३ और लंकामिथुनासव १९३५ में तृतीयखंड ११५ । ३७ हीनकिये स्वदेशमिथुनासव १८१९ । २३ एवं लंकाकर्कटासव १९३५ में तृतीय खंड यक्त किये स्वदेशी कर्कटासव २०५० । ३७ लंका सिंहासव १७९५ में द्वितीय चरखंडमें युक्तकिये स्वदेशी सिंहासव २०७९ । ३७ लंका कन्यासवमें १६७०प्रथम खंड युक्तकिये स्वदेशी कन्यासव २००८ । ३० इसको विलोम क्रमसे तुलादि छः राशियोंके स्वदेशी आसव जान लेना.अथ इष्टकालसे लग्नसाधन विधिः-इष्टघटी १० तत्कालरविः ० । ३ । १३ । २० सायन ० । २९ । २९ । ५१ मेष भोग्यांशा १० । ३० । ९ को स्वदेश मेषासुसे १३३१ गुणके १३९७९ फिर ३० भागसे लब्ध मेष भोग्यासव ४६६ को इष्टघटी कासव ३६०० में हीनकिये शेष ३१३४ को वृषासुम हीनकिये शेष१६२४ को ३० गुणके ४८७२ अशुद्धमिथुनासु १८१९ के भागसे लब्ध अंशादि २६ । ४७ । २ इसके मिथुन अशुद्धयुक्त २ । २६। ४७। २ करके फिर अयनांश हीन किये लग्न २ । १० । ३० । ३१ ।

अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः-पूर्वनत घटी५।३९ । १ तत्काल सायन रवि ०। १९ । २९ । ५१ रवि मेषके भुक्तांशा १९ । २९ । ५१ को लंका मेषासु १६७० से गुणके ३२५६१ फिर ३० के भागसे लब्ध १०८५ मेष भुक्तासव को नतासवमें २०३४ हीनकिये शेष९४९को ३०गुणके २८४७० फिर विलोम अशुद्धलंकामीनासुके१६७० भागसे लब्ध अंशादि १७ । २ । ५२ अशुद्धलंका मीनात्र भागादि सायन रविमें हीनकिये मध्य

लग्न सायन १ । १२ । ५७ । ८ इसमें अयनांश १६ । १६ । ३१ हीन-किये मध्यलग्न ० । २६ । ४० । ३७ हुवा.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते त्रिषष्ठकथनं नाम दशमविनोदः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ चंद्रग्रहण लानेकी विधिः-संवत् १६४१ शक १५०६ कार्तिक शुदि १५ शनिदिन सृष्टचब्द १९५५८८४६८५ युगाद्यहर्गण ७११४६० मध्यमरविः ७ । ९ । ३० । २२ मध्यमचंद्र १ । ९ । २८ । ६ चंद्रोच्च ५ । ५ । ४९ । ३६ पात ७ । ७ । ३ । ३९ स्पष्टरवि ७ । ८ । ९ । २६ गति ६० । ५४ चंद्रस्पष्ट ५ । १२ । ४७ । ० गति ८२७ । २० मिश्रप्रमाण४ ३ । २४इष्टघटी ५७ । १४ व्यास अथ चंद्रबिंब लानेकी विधिः— चंद्रमंडल मध्य व्यास ४८० को स्पष्टगति ८२७ । २० से गुणके ३९७ १२ मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रमंडलव्यास ५०२ । १९ के १५ भागसे चंद्रमानलिप्ता ३३ । २९ अथ तमोमान लानेकी विधिः— भूव्यास १६०० को स्पष्टचंद्र गति ८२७ । २० से गुणके १३२२७३३ । २० मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध सूची १६ ७४ । २२ रवि मध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ६० । ५४ से गुणके ३८५८५० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध रविमंडल स्पष्ट व्यास ६६ ९४ । ११ महाव्यास १६०० इन दोनोंका अंतर ५०९४ । ११ को मध्येंदुव्याससे ४८० गुणके २४४५२०८ मध्यार्क व्यास ६५०० के भागसे लब्ध ३७ । १ को पूर्वोक्त सूची १६७४ । २२ में हीनकिये शेष १२९८ । ११ के १५ भागसे लब्ध तमोमान लिप्ता ८६ । ३३ मान योगार्द्ध ६१ । १ अथ समलिप्ति करनेकी विधिः— रविफल १४ । २ धन चंद्र फल धन ३ । १० । ४५ पातफल ऋण ० । ४४ पर्वांतरविः ७ । ८ । २३ । २८ पर्वांतचंद्र १ । ८ । २३ । २८ पर्वांत पात ७ । ७ । २ । ५५

अथ पर्वांत विक्षेप (शर) और ग्रास लानेकी विधिः—पर्वांत चन्द्र १।८।२३। २८ पर्वांतपात ७। ७। २। ५५ चंद्रोनपात केंद्र ५। २८। ३९। २७ भुज ०। १। २०।२३ भुजज्या ८०। ३३ को चंद्रविक्षेप मध्यम २७० से गुणके २१४८३३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप ६। १९ चंद्रोनपात केंद्रके मेषादिवशसे उत्तर (शर) विक्षेप यह समझना चाहिये. इसको मानयोगार्द्ध ६०। १ में हीनकिये शेषग्रास २०। १३ अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधिः— मानयोगार्द्ध ६०। १ का वग ३६०। २ में शरवर्ग ३९। ५४ हीन किये शेष ३५६। ६ मूल ५९। ४२ को ६० गुणके ३५८१ व्यकदुगातिके ७६६। २६ भागसे लब्ध स्थित्यर्द्ध ४। ४० अथ मर्दार्द्ध लानेकी विधिः—मानांतरार्द्ध २६। ३२ का वर्ग ७०४। १ में विक्षेपवर्ग ३९।५४ हीन किये शेष ६६४। ७ का मूल २५। ४६ को ६० गणके १५४६ रवींदु भुक्त्यंतरके ७६६। २६ भागसे लब्ध मर्दार्द्ध २। १ अथ स्थित्यर्द्ध स्थिरकरनेकी विधिः— अर्ध रात्रिके ऊपर इष्टघटी १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४। ४०हीनकिये ९।१० तत्काल चंद्र १। ७। १९।७ पात ७। ७। ३। १० चंद्रोनपातकेंद्र ५। २९। ४४।३ भुज०। १५। ५७ भुजज्या १५।५७ को चंद्रविक्षेप २७० से गुणके ४३०६। ३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप दक्षिण१।१५ इसका वर्ग१।३४ को मानयोगार्द्ध वर्गसे हीन किये३६००२६पीछे इसका ६०। को मूल। ६० गुणके ३६०० भुक्त्यंतरके ७६६। २६ भागसे लब्धस्थितिदल ४। ४२ पर्वांत १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४। ४२ हीनकिये ९। ८ तत्काल चंद्र १। ७। १८। ४० पात ७। ७।३। १० चंद्रोनपातकेंद्र ५। २९। ४४।३० भज ०।०। १५। ३० भुजज्या १५। ३० विक्षेप १। १३ वर्ग १।२९ को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६०२ हीन किये शेष ३६००। ३१ मल ६० को ६० गुणके ३६० भुक्त्यंतर के भागसे लब्ध स्थितिदल यह ४। ४२ स्थिरहुवा अथ मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर

करनेकी विधिः—अर्द्धरात्रिसे ऊपर इष्टघटी १३ । ५० को स्थितिदल ४। ४० में युक्तकिये १८ । ३० तत्काल चंद्रः १।९।२७ । ४९ पात ७। ७। २। ४० चंद्रोनपातकेंद्र ५ । २७ । ३४ । ५१ भुज ० । २५।९ भुजज्या १४५।९ को चंद्रमध्य विक्षेप २७० से गुणके १९० । ३० त्रिज्याके भागसे लब्ध ११ । २४ स्पष्ट विक्षेप इसका वर्ग १२९ । ५७ को मानयोगार्द्ध ३६०२ में हीन किये शेष ३४७.२ । ३ का मूल ५८ । ५५ को ६० गुणके ३५३५ रवींदुस्पष्ट भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध स्थिति दल४।३७फिर स्थितिदलको स्थिर करते हैं पर्वांत १३।५० स्थित्यर्द्ध ४ । ३७ में युक्तकिये १८ । २७ तत्कालचंद्र १।९।२७। ८पात७।७।२।४९ केंद्र ५। २७ । ३३ । ३२ भुज० । २ । २४ । २८ भुजज्या १४४ । २८ ऐसे उक्त पूर्ववत् याम्यविक्षेप ११ । २० इसका वर्ग १२८ । २७ को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६० । २ हीनकिये शेष ३४७२। ३३ का मूल ५८ । ५६ को ६० गुणके ३५३६ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर ४ । ३७ हुवा ॥

अथ स्पार्शिकमर्दार्द्ध स्थिर करनेकी विधिः—पर्वांत१३।५० में विमर्दार्द्ध २ । १ हीन किये शेष ११ । ४९ तत्काल चन्द्र १ । ७ । ५५ । ४० पात ७ । ७ । २ । २१ चन्द्रोनपातकेंद्र ५ । २९ । ७ । २१ भुज ० । ०।५२ । ३९ भुजज्या ५२ । ३९ पूर्वकी तुल्य याम्य विक्षेप ४ । ८ इसका वर्ग १७ । ५ मानपातार्द्धवर्ग ७०४ । १ इन दोनोंका अंतर ६८६ । ५६ का मूल २६ । १३ को ६० गुणके १५७३ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध मर्दार्द्ध २ । ३ स्थिर हुवा. अथ मौक्षिकस्थित्यर्द्धमर्दार्द्ध स्थिर लानेकी विधिः—पर्वांत १३ । ५० को मर्दार्द्ध २। १ में युक्त किये १५ । ५१ तत्काल चन्द्र १ । ८ । ५१ । १६ पात ७ ।७ । २ । ४९ केंद्र ५ । २८ । ११ । ३३ भुज ० । १ । ४८ । २७ भुजज्या १०८ । २७ पूर्वतुल्य स्पष्ट दक्षिण विक्षेप ८ । ३१ इसका वर्ग ७२ । ३२

मानांतरार्द्धवर्गमें ७१ । १ हीन किये शेष ६३१ । २९ इसका मूल २५ । ८ को ६० गुणके १५०८ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध स्पष्ट मर्दार्द्ध १।५८ यह स्थिर हुवा. सूर्योदयसे इष्टघटी ५७ । १४ मध्यकालमें स्पर्शस्थित्यर्द्ध ४ । ४२ हीन किये स्पर्शकालः ५२ । ३२ और मोक्ष स्थित्यर्द्ध४।३७ युक्त किये मोक्षकाल ६१ । ५१ अथेष्टस्पर्शग्रास लानेकी विधिः—स्पर्शेष्ट नाडी २ को स्पर्शस्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ४२ को रवींदुभुक्त्यं-तरसे गुणके २०६९ । २२ फ़िर ६० के भागसे कोटि लिप्ता ३४ । २९ तत्कालचन्द्रः १ । ७ । ४६ । १५ पात ७ । ७ । ३ । ४ केंद्र ५ । २९ । १६ । ४९ भुज० । ० । ४३ । ११ भुजज्या ४३११ स्पष्ट याम्य विक्षेप ३ । २३ इसीको भुज समझके इसका वर्ग ११ । २७ कोटि लिप्ता वर्ग ११९९ । ६ इन दोनोंका योग १२०० । ३३ इसका मूल कर्ण ३४ । ३९ इसको मानयोगार्द्ध ६० । १ में हीनकिये शेष स्पर्श इष्टग्रास २५ । २२ अथ मोक्षेष्टग्रास लानेकी विधिः—मोक्षेष्ट नाडीको मोक्ष स्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ३७ को भुक्त्यंतरसे गुणके २००५ । ३० फिर ६० भागसे लब्ध कोटिलिप्ता ३३ । २५ तत्काल चन्द्र १ । ८ । ५१ । ३ पात ७ । ७ । २ । ४८ केंद्र ५ । २८ । ११ । ४५ भुज० । १ । ४८ । १५ भुजज्या १०८ । १५ पूर्वतुल्य याम्य विक्षेप ८ । ३० इसका वर्ग ७२ । १५ कोटि वर्ग १११६ । ४० इन दोनोंका योग ११८८ । ५५ इसका मूलकर्ण ३४ । २९ इसको मानयोगार्द्धमें हीन किये शेष मोक्ष ग्रासः २५ । २२ अथ इष्ट ग्राससे इष्ट घटीके ला-नेकी विधिः—स्पर्श इष्टग्रास २५ । २२ इसको मानयोगार्द्धमें हीन किये शेष ३४ । ३९ का वर्ग १२०० । २३ में तत्काल विक्षेप वर्ग ११ । २७ हीन किये शेष ११८९ । ६ इसका मूल वही कोटिलिप्ता ३४ । २९ को ६० गुणके २०६९ । २२ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध २ । ४२ को स्थि-त्यर्द्धमें हीन किये स्पार्शिक इष्टकाल २ । ० अथ मोक्षग्राससे मोक्ष इष्ट

कालसाधन विधिः—मोक्ष इष्टग्रास २५। ३२ को मानयोगार्द्धसे हीन-किये शेष ३४। २९ इसका वर्ग ११८८। २९ तत्कालीनशर वर्ग ७२। १५ दोनोंका अंतर १११६। ४० इसका मूल ३३। २५ को ६० गुणके २००५। ३० भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध मोक्ष इष्टनाडी २। ३७ अथ स्पर्शकालीन वलन लानेकी विधिः—स्पर्शकाल २५। ४४ पश्चिम नत ९। ८ नतासव ३२८८ इसकी ज्या २८०८। २० को अक्षज्या १४८६ से गुणके ४१७३१८३। ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १·२१३। ५० इसका धनु यहां नतके उत्तर कपाली होनेके कारण याम्यनत लिप्तां १२। ४१। ३६ स्पार्शिक चन्द्र १। ७। १८। ४० सत्रिभसायन ४। २३। ३५। ११ भुज १६। २४। ४९ भुजज्या २०४०। ० क्रांतिज्या ८२८। ५६ इसका धनु यहा सायन सत्रिभके भुजमेषादि होनेके कारण उत्तरक्रांतिलिप्ता. ८३७। १६ नतलिप्ता और क्रांति लिप्ताके भिन्न जातिके कारण अंतर किये शेष याम्य ४०४। २० इसकी ज्या वही वलनज्या ४०३। ३३ इसके ७० के भागसे लब्ध स्पार्शिक याम्यवलनांगुल ५। ४६ अथ मध्य वलन लानेकी विधिः—मध्यकाल ३०। २६ अपरनत १३। ५० नतासव ४९८० इसकी ज्या ३४११। ५६ को अक्षज्यासे गुणके ५०७०१३२। ५६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४७ ४२। ४४ का धनु यहां नत अपर कपाली होनेके कारण याम्यनतलिप्ता १५२५। १९ मध्यकालिक चंद्र १। ८। २३। २८ सत्रिभ सायन ४। २४। ३९। ५९ भुज १। ५। २०। १ भुजज्याका धनु किये उत्तर क्रांतिलिप्ता ७९३। ३८ यहां नतलिप्ता और क्रांतिलिप्ताके भिन्न जातिके कारण अंतर किये शेष याम्य १३५५। २० इसकी ज्या किये वही याम्य वलनज्या १३९९। ५१ को ७० के भागसे लब्ध मोक्षवलनांगुल दक्षिण १९। ५८ हुवा. अथ विक्षेपादिमान लिप्ताओंके अंगुल करनेकी विधि—मध्यकाल परनत १३। ५० को रात्र्यर्द्ध १६। ३६ में हीन किये

शेष उन्नत २ । ४६ को और रात्र्यर्द्धमान १६। ३६ को रात्रिमान ३३। १२ में युक्त किये ५२ । ३४ इसके रात्र्यर्द्ध १६ । ३६ के भागसे लब्ध छेद् ३ । १० स्पर्शविक्षेप. लिप्ताके ११३ छेदके भागसे लब्ध स्पर्श याम्य विक्षेप अंगुल ० । २३ मध्य काल विक्षेप लिप्ताके छेदके भागसे लब्ध मध्ययाम्य. विक्षेप अंगुल २ । ० मोक्षविक्षेप लिप्ताके ११ । २० छेदके भागसे लब्ध मोक्षयाम्यविक्षेप अंगुल ३ । ४५ चंद्रबिंबलिप्ता ३३ । २९ के छेदके भागसे लब्ध चंद्रबिंम्बांगुल १० । ३४ तमोमानलिप्ता ८६ । ३३ के छेदके भागसे तमोमानांगुल २७ । १९ मानार्द्धलिप्ता ६०। १ के छेदके भागसे मानयोगार्द्ध अंगुल १८ । ५७ ग्रास लिप्ताके ५३ । ४२ छेदके भागसे लब्ध ग्रासांगुल १६।५७ खग्रास लिप्ताके २० । १३ छेदके भागसे लब्ध खग्रासांगुल ६ । २३ स्पर्शेष्ट ग्रासलिप्ताके २५ । २५ छेदके भागसे लब्ध स्पर्शेष्टग्रासांगुल ८ । ० मोक्षेष्टग्रास लिप्ताके २५ । ३२ छेदके भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ८ । ३ हुवा

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते चंद्रग्रहणसाधन-
विधिर्नाम एकादशविनोदः ॥ ११ ॥

अथ सूर्यग्रहणके साधनकी विधिः—संवत् १९३९ शके १८०४ आषाढवदि ३० बुधदिन इष्ट १३ । १९ सृष्टयब्द १९५५८४६८३ कलिगताब्द ४९८३ सृष्ट्याद्यहर्गण ७१४४०४००७२१६ कलियुगण १७१०५८९ प्रातः स्पष्टरविः २ । २० । ९ । ३२ प्रातः स्पष्टचंद्रः २ । १७ । २२ । १६ रविगति ५६ । ५० चंद्रगति ८१० । २६ अमांत १३ । १९ तात्कालिक रविः २ । २०।२२।९ तत्कालचंद्रः २।२० । २२ । ९ पात ८ । २३ । १४ । ० अथ रविमंडल लानेकी विधिः—रवि-मंडल परममध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ५६ । ५० से गुणके ३६९ ४१६ । ४० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध स्पष्ट रविव्यास ६२४

७ । ११ को रविभगण ४३२०००० से गुणके २६९९७८३२०००
चंद्रभगण ५७७५३३३६ के भागसे लब्ध चंद्रकक्षापे रविमंडल मध्यव्यास
४६७ । २८ स्पष्ट इसके १५ भागसे लब्ध रवि मानलिप्ता ३१ । ९ ॥

अथ चंद्रमंडलसाधनविधिः—चंद्रमंडलमध्यव्यास ४८० को स्पष्ट गति ८१० । २६ से गुणके ३८९००८ । ० मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रव्यास ४९२ । ३ फिर १५ भागसे लब्ध चंद्रमान लिप्ता ३२ । ४८ मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ ॥

अथ पर्वांतलंबन लानेकी विधिः—पर्वांतकाल १३।९ तत्कालरविः२ । २० । २२ । ९ सायन ३ । ६ । ३६ । ४० कर्कके भोग्यपल २६६ को इष्टघटी पलोंमें हीन किये शेष५३३ में फिर सिंहमान हीन किये शेष१८८ को ३० गुणके अशुद्ध कन्यामानके भागसे लब्ध अंशादि १६ । ५०।९ भुक्तराशियुक्त किये पर्वांतलग्न ५ । १६ । ५०।९ इसकी ज्या ७८२ । ४७ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके १०९४८ । १९ लंबज्या ३१०० के भागसे लब्ध उदयज्या ३५२ । ४५ अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः—प्राक्त३ । ३९ तत्काल सायन रवि ३ । ६ । २६ । ४० कर्ककी भुक्तपल ७१ भोग्यपलों २१९ में हीनकिये शेष १४८ को ३० गुणके ४४४० अशुद्ध लंका मिथुनमानके भागसे लब्ध अंशादि १३ । ४४ । ४५ तीन राशिमें हीन किये शेष मध्य लग्न२ । १६ । १५। १५ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १३९५ । २५ स्वदेशाक्षलिप्ता याम्य १५,३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण अंतरकिये शेषयाम्य नतलिप्ता १४१ ५२ इसकी ज्या वही मध्ययाम्यज्या ४१ । ५२ इसकी उदयज्यामान ३५ २ । ४५ से गुणके ५००४३ । २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४ । १३ इसका वर्ग २०२ मध्यज्या वर्ग २००२६ । ९ इन दोनोंका अंतर १९९ २४ । ३ इसका मूल दृक्क्षेप १४१ । ७ इसका वर्ग १९९२४ । ३ त्रिज्या वर्ग ११८१९८४४ इन दोनोंका अंतर १७९९१९ । ५७ इसका मूल

दृग्गतिः ३४३५ । ५ एकराशिज्या १७७९ इसका वर्ग २९५४९६१ इसके दृग्गतिके ३४३३ । ३५ भागसे लब्धछेद ८६० । ३६ मध्य लग्न २ । १६ । १५ । १४ सूर्यः ३ । ६ । ३६ । ४० इन दोनोंका अंतर ० । २० । २१ । २५ ज्या ११९५ के छेदके ८६० । ३६ भागसे लब्ध प्रथमपर्वांतलंबन १ । २३ मध्य लग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण पर्वांत १३ । १९ में हीन किये शेष ११ । ५६ इससे फिर लंबन लानेकी विधि तत्काल रविः २ । २० । २० । ५० सायन ३ । ६ । ३५ । २१ सायन लग्न ५ । ९ । १८ । ४८ इसकी ज्या १२१३ । २७ को परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके १६९५१८९ । ३९ लंबज्या ३१०० के भागसे लब्ध उदयज्या ५४६ । ५० तत्काल प्राङ्नत ५ । २ सायन सूर्य ३ । ६ । ३५ । २१ सायन मध्यलग्न २ । ८ । ३२ । ४२ उत्तरक्रांति १३३३ । ४८ स्वदेशाक्षलिप्ता १४३७ । १७ इन दोनोंकी भिन्न जातिके कारण अंतरकिये याम्य नतलिप्ता २०३ । २९ इसकी ज्या किये याम्य मध्यज्या २०३ । २९ इसको उदयज्या ५४६ । ५० से गुणके १११२ ७१ । २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२ । २२ इसका वर्ग १०४७ । ३६ मध्यज्या वर्ग४१४०५।२८दोनोंका अंतर४०३५७।५२इसका मूल विक्षेप २००५३इसका वर्ग४०३५७।५२त्रिज्या वर्ग११८१९४४ इन दोनोंका अन्तर११७७९४८६।८इसका मूल दृग्गति ३४३२।७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ इसके दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद८६०।५८मध्य लग्न और रविका अंतर ० । २८ । २ । ३९ इसकी ज्या १६१५ । १० के छेदके भागसे लब्ध लंबन १ । ५२ को पर्वांत १३।१९ में हीन किये शेष ११ । २७ तत्कालरविः २ । २० । २० । १३ तत्काल सायन लग्न ५ । ६ । ४२ । ५९ ज्या १३५७ । ५० को परमापक्रमज्यासे १८९८३ । १० गुणके लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ६११५४ प्राङ्नत ५ । ३१ सायन सूर्य ३ । ६ । ३४ । ५४ सायन मध्य लग्न २ । ५ । ५१ । ५ मध्यलग्नो-

त्तरक्रांति १३० । ६ । २४ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ दोनोंके दिग्भे-दके कारण अंतर किये शेष याम्य नतलिप्ताको ज्याकिये दक्षिणमध्यज्या २३० । ५१ उदयज्या ६११ । ५४ से गुणके १४१२५७। ७ त्रिज्या के भागसे लब्ध ४ । १५ इसका वर्ग १६८७ । ५० मध्यज्या वर्ग५३२९१ । ४३ दोनोंका अंतर ५१६०३ । ५३ त्रिज्या वर्ग ११८१९८४४ दोनोंका अंतर ११७६४२४० । ० इसका मूल दृग्गति ३४३०। २९ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद८६१ । २३ मध्यलग्नार्क अंतर १ । १ । ५६ । ३ इसकी ज्या १८। ७। ३१ छेदके भागसे लब्ध लंबन २ । ६ पर्वांत १३ । १९ में हीनकियें शेष ११ । १३ तत्कालरवि २। २० । २०। १० सायन ३ । ६ । ३४ । ४१ सायन उदयलग्न ५ । ५ । २७ । ४५ इसकी ज्या १४२६। २३को अंत्यापक्रमज्यासे गुणके १९९२६९५७ । ३१ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ६४२ । ४७ प्राक्त ५।४५सायन मध्य लग्न २।४।३३।४ मध्य लग्नोत्तरक्रांति १२९२।२२ याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिसे अंतरकिये याम्यनतलिप्ता २४४ । ५५ इसकी ज्या वही मध्यज्या दक्षिणा २४४। ४९ को उदयज्यासे गुणके १५७३६४ । ४ त्रिज्याके भागसे लब्ध ४५ । ४७ इसका वर्ग २०९७ मध्यज्यावर्ग ५९९३५।१२ इन दोनोंका अंतर ५७८३९ । ५ इसका मूल स्थिरस्पष्ट दृक्क्षेप २४० । ३० इसका वर्ग ५७८३९ । ५ इसको त्रिज्या वर्गसे हीन किये शेष ११७६२००४ । ५ इसका मूलदृग्गति ३४२९ । ३४ एक राशिज्यावर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६१।३७ मध्य लग्नार्कांतर १ । २ । १ । ३७ इसकी ज्या १८२२। १४ छेदके भागसे लब्ध लंबन-स्थिर २ । ६ हुवा ॥

अथ अवनति लानेकी विधिः—पर्वांतस्थिर दृक्क्षेप २४० । ३० मध्य-

भुक्त्यंतर ७६१ । २७ से गुणके २०५९१३ । १४ फिर १५ गुणके त्रिज्याके ५१५७० भागसे लब्ध याम्य अवनति ३ । २५ ॥

अथ चन्द्रविक्षेप लानेकी विधिः—स्थिर लंबन संस्कृतपर्वांत ११।१३ तत्कालचन्द्रः २ । १९ । ५३ । ४७ पात ८ । २३ । १४ ।७ चन्द्रोनपात केंद्र ६ । ३ । २० । २० भुज ० । ३ । २० । २० भुजज्या२०० । २० को चंद्रविक्षेप २१० से गुणके ५४०९० त्रिज्याके भागसे लब्ध चंद्रविक्षेप सौम्य १५ । ४४ याम्यावनति ३ । २५ शर और अवनतिके दिग्भेदसे अंतर किये स्पष्ट अवनति लिप्ता १२ । १९ इसको मानयोगार्द्ध ३१।५८ म हीन किये शेष ग्रासलिप्ता १९। ३९ ॥

अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधिः—मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ इसका वर्ग १०२१ । ५२ में विक्षेप वर्ग १५१ । ४२ हीन किये ८७० ।१० इसका मूल २९।३० को ६० गुणके १७७० रवींदुभुक्त्यंतरके ७५३।३६भागसे लब्ध स्थित्यर्द्ध २। २१॥अथ स्पार्शिक लंबन लानेकी विधिः—गणितागततिथ्यन्त ३६ । १९ में स्थित्यर्द्ध २ । २१ हीनकिये शेष १०। ५८ रवि २।२०।१९।५५ सायन ३ । ६ । २६। ३४ सायन उदय लग्नकी भुजज्या१४९९। ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९५२२० ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध उदय भुजज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके२०९५२२०३६ लंबज्या के भागसे लब्ध उदयभुजज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९ ५२२०३६ लंबज्या के भागसे लब्ध उदयज्या ६७५७ प्राङ्नत ६ । ० सायन सूर्य ३। ६ । ३४ । २६ मध्य लग्न २ ।३ । ९ । २९ इसकी ज्या ३०६७ । १६ को परमापक्रमज्यासे गुणके ४२८४९७२३२ त्रिज्याके भागसे लब्ध क्रांतिज्या २२३६ । ३१ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अन्तरकिये शेष याम्यनत लिप्ता को पूर्वोक्त क्रमसे वर्ग २६२६३४ मध्यज्यावर्ग ६११७७ दोनोंका अंतर ६५३२० ३३ इसका मूल दृक्क्षेप २५ । ३२ वर्ग ६५३२०३३ त्रिज्यावर्ग२१८१

९८४४ वर्गांतर ११७५४५२३३७ इसका मूल दृग्गति ३४२८२९ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६१। ५३ मध्य लग्नार्कांतर १। ३। २४। ५७ इसकी ज्या १८२९। ५८ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्पार्शिक प्रथम लंबन २। १२ मध्य लग्नसे भानु अधिक होनेके कारण स्थित्यून तिथ्यंत १०। ५८ में हीनकिये शेष ८। ४६ तत्काल रविः २। २०। २७। ५० सायन ३। ६। ३२। २१ सायन उदय लग्न ४। २२। १८। ० इसकी ज्या २०९१५६ को परमापक्रमज्यासे गुणे२९२२४३० इसकी ज्या वही मध्यज्या याम्य. २६०४० को उदयज्या से ८७५। ५० गुणके १७६१०५। ५५ त्रिज्याके भागसे लब्ध क्रांतिज्या ८१२ ॥

अथ मध्य लग्न लानेकी विधिः—प्राक्त ८। १२ सायनरवि ३। ६। ३२। २१ सायनमध्यज्या ४४७। ६ को उदयज्यासे गुणके ४२१४८ ८। ३७ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२२। ३६ इसका वर्ग १५०३०।४६ मध्यज्या वर्ग १९९८९। २५दोनोंका अंतर १८६६७।३९ इसका मूल ४२९१९५८ इसका वर्ग १८४८६७। २१ इसका मूल दृग्गति ३४।११। ० एक राशिज्या वर्ग२९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६६१८मध्यलग्न १।२०।३१ रवि४। ६। ३२। २१ दोनोंका अंतर १। १६। २८। २०। इसकी ज्या २४९१। २७ के छेदके भागसे लब्ध स्पार्शिक द्वितीय लंबन २। ५२ को स्थित्यून पर्वांतमें हीन किये शेष ८। ६ तत्काल रविः २। २०। १७। १३ सायन ३। ६। ३१। ४४ सायन उदय लग्न ४। १९। २। ३६ इसकी ज्या २२५२३ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२४७९७६। ३२ लंबज्या-के भागसे लब्ध उदयज्या १०१५२७ प्राक्त ६। ५२ सायन सूर्य ३। ६। ३१। ४४ सायनमध्य लग्न १। १६। २३ मध्यलग्नांतर क्रांति १०२०४८ याम्य नतलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके

कारण अंतर किये शेषयाम्यनत लिप्ता ५१६ । २९ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५१४ । ३८ को उदयज्यासे गुणके ५२२५८४ । २५ त्रि-ज्याके भागसे लब्ध १५२ । ० इसका वर्ग २३१०४ मध्यज्या वर्ग २६४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७४३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१४ इसका वर्ग २३२४४ मध्यज्या वर्ग ३६४८४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७१३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१ । ४० इसका वर्ग २४२७४३ । २८ को त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५७८१००३२ इसका मूल दृग्गति ३४०२४०३१४४ इन दोनोंका अंतर १३१२८३१ इसकी ज्या २६५०४७ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिक स्पार्शिक तृतीय लंबन ३ । ३ को स्थित्यून पर्वांत में हीनकिये शेष ७ । ५७ तत्काल रविः २ । २० । २७ । १ सायन ३ । ६ । ३१ । ३३ सायन उदय लग्न ४ । १८ । ५ । १३ इसकी ज्या २२९५५९ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२०७४८८ । ४३ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३४ । ४० प्राङ्नत ९ । ५६ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १००१२६ याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १७ यहां क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष नतयाम्य लिप्ता ५३५५१ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३३ । ४२ को उदयज्यासे गुणके ५५२२०२ । ३६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६०३७ इसका वर्ग २५७९७ । ४३ मध्यज्या वर्ग २८४८३५ । ४१ दोनोंका अंतर २५९०३७ । ५८ इसका मूल दृक्क्षेप ५०८ । ५० इसका वर्ग २५९०३७५८ त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५६०८०६ । २ इसका मूल दृग्गति ३४००७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९५ मध्यलग्न और रविका अंतर २१३४३३ इसकी ज्या २६९२४५ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक चतुर्थ लंबन ३ । ६ को स्थित्यूनपर्वांतमें हीन किये शेष ७ । ५२ तत्काल रवि २ । २० । १७ । ० सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन उदय लग्न ४ । १७ । ४९ । ३४

इसकी ज्या२३०७ । २४ को परमापक्रमज्यासे गुणके३२२३४३७४८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३९ । ४९ प्राक्नत ९ । ६ सायन रविः ३ । ६ । ३१ । ३१ कर्क भुक्त पल ७० सायन मध्यलग्न १ । १४ । ३८ । ५६ मध्य लग्नोत्तर क्रांति ९९५ । ४९ याम्यलिप्ता १५३ ७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिके वशसे अंतर किये शेष याम्य नतलिप्ता ५४१ । २८ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३९ । १५ को उदयज्यासे गुणके ५६०७२१ । ८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६३ । ६ इसका वर्ग २६६०१३७ मध्यज्यावर्ग २९०७९०३४ दोनोंका अंतर २६४१८८ । ५७ इसका मूल दृक्क्षेप १३५९ इसके वर्ग २६४१८८।५७ को त्रिज्यावर्ग में हीन किये शेष ११५५६५३ इसका मूल दृग्गति ३३९९ ।२२ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९। १६ मध्यलग्न १ । १४ । ३६ । ५६ रवि ३ । ६ । ३१ । ३१ दोनोंका अंतर १ । २१ । ५१ । ३५ इसकी ज्या २७०४ । १३ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक पंचमस्थिर लंबन ३ । ६ अथ मोक्षलंबन लानेकी विधिः—गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ स्थित्यर्द्ध २ । २१ युक्त किये १५ । ४० तत्काल रविः २ । २० । २४ । २३ सायन ३ । ६ । ३८ । ५४ कर्क भोग्य पल २६६ इष्टघटिपलों ९४० से हीन किये शेष ६७४ इसमें सिंहमान ३४५ शोधन किये शेष ३२९ को ३० गुणके अशुद्ध कन्या मानके भागसे लब्ध अंशादि २९ । २७ । ४५ भुक्तराशि युक्त कि सायन उदयलग्न ५ । २९ । २७ । ४५ इसकी भुजज्या ३२ । १५ को परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके ४५०५३ । १५ लंबज्याके ३१०० भागसे लब्ध उदयज्या १४ । ३२ मध्यलग्न २ । २९ । २१ । ० इसकी भुजज्या ३४३६ । ४७ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके ४८०११८६ । १९ त्रिज्याके भागसे लब्ध १३९६। ३० इसका चाप मध्य लग्नोत्तर क्रांति १४३४ । २७ स्वदेशाक्षलिप्ता १५

३७। १ ३क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेषयाम्यनत लिप्ता९७। ५० इसकी ज्या वही मध्यज्या दक्षिण ९७ । ५० को उदयज्या १४।३२ से गुणके १४ । २१ । ५१ त्रिज्याके भागसे लब्ध ० । २४ इसका वर्ग ९५७।२ त्रिज्या वर्ग११८१९८४४इन दोनों वर्गोंका अंतर ११८१०२ ७२४८ इसका मूलदृक्क्षेप९२५० इसकी ज्या३४३६।३६ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५१मध्यलग्न२। ९ । २१ । ० रविः ३ । ६ । ३८ । ५४ दोनोंका अंतर ० । ७।२७। ५४ इसकी ज्या ४३६ । ५७ के छेदके भागसे लब्ध घटिकादि प्रथम लंबन मौक्षिक ० । ३० मध्यलग्नसे भानु अधिकके कारण गणितागतमें १५ । ४० हीनकिये १५ । १० तत्कालरविः २ । २० । २३ । ५७ सायन ३ । ६ । ३८ । २८ सायन उदय लग्न ५ । २६ । ४३ । ३४ इसकी दोर्ज्या १९३ । २६ को परमापक्रमज्यासे गुणके २७०२६।२२ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८७ । १० प्राङ्नत १ । ४८ सायनरविः ३ । ६ । ३८ । २८ कर्कभुक्तपल ७१ सायन मध्यलग्न २ । २६ । ३३। ४९ मध्यलग्नोत्तरक्रांति १४३७ । ७याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १५क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतर किये शेष याम्यनतालिप्ता १००।१० इसकी ज्या वही मध्यज्या १०० । १० को उदयज्यासे गुणके ८७३२।१२ त्रिज्याके भागसे लब्ध२ । ३२ इसका वर्ग ६ । २५ मध्यज्या वर्ग १००। ३३ । २२ दोनोंका अंतर१०० । २६ । ५७ त्रिज्या वर्गसे हीनकिये शेष ११८०९८१७ । ७ इसका मूल दृग्गति ३४३६ । ३२एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५८५० मध्यलग्नार्कांतर ० । १० । ४ । ३८इसकी ज्या६०१ । ३४छेदके भागसे लब्ध मौक्षिक द्वितीय लंबन ० । ४२ को स्थित्यर्द्धमें युक्तकिये गणितागत १ । ४०में हीनकिये शेष १४ ।८ तत्कालरविः २ । २० । २३ । ४३ सायन ३ । ६ । ३८ । १४ सायन उदय लग्न ५ । २५ । ४२ । ५ इसकी

भुजज्या २४७। ४६ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३६०१००।२ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ११६। १० सायन मध्यलग्न २।२५ ।२६। ५७ मध्यलग्नोत्तरक्रांति १४३४। ६ याम्याक्षलिप्ता १५३७।१७ क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेष याम्यनतलिप्ता १०२।३१ इसकी ज्या वही मध्यज्या १०२। ३७ को उदयज्यासे गुणके ११९०९ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३। २८ इसके वर्ग १०४९१। ३९ को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ११८०९३४६।२१ इसका मूल दृग्गति ३४३६।२८ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५३ मध्यलग्न और रविका अतर ०।१।१।१७ इसकी ज्या ६६०२० छेदके भागसे लब्ध घटिकादि मौक्षिक तृतीयलंबन ०। ४६ स्थित्यर्द्धयुत गणितागत १५।४० म हीनकिये शेष १४। ५४ तत्कालरविः २।२०। २३। ३९ सायन ३।६।३८। १० सायन उदयलग्न ५।२५।२०। ३६ इसकी ज्या २७।९। ९ को परमापक्रांतिज्यासे गुणके ३८३८।१० सायन मध्यलग्न २।२५।४।३९ मध्यलग्नोत्तरक्रांति ४४३३।४९ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष याम्यनत लिप्ता १०३२० इसकी ज्या वही मध्यज्या १० को उदयज्या से गुणके २३०१६।६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३। ४७ इसका वर्ग १४। १९ मध्यज्यावर्ग १०७७४। २६ दोनोंका अंतर १०७६०। ७ इसका मूल दृक्क्षेप १०३। ४७ इसके वर्ग१०७६०।७को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ११८०९०८३। ५३ का मूल वही दृग्गति ३४३६। २६ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५३ मध्यलग्नार्क अंतर १२३३। ३१ इसकी ज्या ६८९।१ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि मौक्षिक चतुथ लंबन ०। ४८ स्थित्यर्द्धयतगणितागत १५। ४० में हीनकिये शेष १४।५२ तत्काल रवि १।२०।२३। ३७ सायन ३।६। ३८ सायन उदयलग्न ५।२५।९।

५१ इसकी ज्या १३० । ३७ प्राङ्नत २ । ६ सायन रविः ३ । ६ । ३८ सायनमध्यलग्न २ । २४ । ३ । ३० मध्यलग्नोत्तरक्रांति २४ । ३३ । १९ याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण अंतर किये शेष याम्यनतलिप्ता १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३ ५७९ । ४६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३ । ५२ इसका वर्ग १०७९३ मध्यज्यावर्ग १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३५७९ । ४६ त्रिज्या-के भागसे लब्ध १०८९ । ४ दोनोंका अंतर १०७९३ । २८ इसका मूल दृग्गति ३४३६ । २५ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९ । ५३ मध्यलग्न और सूर्यका अंतर १२४४ । ३८ इसकी ज्या ६९९५० छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्थिर मौक्षिक पंचम लंबन ० । ४८ ॥ अथ स्थित्यर्द्धके लंबनांतर संस्कार देनेकी विधिः—स्पर्शकाल लंबन ३ । ६ मध्यकाललंबन २ । ६ मोक्षकाल लंबन ० । ४८ स्पर्शमध्य लंबनका अंतर १ । १८ दृक्पाली मध्यलंबनसे स्पार्शिक लंबनके अधिक होनेके कारण मध्य स्पर्श लंबनका अंतरकिये १ । ० स्थित्यर्द्ध २ । २१ में युक्तकिये ३ । ३९ गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ मध्यलग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण स्थिर मध्य लंबन २ । ६ को हीनकिये पर्व मध्यकाल ११ । १३ स्पार्शिक स्थित्यर्द्धहीनकिये स्पर्शकाल ७ । ५२ मध्यकाल ११ । १३ में मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३९ युक्तकिये मोक्ष-काल १४ । ५२ अथ इष्टग्रास लानेकी विधिः—स्पर्श इष्ट घटी२ को स्पर्श-स्थित्यर्द्ध ३ । २१ में हीनकिये शेष १ । २१ । इसको रवींदुभुक्त्यंतर ७५३ । ३६ से गुणके १०१७ । २२ षष्टि ६० भागसे लब्ध कोटिलिप्ता १६ । ५७ मध्यस्थित्यर्द्ध ३ । २१ से गुणके ३९ । ५० स्पष्ट स्थित्यर्द्ध ३ । २१ के भागसे लब्ध कोटिलिप्ता११ । ५३ अथ इष्टकालीन विक्षेप लानेकी विधिः—इष्टकालीन रविः२ । १८ । ५३सायन३ । ६ । ३३ । १६सायन उदय लग्न ४ । २८ । १५ । ४०इसकी भुजज्या१८०७ । ०को परमापक्रमज्यासे गुण के २५

२५।१७० । ३८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८२५।३४ प्राङ्नतघटी ७ । ६ सायनरविः ३।६ । ३३ । २६ सायन मध्यलग्न १ । २६ ।४७ मध्यलग्नोत्तर क्रांति ११९३ । १४ स्वदेशाक्षलिप्ता १५३७ । १७ याम्य-नतलिप्ता ३४४ । ३ इसकी मध्यज्या ३४३ । ३१ याम्य परमापक्रमज्या से गुणके २७९८१७ । १४ त्रिज्याके भागसे लब्ध ८१ । २३ इसका वर्ग ६६२३ । ५ मध्यज्यावर्ग ११८००३ । ४३वर्गांतर ११३८० ।२७ इसका मूल स्पर्शेष्ट क्षेप ३३३ । ४४ मध्यभुक्त्यंतरसे गुणके २४४१०९ । १५ तिथिघ्न त्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति ४ । ४४ इष्टकालीन चंद्र २ । १९ । ३५ । ३३ तत्कालपात ८ । ३ । १४ । ११ चंद्रोनपात केंद्र ६ ।३।३८ । ३८ भुजज्या २ । ८ । ३८ चंद्रमध्यविक्षेप २७० से गुणके ५९०३१ त्रिज्याके भागसे सौम्य विक्षेप १२ । २६ विक्षेपवर्ग १५४ । ३५ स्पष्टकोटिलिप्तावर्ग १४१ । १४ दोनोंका योग २९५ ।४८ इसका मूलकर्ण १७ । ४३ मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ में हीनकिये शेष स्पर्श ग्रासलिप्ता १७ । ४५ ॥

अथ मोक्षेष्टग्रासलानेकी विधिः—मोक्षेष्ट घटी १ । ३९ मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३९ में हीनकिये शेष २।० इसको रवींदुभुक्त्यंतर ७५२ । ३६ से गुणके १५०७ । ५२ षष्टि ६० के भागसे लब्ध कोटिलिप्ता २५ । ७ को मध्यस्थित्यर्द्ध २।२१ से गुणके ५९ । १ स्पष्ट मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३४ के भागसे लब्ध स्पष्ट कोटिलिप्ता २६ । १० अथ इष्टकालीन विक्षेप लानेकी विधिः—तत्काल रविः २ । २० । २१ । ४४ सायन ३ ।६ । ३६ । १५ सायनउदयलग्न ५।१४।१९ ।५२ इसकी भुजज्या ९२८। ३० को परमापक्रमज्यासे गुणके १२९७११४ । ३० लंबज्यासे लब्ध उदयज्या ४१८२५ प्राङ्नत ४ । ६ याम्यनतलिप्ता १५९ । १० सायनोर्कः ३ । ६ । ३६।१५ सायन मध्य लग्न २ । १३ । ४४।४७ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १३०८ । ७ याम्यनतलिप्ता १५९ । १० मध्यज्यायाम्या १५९ ।

१० को उदयज्यासे गुणके ६६५९७ । ५९ त्रिज्याके भागसे लब्ध १९। २२ इसका वर्ग ३७५४ मध्यज्या वर्ग २५३३४ । २ वर्गांतर २४९५ ८ । ५८ इसका मूलदृक्क्षेप १७ । ५९ मध्यभुक्त्यंतरहत ११५५६ । ५ पंचदशघ्नको त्रिज्याके भागसे मध्ययाम्य अवनति २ । १४ तत्कालीनचंद्र २ । २० ।१६। ५ पात ८ । २३।१४ चंद्रोनपातकेंद्र ६ । २ । ५७ । ५६ भुजज्या १७७ । ५६ को चंद्रविक्षेपसे गुणके ४८०४२० त्रिज्या के भागसे सौम्यविक्षेप१३ । ५८ शर और अवनतिके भिन्न जातिके कारण अंतर किये उत्तर शर ११ । ४४ इसका वर्ग १३७ । ४० स्पष्ट कोटि-लिप्तावर्ग २६१ । २२ दोनोंका योग ३९९ । २ इसका मूलकर्ण १९ । ५८ मान योगार्द्ध ३१ । ५८ में हीनकिये शेष ग्रासलिप्ता २२ । ० अथ इष्टग्रास लिप्तासे इष्टघटी लानेकी विधि स्पर्शेष्ट ग्रासलिप्ता १४ । ४५ को मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ से हीनकिये शेषलिप्ता १७ । १३ इसका वर्ग २९ ५ । ४८ इसको कालस्फुट विक्षेप वर्ग १५४ । ३५ में हीनकिये शेष १४२ । १३ इसका मूलस्पष्टकोटिलिप्ता ११५३ स्पष्ट स्पार्शिक स्थित्यर्द्ध २ । २१ के भागसे लब्ध २ । २१ मध्य कोटिलिप्ता १६ । ५७ को ६० गुणके १०१७१० स्फुट भुक्त्यंतरके ७५३।२६ भागसे लब्ध१।२१ स्पर्श स्थित्यर्द्ध ३ । २१ में हीन किये शेष स्पर्श इष्टघटी २ । ० मोक्षेष्ट-ग्रासलिप्ता १२ । ० मानयोगार्द्धम हीनकिये शेष १९ । ५८ इसका वर्ग ३९९ कालस्फुटवर्ग विक्षेपवर्ग १३७ । ४४ शेष २६१ । २२ इसका मूल स्पष्ट कोटिलिप्ता १६ २० स्फुट मोक्ष स्थित्यर्द्ध ३।३९ से गुणके ५९। १ मध्यस्थित्यर्द्ध २।२१ के भागसे लब्ध मध्य कोटिलिप्ता २५ ।७ षष्टि ६० से गुणके १५७ । १२ स्फुट मोक्ष भुक्त्यंतरके ७५३ । ३३ भागसे लब्ध २ । ० स्फुटमोक्ष स्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष मोक्षेष्ट ग्रास घटी १ । ३९ अथ स्पर्शकालीनवलन लानेकी विधिः—स्पर्शकाल ७ । ५२ प्राङ्नत ९ । ६ नतासव ३७७६ सौम्यनाडी १३९२८०१।२१ को अक्ष

ज्या १४८६ से गुणके ४१६२८०६।६ त्रिज्याके भागसे लब्ध१२१०। ४९ इसका धनु वही सौम्यनतलिप्ता १२३८। २२ स्पर्शकालीनरविः २। २०।१७। ० राशित्रययुत ५। २०। १७। ० अयनांश १६१४३३१ युत ६ । ६ । ३१ । ३१ याम्यभुजज्या ३९० । ४६ क्रांतिकलाः १५८ । ४ सौम्यनतलिप्ता १२३८ । २२ नत और क्रांतिकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये १०७९ । ३५ इसकी ज्या वही सौम्य वलनज्याके १०६१३८ सतंतर७७ के भागसे लब्ध स्पार्शिक सौम्यवलनांगुल १५।९ अथ मध्यकालीन वलन लानेकी विधिः—मध्यकाल ११। १३ प्राङ्नत घटी ५। ४५ नतासव २०७० नतज्या सौम्यसंज्ञकके चाप करनेसे सौम्य मध्यनतलिप्ता ८५०। २ तात्कालीन रविः २। २०। २०। ९ साधन और राशित्रययुत ६। ६।३४। ३१ इसकी भुजज्या ३९३। ५५ सौम्यक्रांति कला १६०।४ सौम्यनतलिप्ता ८५०।२नत और क्रांतिके दिग्भेदके कारण दोनोंका अंतरकिये ६८८। ५ इसकी ज्या वही वलनज्या ६८४। ३४ इसके ७० भागसे लब्ध मध्य सौम्यवलनांगुल ९। ४७॥

अथ मोक्षकालीन वलन लानेकी विधिः—मोक्षकाल १४। १५ प्राङ्नत-घटी २। ६ नतासव ७५६ नतज्या ७५९। ५० को अक्षज्यासे गुणके १११४२५२। २० त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२४। ६ इसका चापकिये सौम्यमोक्ष नतलिप्ता ३२४। ३२ तत्कालरविः २। २०। २३। ३७ सायन और रात्रित्रययुत ६। ६। ३८। ८ इसकी भुजज्या ३९७।२२ याम्यक्रांति कला १६१।२८ सौम्यनतलिप्ता ३२४३२ नत और क्रांतिके दिग्भेदके कारण अंतरकिये १६३। ४ इसकी ज्या वही सौम्यमोक्षवलनज्या १६३। ४ के ७० भागसे लब्ध सौम्य मोक्षवलनांगुल २। २० अथ स्पार्शिक शर लानेकी विधिः—स्पार्शिकस्थिर दृक्क्षेप५१३।५९को मध्य-भुक्त्यंतरसे गुणके ३७५९५३। ६ फिर १५ गुणके त्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति ७। १२ तत्काल चन्द्र २। १९। ८। ३९ पात

८ । २३ । १४ । १७ केंद्र ६ । ४५ भुजज्या २४५ । ४० चन्द्र-विक्षेपसे गुणके ६६३३० । ० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्यविक्षेप १२।०॥

अथ मोक्षविक्षेप (शर) लानेकी विधिः—मोक्षस्थिर दृक्क्षेप १०३।३ को मध्य भुक्त्यंतरसे गुणके ५५९८५।२८ तिथि १५ व्रत्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति १ । २७ तत्काल चंद्र २ । २० । ४३ । ५ पात ८ । २३ । १३ । ५५ केंद्र ६ । २ । ३० । ५० भुजज्या १५०। ३० को विक्षेपसे गुणके ४०७२५ । ० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्य विक्षेप ११ । ५० याम्य अवनति १ । २७—विक्षेप और अवनतिके दिग्भेदके कारण अंतरकिये मौक्षिक स्पष्ट सौम्य विक्षेप १० । २२ ॥

अथ विक्षेपादिकोंके अंगुलीमान करनेकी विधिः—मध्यकालोन्नत ११ । १३ को दिनमान और—दिनार्द्ध १६ । ५८ सहितकिये ६२ । ७ फिर दिनार्द्ध १६ । ५८ के भागसे लब्ध छेद ३ । ४० स्पर्श विक्षेप लिप्ता १२ । ० छेदके भागसे स्पार्शिक सौम्य विक्षेपांगुल ३ । १६ मध्य विक्षेप लिप्ता १२। १९ छेदके भागसे लब्ध मध्यविक्षेपांगुल ३।३१ मोक्ष विक्षेप लिप्ता १० । २२ छेदके भागसे लब्ध सौम्य मोक्ष विक्षेपांगुल २ । ४९ रविमान लिप्ता ३१ । ९ छेदके भागसे लब्ध रविबिंबांगुल ८ । ४३ और इसीप्रकारसे छेदके भागसे चंद्रबिंबांगुल ८। ५६ मानयोगार्द्धांगुल ८ ।४३ ग्रासलिप्ता १९ । ३९ छेदके भागसे लब्ध ग्रासांगुल १२ । ० स्पर्शेष्टग्रास-लिप्ता १४ । ४५ छेदके भागसे लब्ध स्पर्शग्रासांगुल ४ । १ मोक्षेष्टग्रास लिप्ता १२ । ० छेदके भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ३ । १६ ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सूर्यग्रहण-
गणितकथनं नाम द्वादशविनोदः ॥ १२॥

अथ ग्रहयुद्धोदाहरणं व्याख्यास्यामः—ग्रहोंका युद्ध चार प्रकारका है. वह युद्ध १ भेद २ उल्लेख ३ अंशमर्द ४ और असव्य इन चारप्रकारसे पराशरआदि मुनियोंने कहाहै जब दोनों ग्रह एक दीखपडैं अर्थात् ऊपर

वाले ग्रहोंको नीचेका ग्रह ढक लेवे उसका युद्ध नाम भेद है. १ एक ग्रह दूसरे ग्रह बिंबकी परिधि मात्रको स्पर्श करे ढके नहीं वह उल्लेख नामका युद्ध है २ दोनों ग्रहोंका स्पर्श तो न होय परन्तु इतने समीप दोनों होजायँकी एक बिंबसदृश दीखे वह उल्लेख युद्ध कहलाता है. एक ग्रह दूसरे ग्रहके दक्षिण में बरोबर रहै और दूसरा उत्तरमें रहै इसका नाम असव्य युद्ध है ४ संवत् १६४१ शाके १५०६ ज्येष्ठ शुदि ११ रविदिन सृष्टचब्दाः १९५५८८४६८५ सिद्धांत अहर्गण ७१४४०४००७९०६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अर्हगण १७११२७९ रविमंध्यम १ । १ । १६।४३. गुरुमध्यम ११ । २७ । ५४ । ३ शुक्रशीघ्रोच्च १० । १४ । ४६ । २९ स्पष्ट सूर्य १ । १२ । २४ । २९ गति ५७ ।१८ स्पष्टगुरुः ० । ५।२८ । ७ गति १३ । १५ स्पष्टशुक्र ० । ७। २९ । २१ गति ७१ । १५

अथ गुरु और शुक्रके समलिप्तिका करनेकी विधिः—स्पष्टगुरुः ० । ५ । २८ । ७ स्पष्टशुक्र ० । ७ । २९ । २१ दोनोंके अंतरकी कला २२१ । १४ के भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध दिनादि २ । ५ । २४ ग्रहांतर २२१ । १४ को शुक्रस्पष्ट गतिसे गुणके ८६३७ । ५३ भुक्त्यंतरके ५९ । ० भागसे लब्ध संयोगी गत होनेके कारण भृगुफल-ऋणात्मक १४८ । ५५ इसको स्पष्ट शुक्रमें हीन किये समकलकाली भृगुः ० । ५ । ० । २६ एवं ग्रहांतर १२१ । १४ को स्पष्टगुरु भुक्तिसे गुणके दोनों भुक्त्यंतरके भागसे लब्धलिप्तादि गुरुफल संयोगी गत होनेके कारण ऋणात्मक २७ । ४१ फलको स्पष्ट गुरुमें हीन किये समकलकाली गुरुः ० । ५ । ० । २६ एवं दिनादि फल २ । ५ । ४३ इष्टवारादि० । ४६ । ५० में हीन किये शेष वारादि ६ । ४१ । २६ ज्येष्ठ शुदि ९ शुक्र दिन ४१ । २६ के इष्ट ऊपर गुरुस्पष्ट ० । ५ । ० । २६ तत्काल रविस्पष्ट १ । १० । २४ । ४४ अथ रवि और गुरु शुक्रके दिनमान लानेकी विधिः—सायन रविः १ । २६ । ४१ । १५ गति ५७ । १८ सायन वृषा-

सुसे गुणे ८७०१० । ४२ रविकी उत्तर क्रांति कला ११९१ । ४९ इसकी क्रमज्या ५५९ । २१ को त्रिज्यासे गुणके १९२३०४५१८ द्युज्या-के भागसे लब्ध चरज्या ५९४ । ५४ इसका धनु वही चरासव सौम्य ५९७ । ५२ स्वाहोरात्र चतुर्भाग ३५४ । ५ में युक्तकिये सूर्यका दिनार्द्धासव ६००९ । ५७ ऊनित किये रात्र्यर्द्धासव ४८१४ । १३ दिनार्द्ध-घट्यादि १६ । ४१ रात्र्यर्द्ध १३ । २३ मिश्रप्रमाण ४६ । ४४ अथ गुरुदिनमान लानेकी विधिः—सायनगुरुः० । २१ । १६ । ५७ गति१३ । १५ सायन मेषासुसे गुणके ११५५६ ।१५ खखाष्टेन्दु १८००के भाग-से लब्ध ९ । ४५ स्वाहोरात्रासव २१६९ । ४५ गुरु सौम्य क्रांतिकला ५०८ । २५ स्पष्ट गुरु पात २ । २६ । १७ । ५४ तत्कालगुरु ० । ५ । ० । २६ केंद्र २ । २१ । १७ । २८ भुजज्या ३३९७ । ४ याम्यगुरु विक्षेप ५१ । २१ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट सौम्य गुरु क्रांति ४५७ । ४ इसकी क्रमज्या ४५५ । ५८ कुज्या २१८। २९ चरज्या २२० । २४ इनका स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४०२ । २६ युक्त किये गुरुदिनार्द्धासव ५६२२ । ५० ऊन किये रात्र्यर्द्धासव ५१८२ । २ गुरु दिनार्द्ध घटी १५ । ३० रात्र्यर्द्ध घटी १४ । २४ शुक्रका स्वाहोरात्रासव २१६५२ । १७ शुक्रकी सौम्य क्रांतिकला ५०८ । २६ शुक्रका स्पष्ट पात १२८ । १२ । ५५ भृगु ० ।५। ० । २६ भृगु-पात केंद्र १ । २३ । १२ । २९ भुजज्या २७५२ । ४४ याम्यविक्षेप ७६ । ३१ विक्षेप और क्रांतिके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट सौम्य भृगु क्रांति ४३१ । ५५ क्रमज्या ४३० । ५९ उत्क्रमज्या २७ । १२ द्युज्या ३४१० । ४८ कुज्या २०६ । ३० चरज्या २०८ । ८ इसका चाप वही चरासव सौम्य २० । ८ । ८ स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४१३ । ७ रात्र्यर्द्धघटिका युक्त किये भृग वा दिनार्द्धासव १६२१ । १५ ऊनित किये रात्र्यर्द्धासव ५२०४ । ५९ शुक्रदिनार्द्ध घटी १५ । ३१ रात्रिमें

समकालीन होनेके कारण सषड्क ७ । २६ । ४१ । १५ गुरुः ४ । २१ । १६ । ५७ रविसे अधिक होनेके कारण वृश्चिककी भुक्तपल ३०७ गुरुके ऊन होनेके कारण तुलाकी भोग्य पल ९७ इन दोनोंका योग ४०४ ग्रह-सूर्यांतराल घटी ६ । ४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्ट घटी ५८ । ५ इन दोनोंका योग १४ । ४८ यह ग्रहास्त पीछेकी इष्ट घटीकोही गुरुरात्रिमानसे २८ । ४८ हीन किये गुरुशेष रात्रिघटी १४ । ० इसमें गुरु दिनार्द्ध युक्त किये गुरु प्राङ्नत घटी २९ । ३७ खाग्नि ३० से हीन किंये उन्नत घटी ० । २३ सायन रविः सषड्क ७।२६।४१।१५ सायन सषड्क शुक्र ६।२१ ।२६। ५७ भुक्तपल ३०७ भोग्यपल ९७ दोनोंका योग ४०४ शुक्र सूर्यांतराल घटिका ६।४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्टघटी ।१३ दोनोंका योग १४।३८शुक्रास्त पीछे-का इष्टकाल १४ । ४८ शुक्रकी रात्रिमानसे २८ । ५४ हीन किये शेष रात्रिघटी १६ इसको शुक्रदिनार्द्धमें युक्तकिये शुक्रकी प्राङ्नतघटी २९ । ४३ खाग्नि ३० से हीनकिये उन्नत घटी ० । १७ अथ गुरुकी दृक्कर्म-साधनकी विधिः-गुरुयाम्यविक्षेप ५१ । १२ को विषुवच्छाया ५।४१ से गुणके २९५ । १६ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २४ । ३६ को गुरुनत घटी २९ । ३२ से गुणके ७२८ । ३४ गुरुदिनार्द्ध १५ । ३७ के भागसे लब्धलिप्तादि ६ । ३९ दृक्पाली याम्यविक्षेप होनेके कारण धनकिये आक्षज संस्कृत गुरुः ० । ५ । ४७ । ५ सायन सत्रिभगुरुः ३ । ११। ५७ सौम्यक्रांत्यंश २२ । ५ । २३ को याम्य विक्षेप कलासे ५१२१ गुणके ११५३ षष्टि ६० भागसे लब्ध आयन फल १९ । २३ क्रांति और विक्षे-पकी दिग्भेद कारण आक्षजगुरुमें उक्त फल युक्त किये दृक्कर्मजगुरुः ० ।६। ६ । ८ अथ दृक्कर्मशुक्रके साधनविधिः-शुक्रके याम्य विक्षेप ७६ । ३१ को विषुवच्छायासे गुणके ४३९ । ४८ द्वादश १२ भागसे लब्ध ३६।४० को शुक्रकी नत घटिकासे ३९ । ४३ गुणके ६१०८९ । ३७ शुक्रके दिनार्द्ध १५ । ३० के भागसे लब्ध ६९ । ४६ शुक्रका याम्यविक्षेप २९

लिप्तादिके कारण शुक्रमें युक्तकिये आक्षज संस्कृत गुरुः ० । ६ । १० । १० १२ सायन सत्रिभगुरुः ६ । २१ । १६ । ५७ सौम्यक्रांत्यंश २१ । १५ २३ को विक्षेपलिप्ता ७६ । ३१ से गुणके १७०३ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि २८ । २३ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेद होनेका कारण अक्षज संस्कृत भृगुमें युक्तकिये दृक्कर्मसंस्कृत भृगुः ० । ६ । ३८ । ३५ दृक्कर्मगुरुः ० । ६ । १६ । ८ दोनोंके अंतरकी कला ३२ । २७ के भुक्त्यंतर के भागसे लब्ध दिनादि ० । ३३ । ३४ इष्टकाल ४१ । २६ से हीनकिये शेष ७ । ५२ एवं ज्येष्ठशुदि ९ शुक्रके दिन सूर्योदयसे इष्टघटी ७ । ५५ समय गुरु और शुक्रका युद्धहुवा. ग्रहांतरकी कला ३२ । २७ को गुरुगति १३ । १५ से गुणके ४९ । ५७ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध ७ । २४ को दृक्कर्म दत्त शुक्रमें हीनकिये गुरु ० । ५ । ५८ । ४४ एवं ग्रहांतरको शुक्र गतिसे गुणके भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध ३९ । ५२ दृक्कर्मज भृगुमें हीनकिये भृगु ० । ५ । ५८ । ४४ अथ तात्कालीन गुरुविक्षेप लानेकी विधिः गुरुः ० । ५ । ५८ । ४४पात२ । २६ । १७ । ५४केंद्र २ । २० । १९ । १०भुजज्या ३३८७ । २९ को विक्षेपसे गुणके २०३२४९ चलकर्णके भागसे लब्ध याम्यविक्षेप ११ । १३ अथ शुक्रविक्षेप लानेकी विधिः शुक्र० । ५ । ५८ । ४८ पात १ । २२ । १४ । ११ भुजज्या २७१७ । २६ को विक्षेप ३२ ६१५२से गुणके चलकर्णके भागसे लब्ध शुक्रयाम्यविक्षेप७५ । ३४ विक्षेपोंके दिशा साम्यताके कारण अंतरकी शेष २४ । २१ अथ गुरु और शुक्रके स्पष्टविष्कंभ लानेकी विधिः—गुरुमध्यविष्कंभ ५२ । ३० द्वि २ गुणके १०५ फिर त्रिज्यासे गुणके ३६०९९० त्रिज्यांत कर्णके योगके ७७५४ । ५१ भागसे लब्ध चंद्र कक्षापे स्पष्ट शुक्र विष्कंभ ५३ । १२ तिथि १५ के भागसे लब्ध शुक्रमानलिप्ता ३ । ३२ गुरुविष्कंभ ४८ । ४४ के तिथि १५ के भागसे लब्ध गुरुमानलिप्ता ३ । १५ मानयोगार्द्धलिप्ता ३ । २४

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषा विभूषिते ग्रहयुद्ध गणित विधिवर्णनंनाम त्रयोदश विनोदः ॥१३॥

अथ ग्रह और नक्षत्रके योग होनेकी गणितविधिः—यहां रोहिणी और शुक्रके योग होनेका उदाहरण लिखा जाताहै संवत् १६४१ शक १५०६ द्वितीय आषाढवदि १ रविदिन सृष्टचब्द १९५५८८४६८५सिद्धांत सृष्टचा-यहर्गण ७१४४०४४००७९४१कलियुगाब्दाः ४६८५ कलिअहर्गण १७११३२८ अर्द्धरात्रिके इष्टपे देशांतर संस्कृत मध्यमरविः२। १५।३६।२९ शुक्रशीघ्रोच्च ०।१०।९०।५६ स्पष्टरविः२।१५।४०।२४ गति ५६।५० शुक्रस्पष्ट१।१९।१३।४३गति ७२।६शुक्रके चतुर्थ चलकर्ण५०।१४।५३ स्पष्टभृगुपात ।१९।५।३५ अथ शुक्र और रोहिणीके सम लिप्ता करनेकी विधिः—रोहिणी ध्रुव १ । १९ । ३० । ० स्पष्ट शुक्र १ । १९ । २३ दोनोंके अंतर लिप्ता ६ । १७ शुक्रकी स्पष्ट गतिके भागसे लब्ध दिनादि० । ५ । १३ यहां रोहिणीसे शुक्र स्पष्ट न्यून होनेके कारण इष्ट घटीमें युक्त किये ५१ । २२ समलिप्ता रोहिणी १ । १९ । ३० शुक्र १ । १९ ।३० तत्कालरविः २ । १५ । ४५ । ३० अथ रवि और शुक्र रोहिणीके दिनमान लानेकी विधिः—रविका स्वाहोरात्रासव २१६५७ । २८ रविकी सौम्यक्रांति १४३८ । १९ क्रांतिज्या १३९ । २८ उत्क्रमज्या २९७ । ३० द्युज्या ३१४० । ३० कुज्या ६६८ । ३९ चरज्या ७३१ । ५९ चरासव ७३७ । ३७ दिनार्द्धासव ६१५१ । ५९ रात्र्यर्द्धासव ४६७६ । ४५ दिनार्द्धघटी १७ । ५ रात्र्यर्द्धघटी १२ । ५९ अहोरात्रघटी ६० । ८ अथ शुक्रके दिनमान लानेकी विधिः—स्वाहोरात्रासव २१६७२ । ५४ भृगुयाम्यविक्षेप ६१ । १६ सौम्यक्रांति १३०५ । ३० विक्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति १२४४ । १४ क्रांतिज्या १२१६ । १७ क्रमज्या २३३ । ५१ द्युज्या ३२२४ । ९ क्षितिज्या ५८२ । ४८ चरासव ६२६ । ४४ दिनार्द्धासव ६०४४ । ५८ रात्र्यर्द्धासव ४७९१ । ३० दिनार्द्धघटी १६ । ४७ रात्र्यर्द्धघटी १३ । १८ अथ रोहिणीके दिनमान लानेकी विधिः—रोहिणीका स्वाहोरात्रासव २१६०० रोहिणी याम्य विक्षेप ३०० क्रांति १३०५ । ३० रोहिणी स्वाहोरात्र सौम्य वि-

क्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति १००५ । ३० क्रांतिज्या ९९० । ४९ उत्क्रम-ज्या १४७ । २८ द्युज्या ३२९०।३२ क्षितिज्या ४७५। ३५ चरज्या ४९६ । ५४ चरासव ४९७ । ५४ दिनार्द्धासव ५८९७ । ५४ रात्र्यर्द्धा-सव ४९०२ । ६ दिनार्द्धघटी १६ । २३ रात्र्यर्द्धघटी १३ । ३७ अथ नतोन्नतसाधनविधिः—सायन रवि ३ । २ । १ । ५१ सायन रोहिणी और शुक्र २ । ५ । ४६ । ३१ रात्रिके इष्टके कारण सषड्भ रविः ९ । २ । १ । ५१ शुक्र ८ । ५ । ४६ । ३१ अंतरघटी ४ । २८ रात्रिगत घटीमें १८ । १२ युक्त किये २२ । ४० सूर्य रात्र्यर्द्ध घटीमें हीन करनेसे उन्नत घटी २० । २४ रोहिणी नतघटी २० । १९ अथ दृक्कर्मसाधन-की विधिः—शुक्र याम्य विक्षेप ६१ । १६ को विषुवद्भासे गुणके ३५२ । १७ द्वादश १२ भागसे लब्ध २९ । २१ को नतघटी २० । २४ से गुण-के ५९८ । ४४ स्वदिनार्द्ध के १६ । ४७ भागसे लब्ध ३५ । ४० शुक्र में युक्तकिये आक्षज संस्कृत भृगुः १ । २० । २४ सायनत्रिभ भृगुः ५ । ५ । ४६ । ३१ भुजज्या १४०९ । १७ क्रांतिज्या ५७२ । ३९ क्रांति-सौम्य ५७५ । २८ भागादि ९ । ३५ । १८ को विक्षेपलिप्तासे ६१ । १६ गुणके ५८७ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि ९।४७ आक्षज भृगुओं में युक्तकिये दृक्कर्मज भृगुः १ । २० । १५ । २७ रोहिणी याम्यविक्षेप ३०० को विषुवद्भासे गुणके १७२५।० द्वादश १२ भागसे लब्ध १४३ । ४५ नतघटी २० । १९ से गुणके २९२० । ३० दिनार्द्ध १६ । २३ के भागसे लब्ध १७८ । १६ कलादि ब्राह्म्य ध्रुवमें युक्त किये आक्षज ब्राह्म्य ध्रुवकः १ । २२ । २८ । १६ सत्रिभ सायनध्रुवः ५ । ५ । ४६ । ३१ क्रांति सौम्य अंशादि ९ । ३५ । १८ विक्षेप लिप्ता ३०० से गुणके वि-कला २८७७ कलादि ४७५७ अक्षज ध्रुवमें युक्त किये दृक्कर्मसंस्कृत ब्राह्म्य ध्रुवकः १ । २६ । ३६ । १३ दोनोंकी अंतर कला १८०४६ लब्ध दिनादि ३० । २५ पूर्वानीत समकल कालमें युक्त किये १ । ५१ । २२ ब्राह्म्य भृगुका युक्तकाल ४ । २२ । ४७ द्वितीयाषाढ वदि ४ बुधे सूर्योदयसे घटी २२ । ४७ शुक्र और रोहिणीका योग हुवा अथ तत्काल

विक्षेप लानेकी विधिः—तत्काल मध्यम रविः २ । १८ । ९ । ५२ शुक्र शीघ्रोच्च ० । १५ । ० । १७ चतुर्थ चलकर्णकः ५०५७ । ८ स्पष्ट पात १ । २९ । १० । ५९ याम्यविक्षेप ५६ । ५० रोहिणी याम्य विक्षेप ३०० दोनोंके दिक्तुल्यके कारण अंतर किये ब्राह्य भृगुकी अंतर कला २४३ । १७ तीन ३ के भागसे लब्ध अंगुलात्मक अंतर ८१ । ३ चौबीस २४ के भागमें लब्ध हस्तात्मक अंतर ३ । ९ । ३॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहनक्षत्रयुतिकथनं नाम चतुर्दशविनोदः ॥ १४ ॥

अथ ग्रहोदयास्तविधिं व्याख्यास्यामः—संवत् १६४१ भाद्रपद वदि ५ रविदिन सिद्धांत अहर्गणः ७१४४०४०० कलि अहर्गणः १७११३९१ उस दिन देशांतर संस्कृत रवि मध्यमः ४ । १६ । ५१ । ४२ शुक्र शीघ्रोच्च ३ । २० । ३४ । ५५ रविस्पष्ट ४ । १५ । ४ । ४० स्पष्टगति ५७ । ५७ मंदफल ऋण १ । २२ । ३४ स्पष्टशुक्र ४ । ५ । ६ । ३ गति ७३ । ५२ चलकर्ण ५७९४ । १० स्पष्टभृगुपात २ । १ । ३ सौम्य विक्षेप५४।९शुक्र की सौम्य क्रांति८२१।१३शर संस्कृतस्पष्टक्रांति९३५। २२भृगुओंका स्वाहोरात्रासव२१६८४५६क्रांतिज्या ९३६।४७ क्रांतिका उत्क्रमज्या १२३।१३ द्युज्या३१०।४७क्षितिज्या४४२।३९चरज्या४५९ । ३८ चरासव ४६० । ४६ दिनार्द्धासव ५८८२ । ० रात्र्यर्द्धासव ४९६० । २० दिनार्द्धघटी १६ । २० रात्र्यर्द्धघटी १३ । ४७ सायन रवि ५ । १ । २१ । ११ इसकी ज्या ६६९ । १९ उत्क्रमज्याद्युज्या ३३७२ । २७ क्षितिज्या ४४२ । ३९ चरज्या ३२६ । ५८ चरासव ३२७ । २५ दिनार्द्धासव ५७८३ । ५४ रात्र्यर्द्धासव ५०९९ । ४ दिनार्द्धघटी १५ । ५७ रात्र्यर्द्धघटी १४ । ८ सायन रवि ५ । १ । २१ । ११ सायन भृगु ४ । २१ । २२ । ३० अथ शुक्रके दृक्कर्मसाधनविधिः—शुक्रकी प्राङ्नत १४ । २५ विक्षेप ५४ । ९ को विषुवद्भासे गुणके ३११ । २२ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २५ । ५७ नतसे गुणके ३७४ । ७

दिनार्द्धके भागसे लब्ध २२ । ५५ कलादि शुक्रमें ऋणकिये आक्षज भृगुः ४ । ४ । ४३ । ८ याम्य क्रांत्यंश १८ । ३० । २५ को विक्षेपसे गुणके १००२ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि १६।४२ आक्षज शुक्रके क्रांतिविक्षेपकी भिन्नदिशाके कारण योगकिये दृक्कर्मजभृगु ४ । ४ । ५९ । ४०

अथ रवि और शुक्रके अंतर प्राणसाधनकी विधिः—सायनाक्षज रविः५। १ । २१ । ११ सायन दृक्कर्मभृगुः ४ । २१ । १६।२१ दोनोंका अंतर प्राण ६९० के षष्टि ६० भागसे लब्ध कालांशा ११। ३० शुक्रका दृश्यांश १० इन दोनोंका अंतर कला ९० मध्यकालांशको हीनकिये आगतकालांश अधिक होनेके कारण इष्टावधिसे आगे शुक्रका अस्त होना संभव है.

अथ रवि और शुक्रकी कालगति लानेकी विधिः—रविगति ५७। ५७ को सिंहासु २०७० से गुणके ११९९५६ । ३० अष्टादशशत १८०० के भागसे लब्ध रविकालगति ६६ । ३८ शुक्रकी स्पष्टगति १३ । ५२ को सिंहासु २०७० से गुणके १५२९०४ । ० खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध शुक्रकालगति ८४ । ५६ कालगति दोनोंका अंतर १८ । १८ स्पष्टमध्य कालका अंतर ९० के कालगत्यंतरके भागसे लब्ध दिनादिफल ४ । ५५ धन हुवा जिससे भाद्रपदवदि ९ गुरुके दिन ५५ घटीऊपर पूर्वमें शुक्रास्त हुवा. अथ नक्षत्रोदयास्तसाधनविधिः—द्वितीयाषाढवदि ११ बुधदिन चांद्रनक्षत्रोदयसाधनविधि लिखतेहैं. सिद्धांत अहर्गण ७१४४ ०४००७९५१ कलिअहर्गण १७११३२४ रविमध्यमोदय कालिक २ । २४ । ४१ ।४९ रविस्पष्ट २ । २४ । २४ । ३२ गति ५६ । ५१ मृगध्रुवक ३७८० राश्यादि २ । ३ । ० । ० सायन २ । १९ । १६ । ३१ इसकी ज्या ३३७७ । १० क्रांतिज्या १३७२ । १६ क्रातिसौम्य १४१२ । ५१ मृगयाम्यविक्षेप लिप्ता ६०० शरसंस्कृत स्पष्ट क्रांतिसौम्य ८१२ । ५१ क्रांतिज्या ८०५ । १० क्रांतिउत्क्रमज्या९७ । १४ द्युज्या ३३४० । ४६ क्षितिज्या ३८५ । ४८ चरज्या ३९७ । २ चरासव सौम्य ३९७ । ४८ दिनार्द्धासव ५७९७ । ४ रात्र्यर्द्धासव

५००२ । १२ दिनार्द्धघटी १६ । ६ रात्र्यर्द्धघटी १३ । ५४ सायन सूर्य ३ । १० । ४१ । ८ इसकी ज्या ३३७७ । ३४ क्रांतिज्या १३७२ । ३६ क्रांतिसौम्या १२ स्वाहोरात्रासव २१६४ । ४८क्रांतिज्या १३७२ । २६ क्रांति उत्क्रमज्या २८७ । ३ द्युज्या ३१५० । ५७ क्षितिज्या ६५७ । ४२ चरज्या ७१७ । ३७ चरासव ४६९३ । १७ दिनार्द्धघटी १७ । ३ रात्र्यर्द्धघटी १३ । २ अथ इन दोनोंके अंतरप्राण-साधनकी विधिः—सायनरविः ३ । १० । ४१ । ८ सायन मृग ध्रुवक २ । १९ । १६ । ३१ दोनोंकी अंतरघटी ३ । ५१ अथ दृक्कर्मसाधनविधिः-मृगकी प्राङ्नत १२ । १५ याम्यविक्षेप लिप्ता ६०० को विषुवद्भासे गुणके ३४५० । ० द्वादश १२ भागसे लब्ध २८७ । ३० को नतघटीसे गुणके ३५२१ । ५२ दिनार्द्ध १६ । ६ के भागसे लब्ध कलादि २१८ । ४५ अंशादि ३ । ३८ । ४५ याम्यविक्षेप और प्राङ्नतके कारण धनात्मक आक्ष-जफल हुवा सत्रिभ सायन मृग ध्रुवक ५ । १९ । १६ । १९ इसकी ज्या ६३९ । ५४ क्रांतिज्या २६० । ० क्रांति२६० । ९ अंशादि ४ । २० । ९ विक्षेप लिप्तासे गुणके विकला २६०१ कलादि ४३ । २१ क्रांति और विक्षेपकी भिन्नदिशाके कारण धनात्मक आयन फलहुवा अयन और अक्ष-जकी समजातिके कारण योगकिये ४ । २२ । ६ मृगध्रुवमें युक्तकिये दृक्कर्मज मृग ध्रुवक २७ । २२ । ६ सायन दृक्कर्मज ध्रुवक २ । २३ । ३८ । ३७ सायनरवि ३ । १० । ४१ । ८ रविभुक्तप्राण ७३२ ध्रुवकका भोग्य-प्राण ३८४ दोनोंका योग १११६ षष्टि ६० के भागसे लब्ध कालांशा १८ । ३६दृश्यांशसे हीन होनेके कारण गम्य उदय होगा.स्पष्टमध्य कालां-शकी अंतरकला १४४ रवि कालगति ६४ । ४८ के भागसे लब्ध दिनादि २।१३ जिससे द्वितीयाषाढवदि १३ शुक्रके दिन घटी १३ के समयमें मृग-शीर्ष नक्षत्रका उदयहुवा अथ चंद्रशृंगोन्नतिसाधनविधिः-संवत् १९४१प्रथम आषाढ शुदि १ शनिदिन सृष्टिगताब्द १९५५८८४६८५ सृष्टि अहर्गण ७१४४०४००७९२६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अहर्गण १७११२

११ अस्तकालीन रविमध्य २ । ० । ३६ । ३३ अस्तकालीन चंद्रमध्यम २ । १५ । ११ । ५८ उच्च ८ । १७ । ५२ । ३२ पात ७ । १५ । ३५ । ३३ रविस्पष्ट २ । १ । १४ । ३८ गतिः ५८ । ५७ चंद्रस्पष्ट २ । १४ । ५७ । ४२ गति ८६० । ११ चंद्रकी याम्य विक्षेपलिप्ता १३२ । २२ सायन चंद्र ३ । १ । १४ । ३३ इसकी ज्या ३४ । ३५ । ३७ क्रांतिज्या १३९६ । ३ सौम्यक्रांति १४३८ । ५७ शर संस्कृत स्पष्ट-क्रांति १३०६ । ३५॥

अथ चंद्रदिनमान लानेकी विधिः—स्वाहोरात्रासव २२५८० । ३६ क्रांतिज्या १७२७४ । २८ क्रांतिउत्क्रमज्या २४५ । ४५ दिन व्यासदल ३१९२ । १५ क्षितिज्या ६१० । ४१ चरज्या ६५७ । ४२ चरासव ६६१ । ३१ दिनार्द्धासव ६३०६। ४० रात्र्यर्द्धासव ४९८३ । ३८दिना-र्द्धघटी १६ । ११ रात्र्यर्द्धघटी १३ । १५ अथ चंद्रदृक्कर्मसाधनविधिः—चंद्रकी पश्चिमनत १५ । ११ विक्षेप १३३ । २२ को विषुवद्भासे ७६१ । ६ गुणके द्वादश १२ के भागसे लब्ध ६३ । २५ को नतघटीसे गुणके ९६२ । ५२ स्वदिनार्द्ध १७ । ३१ के भागसे लब्धकलादिफल ५४।४८ याम्यविक्षेप और पश्चिमनतके कारण आक्षज फल ऋण हुवा सायन सत्रिभ चंद्र ६ । १ । १४ । १३ इसकी ज्या ७४ । १३ क्रांतिज्या ३० । ९ क्रांति ३० । ९ भागादि ० । ३० । ९ को विक्षेपलिप्तासे गुणके विकला ६७ कलादि १ । ७ क्रांतिविक्षेपकी एक दिशाके कारण ऋणात्मक अयन फल हुवा. आक्षज और आयन फलकी समान दिशाके कारण योगकिये ५६० । ५ दृक्कर्म फल ऋणको चंद्रमें हीनकिये दृक्कर्मज चंद्र २ । १४ । १ । ३७ अथ स्पष्टकालांशसाधनविधिः-सायन रवि सषड्भ ८ । १७।३१ । ९ सायन सषड्भ दृक्कर्म चंद्र९।०।१८।८दोनोंका अंतर प्राण८७०को षष्टि६० भागसे लब्ध कालांशा१४।३०मध्य कालांशके अधिक होनेके कारण गतोदय हुवा.चंद्रकी कालगति८७१।३९सूर्य कालगति ६४।५५ स्पष्ट मध्य कालांश की अंतर कला१५०के गत्यंतर८६०।४४के भागसे लब्ध दिनादि०।५।२९

जिससे सूर्योदय घटी५।२९ चंद्रोदयभुक्ति ४०० कलादि६।४३रविफलको अंतर घटीसे गुणके चंद्रभुक्ति ५२९९ चंद्रफल अंशादि १ । २८ । १९ फलयुक्तरवि ९ । ४ । ४१ । ५८ फलयुक्तचंद्र १० । २१ । २६ । ३४ अंतरघटी ७ । १७ स्थिरसायनरविः ३ । ४ । ३५ । ५ सौम्यक्रांति १४३४ । ३४ चंद्रकी स्पष्ट क्रांति याम्य ५४७ । ४७ क्रांतिके दिग्भेदसे योग १९८२ । २१ इसकी ज्या १८७३ ।४७ याम्य अथ मध्याह्न चंद्र की प्रभा और कर्ण लानेकी विधिः—चंद्रभुक्ति ७४८ । ३ को नत घटी २२ । २७से गुणके अंशादि ४ । ३९ । ५४ सायनकालीनदृक्कर्मज चंद्रमें युक्त किये मध्याह्न समय स्पष्टचंद्र १० । ८ । १९ । २१ सायन १० । २४ । ३५।५२ याम्य क्रांति ८१७ । ८ मध्याह्न पात ७ । १४ । ३७ । ६ सौम्य विक्षेप २६८ । १९ याम्य स्पष्ट क्रांति ५४८ ।४१ एकदिशि कारण योग २०८५ । ५८ इसकी ज्या १९४९ ।३५ कोटिज्या २८२ ३ । ३० भुजज्या को १२ गुणके २३३९५ । ० कोटिज्या के भागसे लब्ध छाया ८ । १७ त्रिज्याको १२ गुण ४१२५६ के कोटिज्याके भागसे लब्ध कर्ण १४।३६ पूर्वानीतज्या १८७३ । ४७ को कर्णसे गुणके २७३५७ । १४ फिर १२ गुणके अक्षज्या १७८३२ दोनोंका योग ४५१८९ । १४ लंबज्याके भागसे लब्ध याम्य बाहु १४ । ३४ इसका वर्ग २१२ । ११ कोटि १२ इसका वर्ग १४४ दोनोंका योग ३५६ । १ १ इसका मूल कर्ण १८ । ५२ सषड्भरविः ८ । १८।१८।३४ दृक्कर्म चंद्र १० । ३।३९।२७ में सूर्य हीनकिये १ । १५ । २० । ५३ इसकी कला २७२०।५३ नवशत ९०० के भागसे लब्ध शुक्ल ३ । १ चंद्रबिंब १० । ६ से शुक्लको गुणके ३० । २८ द्वादश १२ के भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल २। ३२ अथ शृंगोन्नतिव्याख्यानं—जिस दिनको चंद्रशृंगोन्नति देखै उस दिन सायंकालीन रवि और चंद्रस्पष्ट करके फिर दृक्कर्म संस्कार चंद्रमाके देना उस की स्पष्ट क्रांति करनी यदि क्रांतिकी दिक्साम्यता हो तो अंतर करना. भिन्न दिशा हो तो योग करना. फिर जो गणित हो जिसकी ज्या कर लेनी

चाहिये सूर्यसे चंद्रमा जिस दिशामें हो उसी दिशा की ज्या होती है. फिर चंद्रकी नतघटीसे चंद्रभुक्ती गुणके फिर षष्टि ६० भागसे लब्धकलात्मक फल प्राप्ति हो वह प्राक्पाली चंद्रदृक्कर्म चंद्रमें युक्त करदेना. यदि प्रत्यक्पाली चंद्र हो तो हीन करनेसे चंद्र मध्याह्न समयमें स्पष्ट चंद्र होताहै. फिर नतघटिकासे पात चंद्रको माध्याह्निक करके फिर उसकी क्रांति कर लेनी फिर त्रिप्रश्नाधिकारमें जिस विधिसे छाया और कर्णसाधन किया उस विधिसे कर्ण साधके ज्याको गुण लेनी चाहिये. वह ज्या यदि उत्तर हो तो द्वादश १२ से अक्षज्याको गुणके फिर उक्तज्या इसमें हीन किये याम्य शेष होताहै. लंबज्याके भागसे याम्य भुज होताहै. यदि द्वादश गुणित अक्षज्यामें कर्णगुणित उत्तरज्या हीन होय तो विलोमविधिसे शोधन किये शेष सौम्य होताहै. द्वादशांगुल शंकुका वर्ग करके फिर भुजवर्ग करलेना दोनों वर्गोंका योग करके उसका मूल लेना बस उसीका नाम कर्ण है. सूर्य हीन करके फिर उसी चंद्रमाकी कला करलेनी फिर उसके नवशत ९०० के भागसे मध्यम शुक्ल होता है फिर मध्यशुक्लमानको चंद्रबिंबांगुलसे गुणके द्वादश१२ भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल होताहै. फिर जलवत् समान भूमिपै दिक्साधन करके सूर्यसंज्ञक बिंदुचिह्नकरके सौम्य भुज हो तो सौम्य देना याम्यभुज हो तो याम्य देना चाहिये. फिर भुजसे पश्चिमाभिमुख द्वादशांगुलात्मक कोटि देनी चाहिये सूर्यसंज्ञक बिंदुके और कोटिके अग्रभागके मध्यमें कर्ण देना. कोटि और कर्णके योगमें चंद्रबिंबार्द्धांगुल मंडल लिखना उसी जगे मंडलमें कर्ण सूत्र करके दिक्सिद्धि कल्पना करनी कर्ण और बिंबके योगमें मंडल मध्य कर्ण सूत्रमार्ग करके शुक्ल देदेना चाहिये. शुक्लाग्रसे याम्योत्तर रेखा करनी चाहिये. फिर रेखाके अग्रभाग जहां लगे तहां बिंदुका चिन्ह देना. फिर बिन्दुके सम्मुख दक्षिणोत्तर रेखामें बिंदुका चिन्ह करना वही दक्षिणोत्तर बिंदुसे मत्स्यसाधना चाहिये मत्स्यके मध्यमें सूत्र प्रसारना चाहिये. सूत्र और बिंदुका जहां योग तहां बिंदु विधान करना कोटिकर्णादि साधनविधिसेही भुजांत उन्नत शृंग चंद्रमाकी जाननी कोटिको ऊंची

उठाके चंद्रमाकी आकृति नलिकामें देखलेनी चाहिये अथ चतुर्थ केंद्रके वक्रारंभभागाः—मंगलके १६४ बुधके १४४ गुरुके १३० शुक्रके ८३ शनिके ११५ अथ चतुर्थ केंद्रके मार्गारंभभागाः—मंगलके १९६ बुधके २१६ गुरुके २३० शुक्रके २२७ शनिके २४५ एक युगमें ६०० भगण अयन ग्रहके हैं. अथ ग्रहों के आर्यसिद्धांतके मतसे बिंबव्यासाः—सूर्यके ६५०० चंद्रके ४८० हैं और मंगल १३ बुध २१ गुरु ३१ शुक्र ६३ शनि १५ अथ नक्षत्र कलादिध्रुवाः—अश्विनी ४८ भरणी ४० कृत्तिका ६५ रोहिणी ५७ मृगशीर्ष ५८ आर्द्रा ४ पुनर्वसु ७८ पुष्य ७६ आश्लेषा १४ मघा १४ पूर्वाफाल्गुनी ६४ उत्तराफाल्गुनी ५० हस्त ६० चित्रा ४० स्वाती ७४ विशाखा ७८ अनुराधा ६४ ज्येष्ठा १४ मूल ६ पूर्वाषाढा ४ उत्तराषाढा ० अभिजित् ० श्रवण० धनिष्ठा० शततारा ८० पूर्वाभाद्रपदा ३६ उत्तराभाद्रपदा ३२ रेवती ७९ अथ नक्षत्रोंके ग्रह विक्षेप (शर) भागा.—अश्विनीउ. १० भरणी उ. १२ कृत्तिका उ. ५ रोहिणी दक्षि०५ मृगशीर्ष १० आर्द्रा ९ पुनर्वसु ६ पुष्य ० आश्लेषा द.७ मघा ३० पू.फा.१२उ.फा.१३ हस्त द. ११ चित्रा २ स्वाती उत्तरा ३७ विशाखा दक्षिण १॥ अनुराधा द.३ ज्येष्ठा द. ४ मूल द. ९ पू.षा द.५॥ उ. षा द. ५ अभिजित् उ. ६० श्रवण उ. ३० धनिष्ठा उ. ३६ शततारा द.॥ पूर्वाभाद्रपदा उ. २० उ. भा. उ. २६ रेवती० अगस्तिभाग द. ८० कर्कादि भागमें है. ध्रुव ३ राशिलब्धक ध्रुव २ राशि २० अंश दक्षिण ४ भागपर है. और वृषराशिके २२ के अंश ऊपर अग्नि और ब्रह्म हृदयको ध्रुव है. अग्नि ८ ब्रह्म हृदय ३० का विक्षेप उत्तरकी तरफ है. अथ रोहिणीके वेध जाननेकी विधिः—वृषराशिके ७ अंश ऊपर ग्रह प्राप्ति होवे और उस ग्रहको दक्षिण शर २ अंशतक होवे तो निश्चय ग्रह रोहिणी को भेदन करता है. नहीं तो नहीं करता है. अथ ग्रहनक्षत्रके बरोबर आजावे सो जाननेकी विधिः—पू. फा. उ. फा. पू. भा. उ. भा. पू. षा. उ. षा. विशाखा अश्विनी मृगशीर्ष इनका योग तारा उत्तरके हैं. हस्तका पश्चिमोत्तर

द्वितीय तारा है. धनिष्ठाके पश्चिम तारा ज्येष्ठा श्रवण अनुराधा. पुष्यके मध्यम तारा (बीचके) है. भरणी, कृत्तिका, मघा, रेवती इनके दक्षिण योगतारा है. रोहिणी, मृगशीर्ष, मूल और आश्लेषा इनके पूर्वके योग तारा है उक्त योग तारा पुष्ट और तेजयुक्त है. अथ ग्रह और नक्षत्रोंके कालांश जाननेकी विधिः—चंद्रका १२मंगलका १७बुधका पूर्वमें १२ पश्चिममें १४ गुरु ११शुक्रका पूर्वमें८पश्चिममें १०शनि १५स्वाति अगस्त्य मृगव्याध चित्रा ज्येष्ठा पुनर्वसु अभिजित् ब्रह्महृदय इन्होंको १३हस्त श्रवण फाल्गुनी दोनों धनिष्ठा रोहिणी मघाके १४विशाखा अश्विनीके १४कृत्तिका अनुराधा मूल आश्लेषा-आर्द्रा . पू. षा. उ. षा. के १५ भरणी पुष्य मृगशीर्षके २१शततारा. पूर्वोत्तराभाद्रपदा रेवती अग्नि ब्रह्मा अपांवत्स इन्होंके १७ अंश सूर्यके अंतरसे उदयास्त होताहै और अभिजित् ब्रह्महृदय स्वाति श्रवण धनिष्ठा उत्तराभाद्रपद यह नक्षत्र उत्तर दिशामें जियादा होनेसे और उनका उत्तरशर जियादा होनेसे सूर्यसे अस्त नहीं होतेहैं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते उदयास्तादि-
कथनं नाम पंचदशविनोदः ॥ १५ ॥

अथ कालज्ञानम्—यह कालज्ञान शास्त्रकारोंनें अनेक रीतियोंसे लिखाहै और जिसके लिये अनेक यंत्र लिखे और बनायेहैं परंच वह यंत्र सूर्यसे ही कालसूचना कर सक्तेहैं. सूर्यास्त होने पीछे यंत्रोंकी कुछ उपाय चलसक्ता नहीं और रात्रिमें कालका ज्ञान चंद्रमासे वा तारागणोंसे भी लिखाहै. परंच जब बद्दल होजावें तब दिन वा रात्रि इन दोनोंहीमें कौन यंत्र वा शंकु काम देवेगा. अतएव ऐसी दशाके बीच इष्टज्ञान होना बड़ा मुष्किल है.जिसके लिये जलकी घटीयंत्र एक एक गांवमें पंचायतसे वा राज्यस्थानसे जरूर होना चाहिये अथवा (स्वयंभ्रमण) इंग्रेजी घटी होनी चाहिये जिससे इष्टज्ञान की भूल न रहे क्योंकि कालज्ञानके विना संसारका कोईभी काम ठीक ठीक नहीं बनसक्ता। इति कालज्ञानम्. अथ चंद्रदर्शनम् —यह चंद्रमा अमावस

के दिन हमेशा सूर्यके तुल्य राशिअंश कला विकला समान होके सूर्यके साथ ही उदयहोके और सूर्यके साथही अस्तहोताहै, जिससे पृथ्वीकी प्रजाको नहीं दीखसकता और दूसरे दिन १२अंशोंका अंतर पाके फिर उदय होगा तो फिर भी सूर्यके समीपही रहनेसे नहीं दीख सकेगा, और जब द्वितीयाके दिन २४ अंशोंके अंतरसे चंद्रमा सूर्यके प्रकाशसे सायंकालमें किंचित् दीखपरेगा फिर तृतीयाको कुछ विशेष चतुर्थीको उससे कुछ विशेष ऐसे प्रतिदिन विशेष दीखता २ पूर्णमासीके दिन सूर्य अस्त होगा जब उसीसमय चंद्रमाका उदय होगा. जिससे सूर्यका प्रकाश चंद्रमाके परिपूर्णबिंबमें समसूत्रके आजानेके कारणही चंद्रबिंब प्रजाको पूर्णिमाकी रात्रिभर परिपूर्ण दिखलाई देतारहेगा और फिर सूर्यके सम सूत्रकी न्यूनता होती जायगी त्योंत्यों हीन कलाभी चंद्रमाकी होती चलीजायगी.उक्त चंद्रमाका प्रकाश सूर्यसेही केवल आरसी-वत् है,स्वतःप्रकाशी नहींहै किंतु यह चंद्र परप्रकाशी है, इति चंद्रदर्शनम् ॥

अथ त्रैराशिकगणितकी व्याख्याः—यह त्रैराशिक गणित सबगणितोंमें व्याप्त होरहाहै. व्यक्त और अव्यक्त गणित जितने प्रकारके हैं वे सब त्रैराशिककेही आश्रित हैं जिसकारण ज्योतिर्विदको चाहिये कि, त्रैराशिक गणितका प्रथम अभ्यास वारंवार करै उक्त गणितका अनुभव जिसको स्पष्ट होजायगा तो वह पुरुष कभी कोई गणितमें न ठगावेगा उक्त त्रैराशिक गणित लोम विलोम दोप्रकारसे है १ फल १ इच्छा २ सजातिमान् ३ इन तीन भेदोंसे विभूषित है. अमुकको इतना मिलै तो इतनेको कितना मिलै ऐसे अमुक तो सजातिमान्-इतना फल २ और इतनेको कितना मिलै यह इच्छा कहलातीहै ३ जब कोई भी गणितविषयमें इच्छासे फलको गुणके और सजातिमान्के भागसे लब्ध लेवे इसीका नाम तो लोम त्रैराशिक है और सजातिमान्से इच्छाको गुणके फलके भागसे लब्ध अंक लेना इसीका नाम विलोम-त्रैराशिक है अब इन दोनोंका थोडा उदाहरण लिखतेहैं. ऐक रुपयेकी ५ शेर

१ एक रुपयेकी ५ शेर वस्तु मिले तो ५ रुपयेकी पचीस शेर मिले. और तीन वर्षके बैलका १००रुपया तो १० वर्षके बैलका ३० रुपया क्योंकि वह बूढाहुवाहै ।

वस्तु मिले तो पाँच रुपयेकी कितनी मिलै ? यह त्रैराशिक लोम कहलाताहै और ३ वर्षके बैलका १०० रुपया तो १० वर्षके बैलका क्या ? यह विलोम त्रैराशिक कहलाता है विशेष लिखना तो व्यर्थ है परंतु जैसे विष्णु सर्व चराचरके व्यापक हैं ऐसे त्रैराशिक गणितभी सब गणितोंमें व्यापक होरहाहै

अथ परिकर्माष्टक समझेनकी विधिः–उक्त गणितके आठ भेद हैं. वे क्रमसे १ वियुक्त २ युक्त ३ गुण ४ भाग ५ वर्ग ६ वर्गमूल ७ घन और ८ घनमूल. जिनमें एक अंकमें दूसरे अंकको निकाल देनेका नाम वियुक्त गणित है १ एकमें दूसरे अंकको जोडदेनेका नाम युक्तगणित है २ इसके बराबर इतनातक कितना होय यह गुणाकार कहलाता है ३ और अमुक गणित का इतना भाग करदेना वही भागाकार कहलाताहै ४ और दोनों अंक समानका गुणक वर्ग कहलाताहै ५ यह कितना अंक परस्परमें गुणा हुवाहै जिसको जान लेनेका नाम मूल कहलाता है ६ एक अंकको गुणके फिर उस अंकसे गुणाहुवा अंकको फिर गुणना वह अंक घन कहलाता है ७ और उक्त घन कितने अंकसे गुणाहुवा है ऐसे जान लेना बस यही घनमूल कहलाता है.

अथ भगणादिमानम्–एक महायुगमें सूर्य बुध शुक्रके ४३२०००० (राशि) भगण हैं. मंगल शनि और गुरु शीघ्रोच्चके भी ४३२०००० पूर्वोक्त भगण है. चन्द्रके ५७७५३३३६ मंगलके २२९६८३२ बुध शीघ्रके १७९३७०६० गुरुके ३६४२२० शुक्र शीघ्रके ७०२२३७६ शनिके १४६५६८ चन्द्रोच्चके ४८८२०३ राहुके २३२२३८ सप्त ऋषियोंके १६०० नक्षत्रोंके १५८२२३७८२८ भगण है और ऐसे ही एकमहायुग में १५७७९१७८२८ सावनदिन (सूर्य उदय) होते हैं और उक्त महायुगमें चांद्रदिन १६०३०००००८० होतेहैं. अधिमास १५९३३३६ होते हैं. क्षयतिथि दिन २५०८२२५२ और रविमास ५१८४०००० होतेहैं. अथ मंदोच्चभगणाः–एक कल्पमें सूर्यके ३८७ मंगलके २०४ बुधके ३६८ गुरुके ९०० शुक्रके ५३५ और शनिके ३९ मंदोच्च भगण

होतेहैं. अथ पातभगणाः—मंगल पातके २१४ बुधके ४८८ गुरुके १७४ शुक्रके ९०३ और शनि पातके ६६२ भगण एक कल्पमें होते हैं. अथ ज्यार्द्धखंडाः—प्रथम ६१११४४९२२५ द्वितीय १३१५११०५८९० तृतीय १७१८१५२० चतुर्थ २०८३१८१० पंचम २४३१३२६७ षष्ठ २७२८२५८५ सप्तम २९७८२८५८ अष्टम ३१७८३०८४ नवम ३४०८३३७२ दशम ३४३८३४३१ अथ उत्क्रमज्यार्द्धखंडाः— प्रथम ७६६२८७ द्वितीय ३२४२६११८२ तृतीय ८२३७१०२७९ ४६० चतुर्थ ११११००७ पंचम १५२८१३४५ षष्ठ १९१८१८ १९ सप्तम २३३३२१२३ अष्टम २७६७२२४८ नवम ३२१३२९ ८९दशम३४३८अथ परमापक्रमज्या१३८७—अथ ग्रहोंके परिध्यंशाः— रविके मंदपरिध्यंशाः १४ चन्द्रके ३२ यह युग्मांत मंद परिध्यंश कहलाता है. और सूर्यके १३।४० चन्द्रके ३१।४० यह ओजांत परिध्यंश कहलाताहै. युग्मांत मंदपरिध्यंश भौमके ७५ बुधके ३० गुरुके ३३ शुक्रके १२ शनिके ४९ ओजांत मंदपरिध्यंश भौमके ७२ बुधके २८ गुरुके ३२ शुक्रके ११शनिके ४८ युग्मांत. शीघ्र परिध्यंश भौमके २३५ बुधके १३३ गुरुके ७० शुक्रके २६२ शनिके ३९ ओजांत शीघ्र परिध्यंश मंगलके २३२ बुधके १३२ गुरुके ८२ शुक्रके २६० शनिके ४० ओजांत शीघ्र परिध्यंश समझना चाहिये. अथ न्यूनाधिकमासकी व्याख्या. सौरवर्ष ३६५ दिनोंके लगभगसे अपनी अपनी ऋतुवोंका धर्म सृष्टिमें वर्ता रहा है. और चांद्रवर्ष ३५४ दिनोंके लगभग दर्श पूर्णिमायाग जो कि, वैदिक धर्मको सृष्टि में वर्ता रहा है जब सौर वर्ष और चांद्र वर्ष इन दोनोंके मिलनेसे वसंतादि ऋतुवोंमें वैदिक धर्मोंकी सदैव प्रवृत्ति होती है. जिसमें चांद्रवर्षकी परिपूर्णता हुये पश्चात् दिन११सौर वर्ष अधिक होनेके कारणसे तीसरे वर्ष अधिक मासका अवश्य संभव है. और उक्त सौर चांद्रकी गडबडसे ही क्षयमासका संभव है उक्त क्षयमास होनेके पश्चात् १४१ वर्षसे फिर वही क्षयमासका संभव है फिर १९ वर्षसे संभव होके उक्त वर्षोंमें ही फिर संभव होताहै.

अथ भूकंपलक्षणम्-इस पृथ्वीमें गंधक हरताल आदि धातु वगैरे और ज्वालामुखी पर्वतोंसे युक्त जहां मर्मभूमी है. तहां भूमिगत जल गर्म होके उसकी बाफरूप वायु बाहिर निकसती है इस वायु के कहीं पर्वतादिकोंके रोक टोकसे निकासको मार्ग नहीं मिलनेके कारण भूकंप होता है.और उस बाफके जोरसे पर्वतादि जमीन फाटनेके कारण शब्द होताहै.जहां पर्वत नहींहै उस जगे भूकंपही केवल होताहै शब्द नहीं होता. पर्वतोंकी जमीनमें शब्द सहित भूकंप होताहै. अथ महामारीलक्षणम्. उक्त बाफरूप वायु कहीं विष आदि दुष्टवस्तुवोंसे स्पर्श करतीहुई पृथ्वीकी प्रजाको अनेक प्रकार के रोगोंसे परिपीडित करके प्राणबाधा देतीहै जिसको महामारी कहतेहैं और वही बाफरूप वायुके साथ जल का सूक्ष्म बिंदु आकाशमें चढके फिर भूवायुकी अधिक शीतलताके कारण दृढ बर्फ रूप होके सूर्यके प्रकाशसे चंद्रवत प्रकाशित अनेक भेदोंसे प्रजाको दीख पडतेहैं उसको ऊंचेसे लंबा होनेके कारण तो शिखायुक्त केतु कहतेहैं और नीचेसे लंबाईके कारण पुच्छयुक्त केतु कहते हैं. फिर औरभी इस बाफरूप वायुसे गंधर्वनगर इंद्रधनुष और सूर्य चंद्रादिकोंका मंडल परिवेष आदि बहुतसे विकार बनते हैं और सूर्य चंद्रादिकोंके ग्रहणोंमें कोई समय अंतर आजाता है वे सब इसी भाफरूप वायुके कारणसेही है. और कितने भोले भाले मनुष्य बीज संस्कार देते हैं वे सब कपोलकल्पितही समझना चाहिये. और बादल वर्षाभी इसी भाफरूप वायु सूर्य के तेजकाही बनजाताहै. और जिस बद्दलोंमें प्राप्त हुवा जल स्वतः नहीं वर्षसक्ता किंतु वह जल वर्षना भूवायुके आश्रितहै. कहीं भी बद्दलके मुँहसे वाँयु बद्दलके अभ्यंतर प्रवेश करके फिर भंग छाननेवाला पुरुष

---

१ तत्त्वविवेके. ये केतवोरिष्टफलप्रदाः खेम्बुदाश्च भूकंप इहास्ति लोके ॥ मारीम्हाख्या करकप्रपाताद्यं सर्वमित्थं किल बाष्पतोऽत्र॥ २ अनेकवर्ण वियतींद्रचापं ग्रहाः समंतात्परिवेषउक्तः ॥ तथैव भानां पतनं च विद्युत्तथैव गंधर्वपुरं विचित्रम् ॥ ३ ऊर्ध्वं कुणेलादथ एव चाग्नेर्भूवायुरस्त्यत्र सदैव शीतम् ॥ महत्कुतोकैरपि योजनैःसद्वाष्पांबुदाद्यं जनयत्यपूर्वम् ॥ ३ ॥

४ प्रमाण. यजुर्वेदमें आपस्तंबशाखाकी संहिताके दूसरे अष्टकके चौथे अध्यायके ग्यारहवें अनुवाकमें हैं. अग्निर्वायुतो वृष्टिमुदीरयति मरुतः सृष्टां नयंति यदा खलु वा असावादित्योन्यङ्‌ रश्मिभिःपर्यावर्ततऽथ वर्षति ।

जैसे वस्त्रामें हाथ डालके हिलावे वैसे वह वायु बद्दलको हिलानेसे अतिशय वर्षा वर्षतीहै और कभी कोई जलयुक्त बद्दलमें वायुको उसके अभ्यंतर जाने का मार्ग नहीं मिलनेके कारण वह बद्दलका जल जमके बर्फ होजाताहै फिर कोई दिन वायुके अतिशय जोरसे उस बद्दलके मार्ग होके उक्त वायुसे उस बर्फके खंड खंड होके पृथ्वीपर आनके वर्षतेहैं वे माडवारमें ओले कहलातेहैं भाफरूप वायु और भूवायु यह दोनों परस्परमें भिडके और उसके अंदर सूर्यकी किरणोंसे बिजली बनतीहै और जितने विकार हैं वे सब भाफ और वायुके कारणसेही हैं और इसमें दूसरा कारण कोईभी नहीं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते (मिश्रप्रकरणकथनं) विविधवर्णनं नाम षोडशविनोदः समाप्तः ॥ १६ ॥ श्रीरस्तु.

अथ पंचांग बनानेकी विधि प्रारंभः-तिथि वार नक्षत्र योग और करण इन पांचोंका गणित है वह पंचांग कहलाताहै उक्त पंचांगका गणित सिद्धांतसे लाना बडा कठिन है प्रथम तो सिद्धांतविद्या आज कलके लोग पढतेही नहीं और कोई पढाभी है तो गणित करनेके आलस्यसे कुछ नहीं करसकता. यदि आलस्य छोडके उक्त सिद्धांतगणितसे तिथ्यादि पंचांग बनावेगा तो वह महाशय कितने दिनोंतक गणित करता करता थक जावेगा और आखिर एक वर्ष भरका बनाभी लेगा तो दूसरे वर्षमें उसको छोडनाही होगा. क्योंकि इतना बडा गणितका काम प्रतिवर्षका करना बड़ा मुष्किल है इसके लिये यहां गणेशदैवज्ञकृत पंचांग बनानेकी विधि इस ग्रंथमें लिखते हैं. उक्त पंचांग बनाने के ग्रंथ तो और भी अनेक हैं. परंच उनका गणित आज कलके समयमें ठीक ठीक नहीं मिलता. क्यों कि, संवत् १९४७ के वैक्रमीय वर्षमें सूर्यग्रहणका गणित सूर्यसिद्धांतवालोंका और ग्रहलाघव वालोंका ही यथार्थ मिला और चंद्रशृंगोन्नत्यादि वा चंद्रमाका उदयास्त इसी से ही यथार्थ दृष्टपै मिलता है और कोंकण, मालव, मेवाड, द्राविड, और महाराष्ट्र आदि मुंबई देशोंमें ग्रहलाघवीय पंचांगहीकी मान्यता है और बड़ेबड़े

श्रीमानोंके जन्मपत्रमें भी ग्रहलाघवसेही ग्रह स्पष्ट उत्तम ज्योतिर्विदोंका कराहुवा देखनेमें आयाहै. और हमारे बड़ेबूढे महात्मा पुरुषाओंके मुखसेभी हमने सुनाहै कि, ग्रहलाघव का गणित सब और गणितोंसे फिर भी अच्छा है. ऐसी ऐसी बातोंपर विश्वास धरके ग्रहलाघवका गणित यहां लिखते हैं क्योंकि, इसमें ब्रह्म १ सौर २ आर्य २ तीनों पक्षके ग्रह जो जिस पक्षमें दृग्गणितसे ठीक मिला वही रक्खा है.जिसमें मयदानवको सूर्यांश पुरुषनें वर्णन किया ऐसे सूर्यसिद्धांतगणितके अनुकूल गणितहै वह तो सौरपक्षका कहलाता है. और ब्रह्मा नारद के संवादका शाकल्यसंहितोक्त ब्रह्मसिद्धांतका भी गणित सूर्यसिद्धांतके (सदृश) तुल्यही आता है परंच ब्रह्मगुप्तनाम आचार्यका बनायाहुवा एक ब्रह्मसिद्धांत है जिसका गणित इससे निराला है वह गणित ब्रह्मपक्षका कहलाताहै. और आर्यभट्टकृत कुसुमपुरमें जो कि आर्य सिद्धांत बनाया उसका गणित आर्यपक्षका समझना चाहिये अब यहां सूर्य स्पष्ट सौर पक्षसे चंद्रोच्च श्रीसौरपक्षसे और नवकला ऊन चंद्र सौर पक्षसे गुरु आर्यपक्षसे और मंगल राहू भी आर्यपक्षसे सिद्धदृक् अल्प किया है बुधकेंद्र ब्म्हसिद्धांतसे दृक्तुल्य लिया और शनि स्पष्ट आर्यसिद्धांतसे करके फिर पांच अंश इसमें और युक्त करके दृक्तुल्य माना है शुक्रकेंद्रका गणित आर्यसिद्धांतसे और ब्रह्मसिद्धांतसे स्पष्ट करके इन दोनोंका योग करके फिर उसका अर्द्धभाग लेके दृक्तुल्य मानाहै इसी प्रकार जिस समयमें उक्त ग्रंथकी रचना हुईथी उस समयमें तो सारे ग्रह दृक्तुल्यही थे परंच कोई महाशय कहतेहैं कि कुछ अंतर आने लगगया परंच और करणके ग्रंथोंसे तो फिरभी ठीक गणित आताहै.अब पंचांग रचना करनेवालोंको प्रथम उस वर्षका उपकरणसाधन करना चाहिये जिसकी विधि गणेशदैवज्ञकृत लघुतिथिचिंतामणिसे लिखतेहैं जिस वर्षका पंचांग बनावे उस शाकेमें १४४७हीन कराहुवा शेषांकको १००७ से गुणके समौघसमझके फिर ८०० के भागसे लब्ध तीन स्थानमें अंक लेवे फिर समौघके ४३ भागसे लब्ध अंकसे पूर्वानीत अधस्थ पलोंसे जोडके फिर ४। ४५। २७ और युक्त करनेसे

अब्दप होताहै. इसके देशांतर संस्कार देना चाहिये वह मध्यरेखा लंका, देवकन्या कांची शीतपर्वत पर्यली, वत्सगुल्म, उज्जैन, गर्गराट, वैराट, ढोसी, कुरुक्षेत्र, और सुमेरुके सूत्रतक गई हुई है. उक्त रेखाके ग्रामोंसे देशांतरयोजन में चतुर्थांश हीन करके पूर्व बसनेवाला अब्दपकी पलोंमें युक्त करे और पश्चिमका बसनेवाला अब्दपकी पलोंमें उक्त देशांतर पलोंको हीनकिये स्पष्ट अब्दप होताहै अथ तिथिशुद्धि लानेकी विधिः— समौघको ११ गुणके दो जगे रखके एक जगेसे६००० के भागसे लब्ध अंशादिकसे तीन अंक लेके दूसरी जगहोंके अंकमें हीन करके फिर समौघके १५के भागसे अंशादि तीन अंक लब्ध लेके उसमें युक्त करे और ५ । ५४ । २४ फिर युक्त करके ऊपरि अंक ३० के भागसे शेष करनेसे शुद्धि होती है. अथ ध्रुव लानेकी विधिः—शुद्धिके केवल घटीपलोंको षष्टि शोधित किये तिथि ध्रुव होता है. और शुद्धिको दोजगे रखकर एक जगे दशके भागसे लब्ध लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर उक्त घटी पलोंको षष्टि शोधित करके ऊपरवाले अंकमें एक और युक्त किये नक्षत्र और योगका एकही ध्रुव होताहै. अथ तिथिमध्य केंद्र लानेकी विधिः— समौघके चारके भागसे शेष अंकको ७ से गुण फिर समौघके ६ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके उसमें युक्त करे और समौघके ३२१ भागसे लब्ध में तीन अंक इसीमें हीन करके फिर ४ । ३४ । १५ जोडके उपरि अंकके २८ भागसे शेष किये तिथिमध्यकेंद्र होताहै अथ नक्षत्र और योग मध्य केंद्र लानेकी और स्फुटकरनेकी वि०—तिथिमध्य केंद्रको दोजगे रखके एक जगेसे ३६ के भागसे लब्ध तीन अंकलेके दूसरी जगेके अंकमें हीन किये नक्षत्र मध्यकेंद्र होताहै. और उक्त तिथिमध्य केंद्रकोही दोजगे रखके एक जगे२२ भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें युक्तकिये योगमध्य केंद्र होताहै. और तिथि नक्षत्र और योग मध्य केंद्र की घटी पलोंमें अपनी अपनी ध्रुव घटी पल युक्त किये तिथि, नक्षत्र और योगके स्पष्ट केंद्र होते हैं. अथ भोगसाधनविधिः—तिथि ध्रुवके उपरि

अंकको त्यागके फिर उसकी घटी पल दोजगे रखके एक जगेके ६४ के भागसे दो अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्त किये तिथि भोग होताहै. नक्षत्र ध्रुवकी उक्त घटी पल दोजग्गे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध दो अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर अब्दपमें युक्त किये नक्षत्रभोग होता है. ऐसेही योग ध्रुवकी उक्त घटीपल दोजगे रखके एक जगे १७ के भागसे लब्ध दोअंक लेके दूसरे अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्तकिये योग भोग होताहै. अथ भभोगसाधनविधिः—नक्षत्र स्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको दोजगे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर उपरि चारादि अंकके ७ के भागसे शेष करके नक्षत्र भोगमें हीन किये भभोग शुद्ध होता है। इति उपकरण बनानेकी विधिः ॥ अथ कोष्ठक बनानेकी विधिः—चैत्र शुदि प्रतिपदासे गत तिथियोंमें तिथि ध्रुवके उपरि अंकको हीन किये कोष्ठक होताहै. उक्त तिथि कोष्ठकको दोजगे रखके ३६ भागसे लब्ध एकअंक लेके दूसरेमें हीनकिये नक्षत्रकोष्ठक होताहै. और उक्त तिथिकोष्ठकको दोजगे रखके २२ के भागसे लब्ध एक अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त किये योग कोष्ठक होताहै.अथ पराख्यसाधनविधिः—अपने अपने तिथि नक्षत्र और योगस्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको अपने अपने उक्त कोष्ठकोंमें युक्त करनेसे पराख्य कोष्ठक होताहै. अथ तिथिसाधनविधिः—तिथिकोष्ठकसारिणीमें तिथिभोग युक्त करके फिर तिथिपराख्य कोष्ठकमें पराख्य घटी पल ऋण धन जैसी हो तैसीकर देनी चाहिये.फिर उक्त तिथिस्पष्टकेंद्र घटीपलके पराख्य कोष्ठक के नीचे हार घटीके भागसे लब्ध दो अंक लेके उक्त तिथिकी पराख्य संस्कारित घटी पलोंमें ऋण धन जैसा हार हो वैसा संस्कार देनेसे तिथिकी वार घटी और पल स्पष्ट होतेहैं ॥ अथ नक्षत्रसाधनविधिः—नक्षत्रपराख्यकोष्ठकसारिणीमें भभोग युक्त करके फिर नक्षत्र स्पष्ट केंद्रकी घटी पलोंके पराख्य कोष्ठकके नीचेकी हार घटीके भागसे लब्ध घटी पल दोअंक लेके जैसा ऋण धन हार है वैसा संस्कार देनेसे नक्षत्रका वार घटी

और पल स्पष्ट होतेहैं. इसके पराख्यसंस्कार नहीं देना चाहिये अथ योगसाधनविधिः—योगकोष्ठकसारिणीमें योग भोग युक्त करके फिर उक्त तिथि सदृश पराख्य और हार संस्कार देनेसे योगकी घटी पल होते हैं. अथ तिथिवृद्धि और क्षय जाननेकी विधिः—जब तिथि स्पष्ट होते होते अनुक्रमका वार छोडके अधिक वार गणितमें आजावे तो वह तिथि पूर्वदिन६०घटी भोगके फिर दूसरे दिनभी उक्त घटी पलोंतक भोगेगी. इसको तिथिवृद्धि समझना चाहिये. और क्रमसे प्रतिदिन वार तिथि स्पष्टके जो आताहै वह वार दूसरे दिन भी आजावे जब तो उसको क्षयतिथि समझना चाहिये. उक्त क्षय तिथिकी घटी पलोंमें पूर्व तिथिकी घटीपल हीन करके फिर पंचांगमें रक्खी जातीहै.॥

अथ नक्षत्र और योगके स्पष्ट गणनाविधिः—नक्षत्र और योग ध्रुवको निज निज कोष्ठकमें युक्त करके फिर २७ के भागसे शेष रहै उसको वर्तमान उस दिनका नक्षत्र और योग समझना चाहिये इनकी क्षय वृद्धि उक्त तिथि सदृशही होतीहै. ऐसे प्रतिदिन एक एक कोष्ठक बढानेसे तिथि वार नक्षत्र योग स्पष्ट होताहै. और उक्त तिथिके भोगको आधा करनेसे कर्ण स्पष्ट भोग होताहै.

अथ अधिक मास और क्षयमास स्पष्ट जाननेकी विधिः—चैत्र शुदि प्रतिपदासे एक एक माससे अमावस्यापर्यंत जब उक्त मेष आदि संक्रांति नहीं आवे तो चैत्र आदि उसको अधिक मास और उक्त एक मासमें दो संक्रांति हों जिसको क्षयमास समझना चाहिये. और पंचांगका प्रारंभ गणित मेषसंक्रांतिसे दो दिन पीछे होता है. जिसके पहले का गणित पूर्व वर्षके उपकरणोंसे ही कर लेना चाहिये. जब पंचांग करते करते पराख्य वा हार कोष्ठक की समाप्ति होजावे तो सारिणीके प्रारंभ कोष्ठकसेही ज्योतिर्विद पराख्य और हारकोष्ठक ले लेवेंगे.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते पंचांगस्पष्टविधिवर्णनं नाम सप्तदशविनोदः ॥ १७ ॥

प्रतिवर्ष उपकरणसारिणी ध्रुवा ।

अ–ब्दप	ति. शु	ति. ध्रु	न. ध्रु.	यो. ध्रु.	ति. म.	न. म.	यो म.	ति. स्प	न. स्प	यो. स्प.	ति. भो.	न. भो.	यो. भो.	भ. भो.
१	११	१०	१०	१०	७	६	७	७	७	७	१	१	१	१
१५	३	५६	२	२	९	५७	२९	६	०	३१	१५	१८	१७	१३
३१	४८	१२	३५	३५	४९	५२	२१	१	२३	५६	४८	९	५७	९

ब्रह्मपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्द	शुद्धि	ति.धु.	न.ध्रु.	यो.ध्रु.	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भो.	न.भो.	यो.भो.
ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	१	३	५	५	५	१	२	२
१०	३६	३६	३६	३६	५४	२५	२१	१४	५६	३	९

आर्यपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्दप	शुद्धि.	ति.ध्रु	न. ध्रु	यो.ध्रु	ता.के.	ति.के.	न. के.	यो.के	ति.भो.	न.भो.	यो.भो.
ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	८	८	७	७	१०	१०	१०	११	१	१	०
२९	३१	३१	४०	४०	१३	०	३७	८	५४	१६	४४

सौरपक्षे उपकरणसाधनार्थम् ऋणचालकक्षेपकाः साध्यंते.

अब्दप	शुद्धि.	ति.ध्रु.	न.ध्रु.	यो.ध्रु.	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भो.	न.भो.	यो.भो.
ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१७	१७	१७	१७	०	०	०
२४	५	५	५	५	४९	५३	५४	५४	२९	२९	२८

अधिक और क्षयमास सारिणी।

अधिकमासाः								क्षयमासाः
ज्ये १६०१	वै १६०४	श्रा १६०६	भा १६०९	वै १६१२	भा १६१४	आ १६१७	आ १६०३	मार्ग १६०३
१६२०	अ १६२२	१६२५	१६२८	१६२९	१६३३	१६३६		
१६३९	१६४१	१६४४	१६४७	१६५०	१६५२	१६५५		
१६५८	१६६०	१६६३	१६६५	वै १६६९	१६७१	१६७४		
१६७७	१६७९	१६८२	ज्ये १६८५	१६८८	श्रा १६९०	१६९३		
वै १६९६	आ १६९८	१७०१	१७०४	१७०७	१७०९	१७१२		
१७१५	१७१७	१७२०	१७२३	१७२६	१७२८	१७३१		
१७३४	१७३६	१७३९	१७४२	१७४५	१७४७	१७५०	आ १७४४	मार्ग १७४४
१७५३	१७५५	आ १७५८	१७६१	१७६३	१७६६	ज्ये १७६९		पौ १७६३
१७७२	१७७४	१७७७	१७८०	१७८२	१७८५	१७८८		
१७९१	१७९३	१७९६	१७९९	१८०२	१८०४	१८०७		
चै १८१०	१८१२	१८१५	१८१८	१८२०	१८२३	१८२६		
१८२९	श्रा १८३१	१८३४	वै १८३७	आ १८३९	१८४२	१८४५		
१८४८	१८५०	१८५३	१८५६	१८५८	१८६१	१८६४		
१८६७	१८६९	१८७२	१८७५	१८७७	१८८०	१८८२		
१८८६	१८८८	१८९२	१८९४	१८९६	आ १८९९	१९०२	अ १८८५	मार्ग १८८५
अ १९०४	१९०७	ज्ये १९१०	१९१३	१९१५	१९१८	१९२१	मा १९०४	पौ १९०४
१९२३	१९२६	१९२९	१९३२	१९३४	१९३७	१९४०		
१९४२	१९४५	१९४८	चै १९५१	१९५३	१९५६	१९५९	का १९५०	मा १९५०
१९६१	मा १९६४	१९६७	फा १९६९	श्रा १९७२	१९७६	वै १९७८	का १९६९	मा १९६९
आ १९८०	१९८३	१९८६	१९८८	१९९१	१९९४	१९९७		
१९९९	२००२	२००५	२००७	२०१०	२०१२	२०१६	का २००७	मा २००७
२०१८	२०२१	२०२४	अ २०२६	२०२९	२०३२	२०३५	का २०२६	मा २०२६
२०३७	२०४०	वै २०४३	भा २०४५	२०४८	ज्ये २०५१	२०५४	का २०४५	पौ २०४५
२०५६	२०५९	ज्ये २०६२	२०६४	२०६७	२०७०	२०७३		

अब्दे मेषेर्कः ॥ तिथ्यादिकों की सारिणी ॥ भेर्कदिः ॥

ऊर्ध्वांक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
तिथि वारादि.	० १० ४३	१ ९ ४५	२ ८ ४८	३ ७ ५०	४ ६ ५१	५ ५ ५२	६ ४ ५३	० ३ ५४	१ २ ५५	२ १ ५७	३ ० ५७
पराख्य. घटी.	धं० ५५	६ ५३	१२ ३०	१७ २०	२१ ४	२३ ३०	२४ ४४	२४ ३८	२३ १९	२० ५६	१७ ३०
हार.	ध ३०	३०॥	३२॥	३६	२५	ध. ४८	ऋ. ६००	४५	२५	१८	१५
नक्षत्र वारादि.	६ ५९ ४४	१ ६ १२	२ १२ १६	३ १७ ३६	४ २२ ०	५ २५ १०	६ २७ ४	० २७ ५०	१ २७ १४	२ २५ ३७	३ २३ १०
हार.	ध १२॥	११	१३	१६	२४	ध ५०	०	ऋ ४६	२५	१८॥	१५
योग वारादि.	६ ५१ १	० ४७ ३२	१ ४४ ४	२ ४० ३७	३ ३७ १९	४ ३३ ४३	५ ३० १८	६ २६ ५१	० २३ २४	१ १९ ५८	२ १६ ३२
पराख्य. घटी.	ऋ.० ४६	ध.४ १५	९ ०	१३ १०	१६ ४२	१९ १२	२० ४९	२१ २५	२१ २	१९ ४४	१७ ३५
हार.	१२ ध.	१२॥	१४	१७	२४	३८	ध. ४००	ऋ. १६०	४७	२८	२१

ऊर्ध्वांक	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
तिथि वारादि.	३ ५९ ५८	४ ५८ ५९	५ ५९ ०	६ ५७ १	० ५६ २	१ ५५ ३	२ ५४ ३	३ ५३ २	४ ५२ १	५ ५० ५९
पराख्य. घटी.	१३ ३२	८ ५८	४ धं. ०	१ ऋ: ३	६ ५	१० ४८	१५ १७	१९ १	२२ ५६	२४ ०
हार.	१३	१२	१२	१२	१३॥	१३॥	१६	२०	२०	ऋ. ५०
नक्षत्र वारादि.	४ २० ०	५ १६ १८	६ १२ १७	० ८ १०	१ ४ ६	२ ० २१	२ ५७ ३	३ ५४ २६	४ ५२ ३५	५ ५१ ४९
हार.	१३॥	१२॥	१२।	१२॥	१३।	१५।	१८	२३	४०	ऋ १६०
योग वारादि.	३ १३ ६	४ ९ ४०	५ ६ १५	६ २ ४९	६ ५९ २४	० ५५ ५७	१ ५२ ३२	२ ४९ ७	३ ४५ ४१	४ ४२ १६
पराख्य. घटी.	१४ ४७	११ २२	७ ३३	३ २६ ध.	० ४८ ऋ.	४ ५६	९ ४	१२ ४५	१५ ५६	१८ ३५
हार.	१८	१६	१५	१४	१४	१४॥	१६	१९	२२	३५

कृत्तिकार्कः									नृ. सं.									रोहिण्यर्कः			
ऊर्ध्वांक	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
तिथि. वारादि.	६ ४९ ५७	० ४८ ५७	१ ४७ ५६	२ ४६ ५४	३ ४५ ५३	४ ४४ ५२	५ ४३ ४८	६ ४२ ४६	० ४१ ४४	१ ४० ४२	२ ३९ ३९	३ ३८ ३७	४ ३७ ३४	५ ३६ ३२	६ ३५ २९	० ३४ २५	१ ३३ २२	२ ३२ १९	३ ३१ १५	४ ३० १२	५ २९ १०
परारव्य. घटी.	२४ ५८	२४ ४४	२३ ३	२० १६	१५ ५७	१० ४९	५ ८ ऋ.	० ५३ ध.	६ ५१	१२ २३	१७ १७	२१ १	२३ ४७	२४ ४४	२४ २९	२३ २१	२१ १०	१७ ४४	१३ ४०	९ २	४ ९ ध.
हार.	२५० ध.	३६	२२	१४	११॥	१०॥	१०	१०	११	१२	१६	२५	४७ ध.	७०० ऋ.	४७	२७	१८	१५	१३	१२	१२
नक्षत्र. वारादि.	६ ५२ १३	० ५३ ५०	१ ५६ ४३	३ ० ४८	४ ५ ५६	५ ११ ५४	६ १८ १९	० २४ ४७	१ ३१ २	२ ३६ ३८	३ ४१ ६	४ ४४ ३८	५ ४६ ५२	६ ४७ ४६	० ४७ ४२	१ ४६ ७	२ ४३ ५४	३ ४० ४९	४ ३७ १६	५ ३३ १८	६ २९ १९
हार.	५६ ध.	२८	१७	१३॥	११॥	१०॥	१०।	१०॥।	१२॥	१५	२१	४०	४०० ध.	७० ऋ.	२६.	२०	१६	१४	१३	१२।	१२
योग. वारादि.	५ ३८ ५१	६ ३५ ५८	० ३२ ३	१ २८ ३८	२ २५ १५	३ २१ ५२	४ १८ २५	५ १५ २	६ ११ ३१	० ८ १५	१ ४ ४८	२ १ २६	२ ५८ ३	३ ५४ ४१	४ ५१ १९	५ ४७ ५८	६ ४४ ३५	० ४१ ११	१ ३७ ५०	२ ३४ २७	३ ३१ ५
परारव्य. घटी.	२० १९	२१ १२	२१ १०	२० ८	१८ ५	१५ ४	११ १७	६ ४६	१ ५५ ऋ.	२ ५८ ध.	७ ४६	१२ ६	१५ ४७	१८ ३८	२० २०	२१ १६	२१ ७	१९ ५७	१८ १	२५ २०	१२ ८
हार.	७० ऋ.	०	६० ध.	.३०	२०	१६	१३	१२।	१२।	१२॥	१४	१६	२१	३५	५४ ध.	४०० ऋ.	५०	३१	२२	१९	१६

मृगेऽर्कः सिं० संक्रा०

ऊर्ध्वांक.	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
तिथि. वारादि	६ २८ ६	० २७ २	१ २५ ५७	२ २४ ५१	३ २३ ४६	४ २२ ४१	५ २१ ३५	६ २० २९	० १९ २६	१ १८ १९	२ १७ १३
परारब्ध. घटी.	० ५२ क्ष.	५ ५३	१० ४०	१५ ७	१८ ५३	२१ ५२	२३ ५६	२४ ५५	२४ २४	२३ ३	२० १२
हार.	१२	१२॥	१३॥	१६	२०	२९	६० क्ष.	१२० घ.	४५	२१	१५
नक्षत्र. वारादि.	० २५ ८	१ २१ १२	२ १७ ५३	३ १५ ०	४ १३ ४	५ ११ ५७	६ १२ ११	० १३ २५	१ १६ ०	२ १९ ५३	३ २४ ४७
हार.	१३	१४	१६	२२	३२	१२० क्ष.	१२० घ.	३२	३०	२४	१२
योग वारादि	४ २७ ४०	५ २४ १७	६ २० ५४	० १७ ३४	१ १४ २७	२ १० ४७	३ ७ २४	४ ४ ३	५ ० ४१	५ ५७ १९	६ ५३ ५७
परारब्ध. घटी.	८ २३	४ २२	० ७ घ.	४ ३ क्ष.	८ ९	११ ५३	१५ १५	१८ ०	१९ ५५	२१ १	२१ ८
हार.	१५	१४	१४	१५	१६	१८	२२	३१	५४	५०० क्ष.	८० घ.

ऊर्ध्वांक.	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
तिथि. वारादि	३ १६ ८	४ १५ २	५ १३ ५७	६ १२ ५१	० ११ ४५	१ १० ३९	२ ९ ३४	३ ८ २७	४ ७ २३	५ ६ १६
परारब्ध. घटी.	१६ ६	११ ०	५ १९ क्ष.	० ४१ घ.	६ ३७	१३ १३	१७ ६	२० ५३	२३ ४४	२४ ४४
हार.	१२	१०॥	१०	१०	१०॥।	१२	१६	२४	४५ घ.	०
नक्षत्र. वारादि.	४ ३० ३०	५ ३६ ५२	६ ४३ २०	० ४९ ४०	१ ५५ १७	३ ० ७	४ ३ ५५	५ ६ २४	६ ७ ३३	० ७ ५०
हार.	१०॥	१०॥	१०॥	१२	१५	२०	३४	१५० घ.	१२० क्ष.	२९
योग वारादि	० ५० ३५	१ ४७ १०	२ ४३ ४७	३ ४० २७	४ ३७ ३	५ ३३ ४१	६ ३० १	० २७ ४१	१ २३ ४१	२ २० १९
परारब्ध. घटी.	२० २४	१८ ३५	१५ ४६	१२ ५	७ ४७	२ ५६ क्ष.	१ ३६ घ.	६ ४७	११ १६	१५ ७
हार.	३३	२१	१६	१४	१२।	१२।	१२॥	१३	१५॥	२०

आर्द्रार्कः पुनर्वस्वर्कः

ऊर्ध्वांक	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३
तिथि. वारादि	६ ५ ९	० ४ २	१ २ ५५	२ १ ४८	३ ० ४२	३ ५९ ३६	४ ५८ २९	५ ५७ २३	६ ५६ १६	० ५५ ११	१ ५४ ४	२ ५२ ५८	३ ५१ ५३	४ ५० ४६	५ ४९ ३९	६ ४८ ३२	० ४७ २३	१ ४६ १६	२ ४५ ९	३ ४४ २	४ ४२ ५४
पराब्ध्.	२४ ५३	२३ २८	२१ १०	१७ ५८	१३ ५७	९ २३	४ ३९ ध	० २९ ऋ.	५ ३१	१० ३९	१४ ५०	१८ ३९	२१ ४१	२३ ४८	२४ ५१	२४ ४३	२३ ७	२० २२	१६ २४	११ २३	५ ४३ ऋ
हार.	४८ ऋ	२६	११	१५	१३	१२।	१२	१२	१२॥	१३	१६	२०	२९	६० ऋ.	४०० ध.	३८	२२	१५	१२	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि.	१ ६ २९	२ ४ २७	३ १ ३३	३ ५८ १०	४ ५४ ११	५ ५० ७	६ ४६ ०	० ४२ ६	१ ३८ ३३	२ ३५ २४	३ ३३ २३	४ ३१ ५७	५ ३१ ५७	६ ३२ ५२	० ३५ १४	१ ३८ ४६	२ ४३ ३७	३ ४८ ५७	४ ५५ १५	६ १ ४३	० ८ ५
हार.	२२	१६	१४	१३	१२॥	१२।	१३	१४	१६	२०	२७	८८ ऋ.	३०० ध.	३६	२१	१५	१२॥	१०॥	१०॥	१०॥	१२
योग. वारादि.	३ १७ ०	४ १३ ३४	५ १० ११	६ ६ ५९	० ३ ३९	१ ० ६	१ ५६ ४७	२ ५३ ३६	३ ५० १३	४ ४६ ४७	५ ४३ २८	६ ४० ८	० ३६ ४९	१ ३३ २८	२ ३० ६	३ २६ ४३	४ २३ २२	५ २० ०	६ १६ ३८	० १३ १६	१ ९ ५४
पराब्ध्य	१८ ११	२० ४	२२ १५	२२ १५	२० १७	१८ ३२	१५ ५६	१२ ३९	९ ९	५ ०	० ५७ ध	३ १७ ऋ	७ १४	११ १६	१४ ४२	१७ ३३	१९ ४३	२१ ०	२१ १५	२० ४२	१९ ५
हार.	३२	५० ध.	०	६० ऋ.	३४	२३	१९	१६	१५	१४।	१४	१४॥	१६	१८	२१	२८	४७	२५० ऋ.	११० ध.	३७	२३

कर्क सं. पुष्येर्कः

ऊर्ध्वांक	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४
तिथि. वारादि	५ ४१ ४६	६ ४० ३८	० ३९ ३२	१ ३८ २३	२ ३७ १६	३ ३६ ८	४ ३५ ०	५ ३३ ५४	६ ३२ ४८	० ३१ ४०	१ ३० ३३
परारब्ध्य	० घ १९	६ १६	११ ५२	१६ ४७	२० ३९	२३ १७	२४ ४४	२४ ४८	२३ ३७	२१ २३	१८ १५
हार.	१०	१०॥।	१२	१५॥	२३	४०घ	०	५० ऋ.	२७	१९	१५
नक्षत्र. वारादि.	१ १३ ५४	२ १९ १०	३ २३ ३	४ २५ ४५	५ २७ १२	६ २७ ४२	० २६ ४२	१ २४ ४४	२ २२ ०	३ १८ ४२	४ १४ ४८
हार.	१४	१८	३०	८०ध.	२५० ऋ.	४८	२२	१७	१५	१३	१२॥
योग. वारादि.	२ ६ ३३	३ ३ ११	३ ५९ ४९	४ ५६ २८	५ ५३ ६	६ ४९ ४५	० ४६ २४	१ ४३ ०	२ ३९ ३९	३ ३६ १८	४ ३२ ५६
परारब्ध्य.	१६ २७	१२ ५६	८ ४२	३ ५७ ऋ.	१ ० ध	५ ५२	१० ३०	१४ २४	१७ ४०	१९ ४८	२१ १०
हार.	१७	१४	१२॥	१२	१२	१३	१५	१८	१८	४५	३०० ध.

ऊर्ध्वांक	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४
तिथि. वारादि	२ २९ २५	३ २८ १८	४ २७ १०	५ २६ ५	६ २४ ५७	० २३ ५१	१ २२ ४४	२ २१ ३८	३ २० ३१	४ १९ २४
परारब्ध्य	१४ १८	९ ४८	५ घ. ०	० ३ ऋ.	५ ५	९ ५४	१४ २७	१८ २०	२१ २६	२३ ३८
हार.	१३	१२॥	१२	१२	१२॥	१३	१५॥	१९	२७	५२ ऋ.
नक्षत्र. वारादि.	५ १० ४७	६ ६ ३८	० २ ३९	० ५९ ०	१ ५५ ५०	२ ५३ २६	३ ५१ ४१	४ ५१ ३०	५ ५२ ६	६ ५४ ११
हार.	१२।	१२॥	१३॥	१५।	१९	२५	४० ऋ.	७०० ध.	४३	२४
योग. वारादि.	५ २९ २४	६ २६ १२	० २२ ४८	१ १९ २८	२ १६ ६	३ १२ ४४	४ ९ ३२	५ ६ १	६ २ ३७	६ ५९ २६
परारब्ध्य.	२१ २२	२० ३७	१८ ५८	१६ ३१	१३ ३६	९ ५२	५ ५१	३ ४० ध.	२ ३३ ऋ	६ ४२
हार.	८० ऋ	३६	२४	१९	१७	१५	१४॥	१४	१४॥	१५

आश्लेषार्कः

ऊर्ध्वांक.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५
तिथि. वारादि.	५ १८ १८	६ १७ ११	० १६ १३	१ १४ ५९	२ १३ ५०	३ १२ ४३	४ ११ ३८	५ १० ३१	६ ९ २५	० ८ १९	१ ७ १२	२ ६ ६	३ ४ ५९	४ ३ ५३	५ २ ४७	६ १ ४२	० ० ३६	० ५९ ३०	१ ५८ २४	२ ५७ २०	३ ५६ १४
परारब्य.	२४ ४८	२४ ४३	२३ २१	२० ३३	१६ ४१	११ ४५	६ ६	० ऋ. ६	५ धं. ५४	११ ३३	१६ ३१	२० १५	२३ १०	२४ ४४	२४ ५१	२३ ४५	२१ ३५	१८ ३१	१४ ३८	१० ११	५ १४
हार.	७० ध	४०	२३	१५॥	१२॥	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१५	२२	४०	ध. ५००	ऋ. ५४	२८	२०	१५॥	१३॥	१२॥	१२
नक्षत्र. वारादि.	० ५७ २४	२ १ ४८	३ ७ ११	४ १३ २०	५ १९ ४५	६ २६ १०	० ३२ ८	१ ३७ १८	२ ४१ ४०	३ ४४ १३	४ ४६ २९	५ ४७ १०	६ ४६ २३	० ४४ ४१	१ ४२ १०	२ ३८ ५६	३ ३५ १०	४ ३१ ६	५ २६ ५८	६ २२ ५५	० १९ १०
हार.	१६	१३	११	१०॥	१०॥	११॥	१३	१६	२६	ध. ५६	०	४० ऋ	२५	१८	१६	१३	१२॥	१२।	१२।	१३	१५
योग. वारादि.	० ५५ ५४	१ ५२ ३२	२ ४९ ८	३ ४५ ४६	४ ४२ २३	५ ३९ ०	६ ३५ ३८	० ३२ १६	१ २८ ५५	२ २५ २२	३ २२ १०	४ १८ ४८	५ १५ २५	६ १२ ३	० ८ ३८	१ ५ १३	२ १ ४६	२ ५८ २१	३ ५४ ५८	४ ५१ ३३	५ ४८ ८
परारब्य.	१० ३८	१४ ११	१७ ८	१९ २८	२० ५३	२१ २३	२० ५८	१९ ३१	१७ ५	१३ ४५	९ ३५	५ ० ऋ.	० ०	५ध. ०	१ ३८	१३ ४४	१७ ९	१९ ३४	२१ ३	२१ ३०	२० ५७
हार.	१७	२०	२६	४३	१२० ऋ.	१४० ध.	४२	२४	१८	१४॥	१३	१२	१२	१३	१५	१८	२५	४०	२४० ध.	१२० ऋ.	४०

पूर्वार्कः

ऊर्ध्वांक.	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६
तिथि. वारादि.	४ ५५ ८	५ ५४ ५	६ ५३ ०	० ५१ ५५	१ ५० ५०	२ ४९ ४७	३ ४८ ४२	४ ४७ ३९	५ ४६ ३५	६ ४५ ३०	० ४४ २७	१ ४३ २३	२ ४२ २१	३ ४१ १५	४ ४० १२	५ ३९ ९	६ ३८ ६	० ३७ ४	१ ३६ १	२ ३४ ५९	३ ३३ ५७
परारव्य.	घ. ० २५	ऋ. ४ ३७	९ २९	१४ ५	१८ ४	२१ १५	२३ ३१	२४ ४३	२४ ४२	२३ १४	२० ४२	१६ ५६	१२ ५	६ २६	० २८ ऋ.	५ ३५ घ.	११ ४५	१६ १५	२० १४	२३ ४६	२४ ४४
हार.	१२	१२।	१३	१५	१९	२६	५० ऋ.	०	४० घ.	२४	१६	१२।	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१५	१६	३७	३०० घ.
नक्षत्र. वारादि.	१ १५ ५०	२ १३ ४	३ ११ २५	४ १० ४६	५ ११ १२	६ १२ ५४	० १५ ५०	१ १९ ५९	२ २५ १३	३ ३१ १३	४ ३७ २९	५ ४३ ५५	६ ५० ५	० ५५ २५	१ ५९ ५७	३ ३ २०	४ ५ २३	५ ६ ११	६ ५ ५३	० ४ १८	१ १ ५६
हार.	१८	२४	४३	ऋ. १२३	घ. ६०	२७	१७	१३	११	१०॥	६०॥	११	१३	१६	२२	४४	घ. ६००	ऋ. ६०	२६	१९	१६
योग. वारादि.	६ ४४ ४५	० ३१ २०	१ ३७ ५४	२ ३४ ३१	३ ३१ ७	४ २७ ४२	५ २४ १७	६ २० ५३	० १७ २७	१ १४ २३	२ १० ३६	३ ७ १०	४ ३ ४५	५ ० १९	५ ५६ ५३	६ ५३ २७	० ५० १	१ ४६ ३६	२ ४३ ८	३ ३९ ४१	४ ३६ १५
परारव्य.	१९ २७	१७ ७	१४ ७	१० ३५	६ ३०	३ २८ घ.	१ ४६ ऋ.	५ ५५	९ ५८	१३ ३४	१६ ४१	१९ १२	२० ४६	२१ ३३	२१ १८	२० ६	१७ ५२	१४ ३९	१० ४०	६ ४	२ २ ऋ.
हार.	२६	२०	१७	१५	१४	२४	१४॥	१५	१७	१९	२४	३९	७५ ऋ.	२४० घ.	५०	२७	१९	१५	१३	१२	१२

(१०८)

उत्तरार्कः कन्यासंक्रांति.

ऊर्ध्वांक	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७
तिथि. वारादि.	४ ३२ ५६	५ ३१ ५३	६ ३० ५२	० २९ ४९	१ २८ ४८	२ २७ ४६	३ २६ ४४	४ २५ ४४	५ २४ ४३	६ २३ ४२	० २२ ४२	१ २१ ४१	२ २० ४१	३ १९ ४१	४ १८ ४१	५ १७ ४१	६ १६ ४२	० १५ ४२	१ १४ ४३	२ १३ ४५	३ १२ ४७
परारब्ध्य.	२४ ५६	२३ ५३	२१ ४७	१८ ४७	१४ ५८	१० ३०	५ ४५	० घ. ४३	४ ऋ. १९	९ ३१	१३ ५०	१७ ५२	२१ ७	२३ २६	२४ ३९	२४ ४२	२३ १५	२० ४७	१७ ४	१२ १४	६ ६
हार.	ऋ. ६०	२९	२०	१६	१३॥	१२॥	१२	१२	१२॥	१३	१५	१८	२६	ऋ. ५०	०	घ. ४१	२४	१६	१२॥	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि.	१ ५८ ५०	२ ५५ ९	३ ५१ ७	४ ४६ ५९	५ ४२ ५४	६ ३९ २	० ३५ ३८	१ ३२ ४९	२ ३० ५३	३ २९ ५१	४ २९ ५५	५ ३१ ३३	६ ३४ २	० ३८ ०	१ ४३ ६	२ ४८ ४२	३ ५५ २	५ १ २६	६ ७ ४१	० १३ १३	१ १७ ५७
हार.	१४	१२॥	१२॥	१२।	१३	१४	१७	२३	३५	ऋ. १३०	घ. ७५	३०	१८	१४	१२	१०॥	१०॥	१०॥	१२।	१५	२०
योग वारादि	५ ३२ ४९	६ २९ २२	० २५ ५४	१ २२ २७	२ १९ ०	३ १५ ३६	४ १२ १०	५ ८ ४२	६ ५ १३	० १ ४६	० ५८ १८	१ ५४ ४९	२ ५१ २०	३ ४७ ५१	४ ४४ ३२	५ ४० ५३	६ ३७ २३	० ३३ ५४	१ ३० २३	२ २६ ५०	३ २३ २०
परारब्ध्य.	घ. ३ ५	८ ३४	१२ ५४	१६ ३०	१९ १०	२० ४६	२१ ३९	२१ ९	१९ ४७	१७ ३८	१४ ४५	११ २०	७ २८	३ घ. १८	० ऋ. ५४	५ ३	९ ९	१२ ४७	१६ २	१८ ४०	२० २८
हार.	१२॥	१४	१७	२३	३८	घ. ८०	ऋ. १६०	४५	२८	२१	१८	१५॥	१४॥	१४	१४॥	१५	१७	१९	२३	३३	ऋ. ६०

चित्रार्कः तुलासंक्रांति.

ऊर्ध्वांक.	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८
तिथि. वारादि.	४ ११ ४८	५ १० ५१	६ ९ ५४	० ८ ५५	१ ७ ५७	२ ७ ०	३ ६ २	४ ५ ४	५ ४ ७	६ ३ ९	० २ १३
परारव्य.	ऋ. ० ३९	ध. ५ २६	११ ९	१६ १०	२० १०	२३ ५	२४ ४५	२४ ५७	२३ ५३	२१ ५१	१८ ५३
हार.	१०	२०४	१२	१५	२०	३६	ध. ३००	ऋ. ५६	३०	२०	१५॥
नक्षत्र. वारादि.	२ २१ ३६	३ २३ ५७	४ २४ ५७	५ २६ ४	६ २३ ३६	० २१ १८	१ १८ २६	२ १४ १३	३ १० १७	४ ६ ५२	५ २ ४२
हार.	४०	ध १८०	ऋ ४००	२८	२१	१५	१४	१३	१२।	१२	१३
योग. वारादि.	४ १९ ५०	५ १६ २०	६ १२ ५०	० ९ २१	१ ५ ५०	२ २ १९	२ ५८ ४९	३ ५५ १८	४ ५१ ४७	५ ४८ १७	६ ४४ ४५
परारव्य.	२१ २९	२१ ३५	२० ३०	१८ ३०	१५ ३१	११ ३८	७ ९	२ ऋ. २०	२ ध. ४६	७ ३३	११ ५६
हार.	ध ३६	३०	२०	१५	१४	१२॥	१२	१२॥	१४	१६	२०

ऊर्ध्वांक.	१७९	१८०	१८१	१८२	१८३	१८४	१८५	१८६	१८७	१८८
तिथि. वारादि.	१ १ १७	२ ० २०	२ ५९ २४	३ ५८ २८	४ ५७ ३२	५ ५६ ३७	६ ५५ ४१	० ५४ ४६	१ ५३ ५०	२ ५२ ५६
परारव्य.	१५ ३	१० ३६	५ ५७	ध. ० ४८	ऋ. ४ १८	९ ९	१३ ४७	१७ ५०	२१ ५	२३ २४
हार.	२३॥	१२॥	१२	१२	१२	१३	१५	१८	२६	ऋ ५०
नक्षत्र. वारादि.	५ ५८ ५०	६ ५५ १७	० ५२ ३०	१ ५० १३	२ ४८ ५०	३ ४८ ५३	४ ४९ ३१	५ ५२ १६	६ ५५ ५५	१ ० ३७
हार.	१४	१६	२०	२९	ऋ. ९०	ध २००	३४	२०	१५	१२
योग. वारादि.	० ४१ १२	१ ३७ ४४	२ ३४ ११	३ ३० ३९	४ २७ ५	५ २३ ३४	६ २० १	० १६ २९	१ १२ ५६	२ ९ २२
परारव्य.	१५ ३८	१८ ३५	२० २५	२१ २६	२१ १७	२० २०	१८ १७	१५ २१	१२ १४	८ ३१
हार.	२३	ध. ६०	ऋ ४००	५४	३२	२२	१८	१८	१६	१०॥

स्वात्यर्कः विशाखार्कः

ऊर्ध्वांक	१८९	१९०	१९१	१९२	१९३	१९४	१९५	१९६	१९७	१९८	१९९
तिथि. वारादि.	३ ५२ ०	४ ५१ ६	५ ५० १२	६ ४९ १७	० ४८ २४	१ ४७ ३०	२ ४६ ३५	३ ४५ ४२	४ ४४ ४९	५ ४३ ५५	६ ४३ ३
परास्त्य.	२४ ३८	२४ ४१	२३ १४	२० ४७	१७ ५	१२ १५	६ ३७	० ऋ. ३९	५ ध. २६	११ १०	१६ १०
हार.	०	४० ध.	२५	१६	१२॥	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१५
नक्षत्र. वारादि.	२ ६ ८	३ १२ २७	४ १८ ५१	५ २५ १२	६ ३१ ५०	० ३५ ५१	१ ३९ ५६	२ ४२ २५	३ ४३ ४२	४ ४४ ६	५ ४१ ५८
हार.	११	१०॥	१०॥	१२	१४॥	१८	३०	ध. २००	ऋ. १८०	३२	२२
योग. वारादि.	३ ५ ४८	४ २ १५	४ ५८ ४१	५ ५५ २	६ ५१ ३४	० ४८ ०	१ ४४ २७	२ ४० ५३	३ ३७ १९	४ ३३ ४५	५ ३० ८
परास्त्य.	४ २२	० ध. २२	४ ऋ. ४०	८ ७	११ ५३	१५ २६	१८ २	२० ५	२१ १८	२१ २७	२० ४६
हार.	१४।	१४	१४॥	१६	१८	२२	३०	५०	ऋ. ४००	ध. १२०	३५

ऊर्ध्वांक	२००	२०१	२०२	२०३	२०४	२०५	२०६	२०७	२०८	२०९
तिथि. वारादि.	० ४२ १०	१ ४१ १६	२ ४० २३	३ ३९ ३२	४ ३८ ३९	५ ३७ ४८	६ ३६ ५७	० ३६ ४	१ ३५ १३	२ ३४ २२
परास्त्य.	२० १०	२३ ५	२४ ४५	२४ ५७	२३ ५८	२१ ४९	१८ ५१	१५ १	१० ३४	५ ४५
हार.	२१	३६	ध. ३००	ऋ. ६०	२९	२०	१५॥	१३॥	१२॥	१२।
नक्षत्र. वारादि.	६ ४० ५५	० ३८ ५	१ ३४ ४२	२ ३० ४७	३ २६ ४५	४ २२ ३२	५ १८ ३३	६ १४ ५५	० ११ ४६	१ ९ २६
हार.	१७	१५	१३	१२॥	१२	१३	१४	१६	२०	२६
योग. वारादि.	६ २६ ३२	० २२ ५८	१ १९ २३	२ १५ ४८	३ १२ १३	४ ८ ३८	५ ५ ३	६ १ २८	६ ५७ ५४	० ५४ १८
परास्त्य.	१९ ३	१६ १८	१२ ४१	८ २०	३ ऋ. ३८	१ ध २५	६ १४	१० ४८	१४ ४१	१७ ५०
हार.	२२	१७	१५	१३	१२	१२॥	१३	१५	१९	२८

वृश्चि० सं०   अनुरा·कः

ऊर्ध्वांक	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०
तिथि. वारादि.	३ ३३ ३१	४ ३२ ४०	५ ३१ ४९	६ ३० ५८	० ३० ९	१ २९ १७	२ २८ २७	३ २७ ३८	४ २६ ४९	५ २५ ५७	६ २५ ७	० २४ १८	१ २३ २९	२ २२ ४०	३ २१ ५१	४ २१ २	५ २० १३	६ १९ २४	० १८ ३५	१ १७ ४६	२ १६ ५८
परारब्ध.	० ध. ४२	४ ऋ. २१	९ १६	१३ ५३	१७ ५६	२० १०	२३ २५	२४ ३८	२४ ४१	२४ १२	२० ४२	१६ ५७	१२ ५	६ २६	० ऋ. २५	५ ध. ४०	११ २२	१६ २१	२० १८	२३ १०	२४ ४५
हार.	१२	१२	१३	१५	१९	२७	ऋ. ५०	०	ध. ४०	२४	१६	१२।	१०॥	१०	१०	१०॥	१२॥	१५	२१	३८	४०० ध.
नक्षत्र. वारादि.	२ ७ ११	३ ७ ३७	४ ८ १९	५ १० ३०	६ १३ ४९	० १८ १६	१ २३ ४२	२ २९ ५२	३ ३६ १५	४ ४२ ३७	५ ४८ ३०	६ ५३ ४१	० ५७ ५२	२ ० ४४	३ २ २३	४ २ ५८	५ २ ७	६ ० १९	६ ५७ ३८	० ५४ २५	१ ५० ३२
हार.	ऋ. ६४	०	ध. ५०	२४	१५	१२॥	११	१०॥	१०॥	१०॥	१३	१७	२७	ध. ६०	ऋ. ५००	४०	२३	१८	१६	१३	१२॥
योग. वारादि.	१ ५० ४१	२ ४७ ५	३ ४८ २८	४ ३९ ५४	५ ३६ १७	६ ३२ ४२	० २९ ४	१ २५ ३०	२ २१ ५४	३ १८ १७	४ १४ ३९	५ ११ ३	६ ७ २४	० ३ ५१	१ ० १२	१ ५६ ५७	२ ५२ ४४	३ ४९ १०	४ ४५ ३६	५ ४१ १४	६ ३८ १४
परारब्ध.	२० ०	२१ १५	२१ ३३	२० ३६	१८ ४३	१६ २३	१३ १२	९ ३६	५ ३४	१ ध. २६	२ ऋ. ४७	६ १४	१० ५०	१४ १९	१७ १९	१९ ३४	२१ ०	२१ २८	२३ २	११ ३६	१७ ९
हार.	४८	ध. ४००	ऋ. ८०	३५	२४	१९	१७	१५	१४॥	१४	१४॥	१५	१७	२०	२७	४२	ऋ. १३०	ध. १४०	४९	२४	१९

ज्येष्ठार्कः   मूले धनेऽर्कः

ऊर्ध्वांक.	२३१	२३२	२३३	२३४	२३५	२३६	२३७	२३८	२३९	२४०	२४१	२४२	२४३	२४४	२४५	२४६	२४७	२४८	२४९	२५०	२५१
तिथि. वारादि	३ १६ १०	४ १५ २२	५ १४ ३४	६ १३ ४६	० १२ ५८	१ १२ ११	२ ११ २४	३ १० ३७	४ ९ ५०	५ ९ २	६ ८ १४	० ७ २७	१ ६ ४०	२ ५ ५४	३ ५ ६	४ ४ १९	५ ३ ३३	६ २ ४६	० २ ०	१ १ १३	२ ० २७
परारव्य.	२४ ५४	२३ ४७	२१ ३८	१८ ३७	१४ ४३	१० ११	५ २३	० ध. २१	४ ऋ. ४१	९ ३६	१४ ६	१८ ११	२१ २०	२३ २४	२४ ४२	२४ ४०	२३ ७	२० १९	१६ ४१	११ ४१	६ ०
हार.	ऋ. ५४	२८	२०	१५	१३	१२॥	१२	१२	१२	१३	१५	१९	२७	ऋ. ५२	०	ध. ४०	२३	१६	१२	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि	२ ४६ ३०	३ ४२ २०	४ ३८ १७	५ ३४ ३३	६ ३१ १७	० २८ ४४	१ २६ ५९	२ २६ २४	३ २६ ५४	४ २८ ४४	५ ३१ ४५	६ ३६ ०	० ४१ १६	१ ४७ १९	२ ५३ ३८	४ ० ४	५ ६ १०	६ ११ २९	० १५ ५४	१ १९ ११	२ २१ ८
हार.	१२।	१२॥	१३	१५	१८	२४	४८	ऋ. ३००	ध. ५२	२६	१७	१३	११	१०॥	१०॥	११	१२॥	१६	२३	ध. ४८	०
योग. वारादि.	० ३४ ३५	१ ३० ५८	२ २७ १८	३ २३ ४०	४ २० ३	५ १६ २३	६ १२ ४३	० ९ ६	१ ५ २६	२ १ ४८	२ ५८ ९	३ ५४ ३१	४ ५० ५१	५ ४७ १२	६ ४३ ३२	० ३९ ५४	१ ३६ १६	२ ३३ ३८	३ २८ ५८	४ २५ १८	५ २१ ४०
परारव्य.	१३ ४८	९ ३८	५ ४	० ऋ. ६	४ ध. ५४	९ ३४	१३ ३९	१७ ४	१९ ३१	२१ २	२३ ३२	२१ ९	१९ ३१	१७ १४	१४ १४	१० ४३	६ ५०	२ ध. ३९	१ ऋ. १९	५ २८	९ ४२
हार.	१४	१३	१२	१२	१३	१५	१८	२४	४०	ध. १२०	ऋ. १२०	४०	२६	२०	१७	१५	१४।	१४॥	१४॥	१५	१७

पूर्वाषा·कं:

ऊर्ध्वांक	२५२	२५३	२५४	२५५	२५६	२५७	२५८	२५९	२६०	२६१	२६२
तिथि. वारादि.	२ ५९ ४०	३ ५८ ५४	४ ५८ ४	५ ५७ २१	६ ५६ ३६	० ५५ ५१	१ ५५ ६	२ ५४ १८	३ ५३ ३४	४ ५२ ४७	५ ५२ २
परारब्ध.	० ऋ. २	५ घ. ५८	११ ४१	१६ ३८	२० ३१	२३ २७	२४ ४५	२४ ५०	२३ ३८	२१ १५	१८ २०
हार.	१०	१०॥	१२	१५॥	२२	४०	घ. ७००	ऋ. ६०	२७	२०	१५
नक्षत्र. वारादि.	३ २१ ५२	४ २१ २१	५ १९ ४३	६ १७ १७	० १४ १०	१ १० २४	२ ६ २८	३ २ २०	३ ५८ १३	४ ५४ २२	५ ५१ ०
हार.	ऋ. ५०	२६	१९	१५	१३॥	१२॥	१२।	१२।	१३	१५	१७
योग. वारादि.	६ १८ १	० १४ २१	१ १० ४०	२ ६ ५८	३ ३ १६	३ ५९ ३५	४ ५५ ५५	५ ५२ ११	६ ४८ ३३	० ४४ ५४	१ ४१ १३
परारब्ध.	१३ १७	१६ २६	१९ ०	२० ३७	२१ ३७	२१ १८	२० १२	१८ ५	१५ ०	११ ५	६ ३४
हार.	१९	२३	३७	ऋ. ७०	घ. ४००	५४	२८	२१	१५	१३	१२॥

ऊर्ध्वांक	२६३	२६४	२६५	२६६	२६७	२६८	२६९	२७०	२७१	२७२
तिथि. वारादि.	६ ५१ १६	० ५० ३०	१ ४९ ४२	२ ४९ ०	३ ४८ १४	४ ४७ २९	५ ४६ ४३	६ ४५ ५७	० ४५ १३	१ ४४ २८
परारब्ध.	१४ २२	९ ५१	५ घ. ०	० ऋ. ७	५ ११	१० ३	१४ ३३	१८ ३०	२१ ३५	२३ ४३
हार.	१३	१२॥	१२	१२	१२।	१३	१५	२०	२८	६० घ.
नक्षत्र. वारादि.	६ ४८ १८	० ४६ २२	१ ४५ २८	२ ४५ ४६	३ ४७ १४	४ ५० ०	५ ५४ ५	६ ५९ ६	१ ४ ५८	२ ११ २१
हार.	२३	३७	ऋ. १५०	घ. ८०	३०	१८	२४	११॥	१०॥	१०॥
योग. वारादि.	२ ३७ ३३	३ ३३ ५४	४ ३० १५	५ २६ ३४	६ २२ ५४	० १९ १५	१ १५ ३४	२ ११ ५३	३ ८ ११	४ ४ ३१
परारब्ध.	१ ऋ. ४२	३ घ. १९	८ २	१२ २२	१६ १	१८ ५०	२० ३२	२१ २७	२१ १९	२० ०
हार.	१२	१३	१४	१६	३५	४१	घ. ६५	ऋ. २००	५०	३०

उत्तराषा॰ मकरसं॰ श्रवणेर्कः

ऊर्ध्वांक.	२७३	२७४	२७५	२७६	२७७	२७८	२७९	२८०	२८१	२८२	२८३
तिथि. वारादि.	२ ४३ ४२	३ ४२ ५७	४ ४२ १२	५ ४१ २८	६ ४० ४२	० ३९ ५६	१ ३९ १	२ ३८ २५	३ ३७ ४०	४ ३६ ५३	५ ३६ ८
परारब्य	२४ ४६	२४ ४०	२३ २	२० १६	१६ १७	११ १७	५ ३५ ऋ.	० २७ ध.	६ २७	१२ ४	१६ ५७
हार.	ध. ६००	२७	२४	१५	१२	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१६
नक्षत्र. वारादि	३ १७ ४८	४ २४ ४	५ २९ ३१	६ ३४ ११	० ३७ ४८	१ ४० ४	२ ४० ५९	३ ४० ५९	४ ३९ ३०	५ ३७ ११	६ ३४ १६
हार.	११	१२॥	१५	२०	४०	ध. ३००	ऋ. ८०	२७	२०	१६	१४
योग. वारादि.	५ ० ५४	५ ५७ १४	६ ५३ ३३	० ४९ ५४	१ ४६ १५	२ ४२ ३४	३ ३८ ५४	४ ३५ १५	५ ३१ ३५	६ २७ ५४	० २४ १६
परारव्य.	१८ ०	१५ १४	११ ५७	८ १२	४ ध. ८	० ऋ. ३०	४ १२	८ १८	१२. १	१५ २१	१८ ६
हार.	२२	१८	१६	१५	१४।	१४॥	१५	१६	१८	२२	३०

ऊर्ध्वांक.	२८४	२८५	२८६	२८७	२८८	२८९	२९०	२९१	२९२	२९३
तिथि. वारादि.	६ ३५ २३	० ३४ ३८	१ ३३ ५३	२ ३३ ६	३ ३२ २१	४ ३१ ३६	५ ३० ५०	६ ३० ४	० २९ २०	१ २८ ३३
परारब्य	२० ४६	२३ २२	२४ ४५	२४ ४५	२३ २७	२१ ९	१७ ५८	१३ ५५	९ २१	४ २५ ऋ.
हार.	२६	ध ४३	०	४७ ऋ.	२६	२१	१५	१३	१२	१२
नक्षत्र. वारादि	० ३० ४४	१ २६ ४६	२ २२ ४०	३ १८ ३३	४ १४ ४१	५ ११ २३	६ ८ २५	० ६ १५	१ ५ २	२ ५ १३
हार.	१३	१२॥	१२॥	१३	१४	१६	२२	३०	ऋ. १००	ध. १८०
योग. वारादि.	१ २० ३७	२ १७ ०	३ १३ १८	४ ९ ३८	५ ५ ५९	६ २ १९	६ ५८ ३९	० ५५ ०	१ ५१ २२	२ ४७ ४२
परारव्य.	२० ४	२१ ११	२१ १७	२० ३४	१८ ४८	१६ २	१२ २१	८ ३	३ ऋ. १५	१ ध. २
हार.	५३	ऋ. ६००	ध. ८०	३४	२२	१६	१४	१२॥	१२	१२।

								धनिष्ठार्कः						कुंभ·सं०						शत०र्कः	
ऊर्ध्वांक	२९४	२९५	२९६	२९७	२९८	२९९	३००	३०१	३०२	३०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३०८	३०९	३१०	३११	३१२	३१३	३१४
तिथि. वारादि.	२ २७ ४७	३ २७ ४७	४ २६ १५	५ २५ १९	६ २४ ४३	० २३ ५५	१ २३ ७	२ २२ २२	३ २१ ३६	४ २० ५०	५ २० ३	६ १९ १७	० १८ २७	१ १७ ४२	२ १६ ५५	३ १६ ८	४ १५ २१	५ १४ ३५	६ १३ ४६	० १२ ५८	१ १२ १०
परारब्ध्य.	ऋ. ० ४१	५ ४२	१० ३३	१५ १	१८ ५२	२१ ५१	२३ ५३	२४ ५१	२४ ३९	२२ ५५	२० ३	१५ ५५	१० ४८	५ ऋ. ४	० ध. ५७	६ ५४	१२ ३०	१७ २०	२१ ३	२३ ३३	२४ ४६
हार.	१२	१२॥	१३॥	१६	२०	३०	ऋ. ६०	ध. ३००	३५	२१	१४	१२	१०॥	१०	१०	१०॥	१२॥	१६	२४	ध. ५०	ऋ. ७००
नक्षत्र. वारादि	३ ६ १५	४ ८ ४७	५ १२ ३६	६ १७ २४	० २३ ३	१ २९ २४	२ ३५ ५१	३ ४२ ११	४ ४७ ५२	५ ५२ ४७	६ ५६ ३९	० ५९ १३	२ ० २७	३ ० ४८	३ ५९ ३१	४ ५७ ३१	५ ५४ ३८	६ ५१ १६	० ४७ २२	१ ४३ २३	२ ३९ १३
हार.	३३	१९	१५	१२	१०॥	१०॥	१०॥	११॥	१४	१९	३०	ध. १२०	ऋ. १५०	३०	२२	१६	१४	१३	१२।	१२	१३
योग. वारादि.	३ ४४ ०	४ ४० २३	५ ३६ ४५	६ ३३ ७	० २९ २६	१ २५ ४७	२ २२ ८	३ १८ २९	४ १४ ५०	५ ११ १२	६ ७ ३४	० ३ ५५	१ ० १८	१ ५६ ४७	२ ५३ २	३ ४९ २५	४ ४५ ४६	५ ४२ ९	६ ३८ ३०	० ३४ ५१	१ ३२ १५
परारब्ध्य.	६ २६	११ ०	१४ ५०	१८ १	१९ ५८	२१ १४	२१ ११	२० ३९	१८ ४८	१६ २७	१३ ३३	९ ३९	५ ३६	१ ध. २६	२ ऋ. ५२	६ ५०	१० ४५	१४ २४	१७ १०	१९ २९	२० ४९
हार.	१३	१६	२१	३०	४८	ध. ७००	ऋ. ९०	३३	२४	२०	१७	१५	१४॥	१४॥	१५	१५	१७	२०	२६	४१	ऋ. १४०

पूर्वाभाद्र० कः

ऊर्ध्वांक	३१५	३१६	३१७	३१८	३१९	३२०	३२१	३२२	३२३	३२४	३२५
तिथि. वारादि.	२ ११ २१	३ १० ३५	४ ९ ४७	५ ८ ५९	६ ८ ९	० ७ २१	१ ६ ३१	२ ५ ४२	३ ४ ५४	४ ४ ४	५ ३ १५
परारव्य	२४ ४०	२३ १८	२० ५५	१७ ४१	१३ ३०	८ ५४	३ घ. ५५	१ ऋ. ९	६ ९	११ ०	१५ २६
हार.	४५	२५	१९	१४	१३	१२	१२	१२	१२॥	१४	१६
नक्षत्र. वारादि.	३ ३५ १६	४ ३१ ४१	५ २८ ४०	६ २६ २४	० २५ ५४	१ २५ ५०	२ २६ ३८	३ २७ ५५	४ ३१ २२	५ ३६ ०	६ ४१ २८
हार.	१४	१६	२०	२६	ऋ. ७५	घ. ६००	३७	२२	१५	१२॥	११
योग. वारादि.	२ २७ १८	३ २४ ०	४ २० २२	५ १६ ४४	६ १३ ८	० ९ ३२	१ ५ ५५	२ २ १९	२ ५८ ४९	३ ५५ ५	४ ५१ ४४
परारव्य.	२१ १५	२० ५७	१९ ५४	१६ ५७	१३ ३७	९ ३१	४ ऋ. ५३	० ०	४ घ. ५४	९ ३४	१३ ३८
हार.	घ. १४०	४२	२४	१८	१५	१३	१२।	१२	१३	१५	१८

ऊर्ध्वांक	३२६	३२७	३२८	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३५
तिथि. वारादि.	६ २ २५	० १ ३५	१ ० ४५	१ ५९ ५७	२ ५९ ८	३ ५८ १७	४ ५७ २६	५ ५६ ३५	६ ५५ ४५	० ५४ ५४
परारव्य	१९ १०	२२ ५	२४ ३	२४ ५५	२४ ३१	२२ ४९	१९ ५१	१५ ३८	१० २८	४ ऋ. ४४
हार.	२१	३०	ऋ. ७०	घ. २२०	३३	२०	१४	११॥	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि.	० ४७ ४४	१ ५४ ११	३ ० ३६	४ ६ २९	५ ११ ४१	६ १५ ४७	० १८ ३८	१ २० १२	२ २० ४६	३ १९ ५१
हार.	१०॥	१०॥	१०॥	१३	१८	१९	घ. ७०	ऋ. ४००	३६	२३
योग. वारादि.	५ ४७ ५९	६ ४४ १५	० ४० ४०	१ ३७ १४	२ ३३ २९	३ २९ ५२	४ २६ १६	५ २२ ४२	६ १९ ६	० १५ ३१
परारव्य.	१७ ०	१९ २५	२० ५७	२१ २४	२० ५४	१९ १८	१७ १३	१४ १८	१० ५१	६ ५९
हार.	२५	४०	घ. १४०	ऋ. ३२०	४२	२७	२१	१७	१५	१४॥

मीनसंक्रांति उत्तराभाद्र०र्कः रेवत्यर्कः

ऊर्ध्वांक.	३३६	३३७	३३८	३३९	३४०	३४१	३४२	३४३	३४४	३४५	३४६	३४७	३४८	३४९	३५०	३५१	३५२	३५३	३५४	३५५	३५६
तिथि. वारादि.	१ ५४ ३	२ ५३ ११	३ ५२ २०	४ ५१ २८	५ ५० ३६	६ ४९ ४५	० ४८ ५२	१ ४८ ०	२ ४७ ९	३ ४६ १६	४ ४५ २३	५ ४४ ३०	६ ४३ ३७	० ४२ ४४	१ ४१ ५०	२ ४० ५६	३ ४० २	४ ३९ ८	५ ३८ १४	६ ३७ १०	० ३६ २६
परारव्य.	१घ. २०	७ १६	१२ ४७	१७ ३६	२१ १४	२३ ३८	२४ ४५	२४ ३६	२३ ९	२० ४१	१७ २३	१३ १०	८ ३३	३घ. ३६	१ ऋ. २८,	६ ३०	११ १५	१५ ३८	१९ २२	२२ १४	२४ ९
हार.	१०	११	१२॥	१७	२५	घ. ५४	ऋ. ४००	४१	२४	१८	१४	१३	१२	११	१२	१२।	१४	१६	२१	३१	७० ऋ
नक्षत्र. वारादि	४ १८ ०	५ १५ १९	६ १२ ४	० ८ १३	१ ४ १२	२ ० ५	२ ५६ ७	३ ५२ २७	४ ४९ १७	५ ४६ ५०	६ ४५ ९	० ४४ ४५	१ ४५ २१	२ ४७ ३१	३ ५० २८	४ ५४ ५१	६ ० १२	० ६ १८	१ १२ ४०	२ १९ ११	३ २५ १४
हार.	१७	१५	१३	१२॥	१२	१२॥	१३॥	१५	१९	२५	४५	ऋ. ४००	घ. ४७	१७	१६	१३	११	१०॥	१०।	११	१३
योग. वारादि	१ ११ ५६	२ ८ २०	३ ४ ४७	४ १ १४	४ ५७ ३८	५ ५४ ०	६ ५० २६	० ४६ ५३	१ ४३ २१	२ ३९ ४७	३ ३६ १३	४ ३२ ३८	५ २९ ५	६ २५ ३३	० २२ ०	१ १८ २७	२ १४ ५४	३ ११ २१	४ ७ ४९	५ ४ १६	६ ० ४३
परारव्य.	२ ५१ घ.	१ १९ ऋ.	५ २७	९ ३२	१३ ८	१६ १५	१८ ४८	२० २७	२१ १५	२१ ६	१९ ५९	१७ ५१	१४ ४७	१० ५७	६ २५	१ ऋ ३५	३ घ १९	८ ४	१२ २२	१६ ३	१८ ४६
हार.	१४॥	१४॥	१५	१७	१९	२३	३६	ऋ. ५५	घ. ४००	५४	२८	२०	१६	१३	१२॥	१२	१३	१४	१६	२२	३६

ऊर्ध्वांक	३५७	३५८	३५९	३६०	३६१	३६२	३६३	३६४	३६५	३६६	३६७
तिथि. वारादि.	१ ३५ ३१	२ ३४ ३६	३ ३३ ४१	४ ३२ ४५	५ ३१ ४१	६ ३० ५४	० २९ ५६	१ २९ २	२ २८ ६	३ २७ ९	४ २६ १२
परारब्ध.	२४ ५८	२४ ३८	२२ ४७	१९ ४४	१५ १७	१० १४	४ ऋ २२	१ ध. ३६	७ २६	१३ १४	१७ ४५
हार.	ध. १८०	३२	२०	१४	११॥	१०॥	१०	१०।	११।	१२॥	१७
नक्षत्र. वारादि.	४ ३० ३४	५ ३४ ५५	६ ३८ ५	० ४० ०	१ ४० ४५	२ ४० ७	३ ३८ २९	४ ३६ ९	५ ३२ ४४	६ २९ १०	० २५ १०
हार.	१६	२४	७० ध.	०	४४ ऋ	२५	१९	१५	१४	१२॥	१२।
योग. वारादि.	६ ५७ १२	० ५३ ३८	१ ५० ८	२ ४६ ३७	३ ४३ ६	४ ३९ ३३	५ ३६ ३	६ ३२ ३२	० २९ १	१ २५ २९	२ २१ ५८
परारब्ध.	२० २६	२१ १६	२१ ४	१९ ५२	१७ ५३	१५ ५१	११ ४९	८ १३	४ १२	० ध. २	४ ऋ २६
हार.	ध ७०	ऋ ३००	५०	३७	२२	१९	१६	१५	१४॥	१४॥	१५

ऊर्ध्वांक	३६८	३६९	३७०	३७१	३७२	३७३	३७४	३७५	३७६	३७७
तिथि. वारादि.	५ २५ १५	६ २४ १८	० २३ २२	१ २२ २५	२ २१ २८	३ २० ३१	४ १९ ३६	५ १८ ४०	६ १७ ४४	० १६ ४८
परारब्ध.	२१ ४६	२३ ४१	२४ ४६	२४ ४५	२३ ७	२० ३९	१७ १९	१३ ६	८ २४	३ ध. २९
हार.	२५	ध. ५६	ऋ. ३६०	४१	२६	१८	१४	१३	१२	१२
नक्षत्र. वारादि.	१ २१ ४	२ १७ ०	३ १३ १४	४ ९ ५५	५ ७ १८	६ ५ २९	० ४ ४३	१ ५ ७	२ ६ ४५	३ ९ २५
हार.	१२॥	१३	१५	१८	२३	४०	ऋ १८०	ध. ६६	२८	१८
योग. वारादि.	३ १८ २७	४ १४ ५७	५ ११ १७	६ ७ ५७	० ४ २६	१ ० ५६	१ ५७ २७	२ ५३ ५८	३ ५० २९	४ ४७ ०
परारब्ध.	८ ११	११ २५	१५ १५	१८ ५	१९ ५६	२० ५७	२१ ४	२० १८	१८ २८	१५ ४०
हार.	१६	१८	२२	३१	६०	ऋ. ५००	ध. ८०	३३	२१	१७

ऊर्ध्वांक	३७८	३७९	३८०	३८१	३८२	३८३	३८४	३८५	३८६	३८७	३८८	३८९	३९०	३९१	३९२	३९३	३९४	३९५	३९६	३९७	३९८
तिथि. वारादि.	१ १५ ५२	२ १४ ५६	३ १४ ०	४ १३ ४	५ १२ ८	६ ११ १२	० १० १६	१ ९ २०	२ ८ २४	३ ७ २८	४ ६ ३२	५ ५ ३६	६ ४ ३६	० ३ ३४	१ २ ४८	२ १ ५२	३ ० ५६	४ ० ०	४ ५९ ४	५ ५८ ८	६ ५७ १२
पराख्य.	१ ऋ ३३	६ ३४	१० २१	१५ ४५	१९ २५	२२ १६	२४ १०	२४ ५८	२४ २८	२२ ४६	१९ ४४	१५ २८	१० १६	४ ऋ ३१	१ध. ३२	७ २५	१३ ०	१७ २७	२१ १८	२३ ४१	२४ ४५
हार.	१२	१२॥	१३॥	१६	२१	३२	ऋ ७५	ध. १८०	३२	२०	१४	११।	१०॥	१०॥	१०	११	१२॥	१७	२५	ध ५५	ऋ ४००
नक्षत्र. वारादि.	४ १३ ४५	५ १८ ५४	६ २४ ५२	० ३१ १७	१ ३७ ४७	२ ४४ १	३ ४९ २८	४ ५४ ४	५ ५७ ३५	६ ५९ ४७	१ ० ०	२ ० ३३	२ ५८ ५८	३ ५७ ३०							
हार.	१४	१०॥	१०॥	१०॥	११	१३	१५॥	२२	४०	ध. ४००	ऋ. ७०	२६	२०	१८							
योग. वारादि.	५ ४३ ३१	६ ४० १	० ३६ ३३	१ ३३ ५	२ २९ ३४	३ २६ ५	४ २२ ३८	५ १९ १०	६ १५ ४२	० १२ १५	१ ८ ४१	२ ५ २३	३ २ १	३ ५८ ३५	४ ५५ ९	५ ५१ १९	६ ४७ ३०	० ४३ ३९	१ ३९ ४९	२ ३५ ५९	३ ३२ १०
पराख्य.	१२ २	७ ४६	२ ऋ ५९	१ध ५२	६ ४५	११ १४	१५ ६	१८ ८	२० २	२१ १२	२१ १३	२० १७	१८ ३५	१६ ६	१३ ०	९ २१	५ २२	१ध. १२	३ ऋ ०	७ ६	११ ०
हार.	१४	१२॥	१२।	१२॥	१३	१५॥	२०	३२	ध. ५०	०	ऋ ६४	३५	२४	२०	१७	१४॥	१४॥	१४।	१५	१५	१७

अथ अहर्गण करने की विधि.

वर्तमान शालिवाहन शाके में १४४२ हीन करके ११ भाग सें लब्ध जो अंक आवे वह चक्र कहलाता है. फिर शेषांक कों १२ से गुण के चैत्र शुदि १ सें गतमास युक्त कर के उसकों दो जग्गे रखे पश्चात् चक्र को द्विगुण करके उसमें १० और युक्त कर के फिर एकजग्गे के अंक में युक्त कर के ३३ भाग सें लब्ध अधिक मास आवे सो दूसरीजगे के अंक में युक्त करना यदि उस वर्ष में अधिकमास होवे तो अधिक मास के पहले के दिनों का अहर्गण करना हो तो उक्त अधिकमास का गणित आवे जिसमें एक न्यून करके फिर युक्त करना चाहिये और अधिकमास सें आगे के महीनों में अहर्गण करनेवाला जैसा गणितागत है उसी कों ही युक्त करने से मासगण होता है. इसको ३० से गुण के गततिथि उसमें युक्त करे पश्चात् चक्र का निरग्र षष्ठांश युक्त करके उसको दोजगे रखे फिर एक जगे ६४ के भाग सें लब्ध अवमदिन आवे सो दूसरी जगे के अंक में हीन किये अहर्गण होता है. **अथ वार लाने की विधिः** चक्र को ५ से गुण के अहर्गण में युक्त किये पश्चात् ७ के भाग से शेष १ आदि बचे भौमवार से गणना चाहिये. यदि जिस दिन के वार तुल्य अहर्गणागत वार नहीं मिले तो अहर्गण में एक न्यूनाधिक करने से शुद्ध अहर्गण होता है. यह वार की न्यूनाधिक्यता तो सिद्धांत गणितागत अहर्गण में ही आती है. जब शकादि अहर्गण में होना तो संभवही है. **अथ सारिणी में मध्यम ग्रह करने की बिधि.** अहर्गण को ६० के भाग से लब्धांक आवे सो मध्यम ग्रह सारिणी में लब्धि कोष्ठक और उक्त भाग से शेष बचे सो सारिणी में शेषांक कोष्टक कहलाता है इन दोनों को युक्त करके फिर चक्रांक के कोष्ठक के अंक को योग किये प्रातमध्यमग्रह होते हैं. **अथ तात्कालिक मध्यम ग्रह करने की विधि.** स्पष्ट घटी तुल्य घटी और पल तुल्य पल निज निज सारिणी में देख के मध्यम ग्रह में युक्त किये तात्कालिक मध्यम ग्रह होते हैं और उक्त घटी पलों को राहु में हीन किये स्पष्ट राहु होता है. **अथ सूर्य स्पष्ट करने की विधि.** सूर्य मंदोच्च २।१९।०।० में तात्कालिक मध्यम सूर्य को हीन करने सें वह मंद-

केंद्र कहलाताहै. इस केंद्र की भुज करनी चाहिये वह तीनसें न्यून (कम) राशि भुज कहलाती है और तीनराशि से अधिक को ६ सें शोधन करना चाहिये. यदि ६ से अधिक ९ तक हो तो ६ अंक उसमें हीन करना चाहिये और ९ से अधिक को १२ से शोध करना चाहिये बस यहीप्रकार से भुज बनाके उसका अंश अर्थात् वह भुजांश कहलाता है. सूर्यस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश के तुल्य कोष्ठक में सूर्य मंद फल को लेके और उस के नीचे गुणक के अंक सें भुजांश के अधस्थ घटी पलों को गुण के फिर पलों को ६० सें ऊंची चड़ा के ऊपरिघटि के भाजक के भाग सें लब्धपल लेके उक्त मंदफल सें जोड के फिर मेषादि केन्द्र के कारण मध्यम सूर्य में वह मंदफल धन और तुलादि केंद्र बस से ऋण किये मंदस्पष्ट सूर्य होताहै.

अथ चरसंस्कार देनेकी विधि.

सायन सूर्य की राशि अंश के कोष्ठक सारिणी में देख के तुलादि रवि में युक्त और मेषादि रवि में हीन किये स्पष्टसूर्य होताहै. **अथ सूर्य की गति लाने की विधि.** भुजांश कोष्ठक मंदफल अधस्थसारिणी में गति फल सूर्य की मध्यम गति ५९।८ में कर्कादि केंद्र के कारणयुक्त और मकरादि केंद्र के कारण हीन किये सूर्य की गति स्पष्ट होती है. **अथ स्थूल अयनांश पलभा, चरखंडा, और चरपल करने की विधि.** शाके में ४४५ हीन करके पश्चात् शेषांक कों ६० सें भाग देने से लब्ध अयनांश और शेष

---

१ सायंकाल में चरपल के विलोम संस्कार देने का कारण यह है कि लंका में सूर्य का उदय और स्वदेश में सूर्य का उदय इन दोनों के अन्तर का नाम चरपल है सो लंका के क्षितिज की तो उन्मंडल संज्ञा और देशांतर के क्षितिज की क्षितिज संज्ञा है अतएव मेषादिराशियों का रवि प्रथम क्षितिज में उदय होके फिर पीछे उन्मंडल में उदय होताहै और प्रथमही उन्मंडल में अस्त होके फिर पीछे क्षितिज में अस्त होताहै जिस से दिन के इष्ट में चरपल कों रवि में ऋण और सायंकाल में धन करनी चाहिये एवं तुलादि दक्षिण गोल में उन्मंडल में प्रथम सूर्य दीख के फिर पीछे से क्षितिज में दीखताहै और प्रथम ही क्षितिज में अस्त होके फिर पीछे उन्मंडल में अस्त होता है जिस सें दिन के इष्ट में चरपल धन करनी और सायंकाल में ऋण करनी चाहिये.

बचे सो घटी और चैत्रादि प्रति मास की ५ पल भी इस के नीचे ले लेनी चाहिये और मेष के सायन सूर्य के दिन द्वादशांगुल शंकु के मध्यान्ह की छाया पलभा कहलाती है. फिर उक्त पलभा को तीन जगे रख के पहले १० दूसरे ८ और तीसरे अंक को १० सें गुण के उक्त यह तीनो चरखंड कहलाता है. परन्तु तीसरे चरखंड को ३ के भाग से लब्ध कर लेना चाहिये फिर सायन सूर्य के भुज की राशि तुल्यगत चरखंड लेके फिर भोग्य चरखंड से अधस्थ अंशादिकों को गुण के फिर ३० के भाग से लब्धगत चरखंड में युक्त किये चरपल होती है. उक्त चरपल देश देश की पृथक् पृथक् होती है जिसमें रामगढ की चरपल १३१ से अधिक नहीं है.

अथ चन्द्रमा के त्रिफल संस्कार देने की विधि.

भूमध्य रेखा के योजनान्तर के ६ भाग से लब्ध घटी पल लेके रेखा से पश्चिम बसने वाला तात्कालिक मध्यम चन्द्रमा में युक्त और पूर्व वासी हीन किये एक फल संस्कृत चन्द्र होता है. चरपल को द्विगुणित करके ९ के भाग से लब्ध घटी पल लेके सूर्य में हीनयुक्त चरपल की उस विधि से ही रेखा संस्कृत चन्द्र में हीन युक्त किये द्विफल संस्कृत चन्द्र होता है और सूर्य मन्दफल के २७ भाग से लब्ध अंशादि सूर्य सदृश विधि से ही द्विफल संस्कृत चन्द्र में हीन युक्त किये त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्र स्पष्ट करने की विधि.

त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा को तात्कालिक चन्द्रोच्च में हीन किये चन्द्र मंद केंद्र कहलाता है. उसकी भुज फिर उसका अंश करके चन्द्रस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश कोष्टक में चन्द्रमा का मन्दफल लेके फिर भुजांश के अधस्थ की घटी पलों को गुणक से गुण के हर के भाग से लब्ध फल लेके मन्दफल में युक्त किये पश्चात् मन्दकेन्द्र मेष तुलादिवस से त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा में धन ऋण किये स्पष्ट चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्रमा की गति लाने की विधि.

भुजांश कोष्टक में मन्दफल अधस्थ चन्द्रगति फल लेके उसके नीचे

गुणक से भुजांश के अधःस्थ घटी पलों को गुण के फिर षष्टिभाग से लब्ध पलों को गतिफल में हीन करके चन्द्र मध्यम गति ७९०।३५ में कर्क मकरादि केंद्र वस से धन ऋण किये चन्द्र की गति स्पष्ट होती है.

अथ उक्त दोनों से सूक्ष्म पंचांग बनाने की विधि

चन्द्र में सूर्य हीन करके फिर शेष राशि का अंश कर लेना फिर १२ के भाग से लब्ध गत तिथि होती है. शेषांक को १२ से शोधित किये तिथि का भोग होता है उस अंश को ६० से गुण के उसमें घटी युक्त करके फिर ६० से गुण के उसमें पल युक्त करके फिर ६० से गुण के चन्द्र सूर्य की गत्यंतर के भाग से लब्ध वर्त्तमान तिथि की घटी पल होती है. ऐसे ही स्पष्ट चन्द्रमा की घटी करके ८०० के भाग से लब्ध गत नक्षत्र होता है. शेषांक को ८०० से शोधित अंक को ६० से गुण के अधःस्थ पल युक्त कर के फिर ६० से गुण के ८०० के भाग से लब्ध भोग्य नक्षत्र की घटी और पल होती है. एवं सूर्य और चन्द्रमा का योग करके उसकी घटी बना के फिर ८०० के भाग से लब्ध गत योग होता है. शेषांक को ८०० से शोधित करके फिर घटी ६० से गुण के अधःस्थ फल युक्त करके फिर ६० से गुण के चंद्र सूर्य की गति योग के भाग से लब्ध वर्तमान योग की घटी पल होती है. यहां कर्ण की घटी पल पूर्ववत् समझनी चाहिये.

अथ भौमादि पांचों के स्पष्ट करने की विधि.

तात्कालिक भौम गुरु और शनि को तात्कालिक मध्यम रवी में हीन किये अपना अपना शीघ्र केंद्र होता है और बुध और शुक्र इन दोनों का शीघ्र केन्द्र तात्कालिक मध्यम ही को पूर्वोक्त समझना चाहिये उक्त शीघ्र केन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो १२ से शोध के फिर उसका अंश बना के शीघ्र फल सारिणी के अंश तुल्य सूत्र कोष्ठक में शीघ्र फल लेके फिर शीघ्र केन्द्र की कला के कोष्ठक में कला और विकला के कोष्टक में विकला लेके उक्त सारिणी में ऋण धन देख के शीघ्र फल में ऋण धन करके उस फल को आधा करके तात्कालिक मध्यम ग्रह में मेषादि शीघ्र केंद्र के कारण तो धन और तुलादि केंद्र के वस में ऋण किये शीघ्रार्द्ध फल संस्कृत-

ग्रह होता है.

अथ मंदस्पष्ट ग्रह करने की विधि.

शीघ्रार्द्ध फल संस्कृत ग्रह को निज निज मंगल ४ बुध ७ बृहस्पति ६ शुक्र ३ शनि ८ के मन्दोच्चांक राशी में हीन किये मन्दकेन्द्र होताहै. इस मन्द केन्द्र का उक्त विधि से भुजांश बना के मन्द फल सारिणी में भुजांश कोष्ठक के सूत्र में ग्रह का मन्दफल लेके फिर मन्दकेन्द्र की कला के तुल्यकला और बिकला के कोष्ठक में बिकला सारिणी से लेके मन्द फल में युक्त करके फिर मेष तुलादि मन्द केन्द्र के कारण उक्त विधि से तात्कालिक मध्यम ग्रह में क्रम से धन ऋण किये मन्दस्पष्ट ग्रहहोता है.

अथ स्पष्ट ग्रह करने की विधि.

उक्त मन्दफल को ग्रह में धन किया होतो ऋण और ऋण किया होतो धन शीघ्र केन्द्र में किये निज निज ग्रह का द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है. इस को ६ राशि से अधिक हुए १२ मे शोध के उक्त विधि से अंश कर के शीघ्रफल सारिणी के सूत्र कोष्ठक में शीघ्र फल लेके उक्त द्वितीय शीघ्र केन्द्र की कला तुल्य कला और विकला तुल्य विकला ऋण धन सारिणी से लेके शीघ्र फल के उक्त विधि से संस्कार देके फिर मेष तुलादि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के कारण क्रम से धन ऋण मन्द स्पष्टग्रह में करने से ग्रहस्पष्ट होता है.

अथ भौमादिकों की गति स्पष्ट करने की विधि.

मन्द स्पष्ट फल सारिणी में जिस ग्रह का गति फल हो वह कर्कादि केन्द्र के कारण तो धन और मकरादि केन्द्र के कारण ऋण संज्ञक कह लाता है और शीघ्र फल सारिणी में गतिफल ऋण धन जैसा है वैसा उसी जगे लिखा हुवा है. अब यहां दोनों ठौर धन धन हो तो धनकरता

और एक गतिफल तो धन हो और दूसरा ऋण होतो दोनों के अन्तर किये ग्रह की स्पष्ट गति होती है.

अथ इन पांचों के उदयास्त वक्र-मार्ग जानने की विधि.

उक्त भौमादि ग्रह द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश के वस से उदयास्त वक्र-मार्ग होते हैं. जिसमें मंगल २८ बुध २०५ गुरु १४ शुक्र १८३ शनि १७ यह शीघ्रांशों पर पूर्व में उदय होते हैं. और मंगल ३३२ बुध १५५ बृहस्पति ३४६ शुक्र १७७ शनि ३४३ इन शीघ्रांशोंपर पश्चिम में अस्त होते हैं. मंगल १६३ बुध १४५ गुरु १२५ शुक्र १६७ शनि ११३ इन अंशों पर वक्र होते हैं. और मंगल १९७ बुध २२५ बृहस्पति २३५ शुक्र १९३ शनि २४७ इन अंशों पर मार्ग होतेहैं बुध ५० अंशोंपर पश्चिम में उदय होके फिर ३१० शीघ्रांशों पर पूर्वमें अस्त होता है. और शुक्र २४ अंशोंपर पश्चिम में उदय होके फिर ३३६ शीघ्रांश पर पूर्व में अस्त होता है[1]. बाकी और ग्रह सदैव पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होते हैं.

अथ उदयास्त वक्र मार्ग के दिन और इष्ट लाने-की विधि.

जिस दिन इष्ट घटी पर ग्रह का द्वितीय शीघ्रांश उक्त वक्र मार्ग उदयास्त अंशों से न्यूनाधिक्य हो जिसका अन्तर करके भौम के अंशों को दुना बुध के अंशों को ३ के भाग से लब्ध लेवे. गुरु के अंश दो जगे रख के एक जगे ९ के भाग से लब्ध लेके दूसरी जगे के अंक में युक्त करदेना चाहिये. शुक्र के अंशों को १० से गुण के ६ के भाग से लब्ध लेवे और

---

१. दूरस्थितः स्वशीघ्रोच्चाद्ग्रहः शिथिलरश्मिभिः । सव्येतराकृष्टतनुर्भवेद्वक्र गतिस्तदा ॥ इति सूर्यसिद्धांते. अर्थात् अपने शीघ्रोच्च से ग्रह दूर परजाने के कारण शिथिल रश्मि होके कुछ पीछा हटता है वह वक्री कहलाता है. स्वं शीघ्रोच्च के नजीक आनेसे फिर आगे चलताहै जिससे मार्गी ग्रह कहलाता है.

शनि का शीघ्र भागांतर जैसा है वैसा उक्त शीघ्रभागों से अधिक होतो ऋण और कम होतो धन इष्ट वारादि में करने से ग्रह का उदयास्त वक्र मार्ग दिनादि होते हैं ॥ इति श्री मनुरचिते दैवज्ञ विनोदे सुभाषा विभूषिते सारिणीतो ग्रह स्पष्टीकरण विधि कथनं नाम अष्टादश विनोदः ॥१८॥

मुख्य नगरों के अक्षांश पलभा रेखांतर पलानि.

शहर	रेखा	अक्षः	पलभा	शहर	रेखा	अक्षः	पलभाः	शहर	रेखा	अक्षः	पलभाः
काश्मीर	पू ८	३४।६	७।५४	ग्वालियर	पू २४	२६।१२	५।५४	पूना	प १९	१८।२९	४।०
लाहौर	प ५	३१।३३	७।२२	उदयपुर	प २०	२४।३७	५।३०	बीकानेर	प २४	२८।१	६।३३
दिल्ली	पू २४	२८।३७	६।३२	उज्जैन	०	२३।९	५।७	अमृतसर	पू ९	३१।३७	७।२३
नेपाल	पू ९३	२७।४३	६।१८	कलकत्ता	पू १२८	२२।३६	४।४९	जंबू	पू ७	३२।४४	७।४३
जयपुर	प १	२६।५६	६।६	मुंबई	प २९	१८।५७	४।७	द्वारका	प ७१	२३।१५	४।५५
जोधपुर	प ३२	२६।२०	५।५६	मदरास	पू ४५	१३।४	२।४७	नागपुर	पू ३३	२१।८	४।३९
सीकर	प ११	२७।४	६।१०	रामेश्वर	पू ३५	९।१५	१।५७	सिंहपुर	पू २८३	१।२०	०।१७
रामगढ़	प १२	२७।१०	६।१२	लंडन	प ७५८	५१।३१	१५।६	कांची	०	९।५६	२।६
काशी	पू ७२	२५।२०	५।४५	काबुल	प ६६	३४।२७	८।३	जबलपुर	पू ४४	२३।९	५।७
सिंध है०	प ७४	२५।२४	५।४१	जगन्नाथ	पू १०१	१९।४६	४।११	भडोच	प २७	२१।४१	४।४६
हैदराबाद नि०	पू २८	१७।१९	३।४४	पारीस	७३७	४८।५०	१३।४३	ढाका	पू १४७	२३।४५	५।१६

प्रसिद्ध देश वा नगरों के लग्नमान.

लग्न	लंका	जयपुर	जोधपुर	सीकर	श्रीनगर	लाहोर	दिल्ली	नेपाल
मी. मे.	२७८	२१७	२१९	२१७	२०३	२०५	२१३	२१५
कुं. वृ.	२९९	२५१	२५२	२५०	२३६	२४०	२४७	२४९
म. मि.	३२३	३०३	३०४	३०३	२९७	३०१	३०२	३०२
ध. क.	३२३	३४३	३४२	३४३	३४९	३४५	३४४	३४४
वृ. सिं.	२९९	३४७	३४६	३४८	३६२	३५८	३५१	३४९
तु. कं.	२७८	३३९	३३७	३३९	३५४	३५१	३४३	३४१

लग्न	काशी	सिंधहै०	हैदराबाद	ग्वालियर	उदयपुर	उज्जैन	कलकत्ता	मुंबई
मी. मे.	२२१	२२२	२४१	२१९	२२३	२२७	२३०	२३७
कुं. वृ.	२५३	२५४	२७०	२५२	२५५	२५९	२६१	२६७
म. मि.	३०४	३०५	२०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३१०
ध. क.	३४२	३४१	३३५	३४२	३४१	३४०	३३९	३३६
वृ. सिं.	३४५	३४४	३२८	३४६	३४३	३३९	३३७	३३१
ध. कं.	३३५	३३४	३१५	३३७	३३३	३२९	३२६	३१९

लग्न	मदरास	रामेश्वर	लंडन	काबुल	जगन्नाथ	पारीस	पूना	बीकानेर
मी. मे.	२५१	२५९	१२७	१९८	२३५	१४१	२३८	२१५
कुं. वृ.	२७७	२८४	१७९	२३५	२६५	१९०	२६७	२४८
म. मि.	३१४	३१७	२७३	२९७	३०९	२७८	३१०	३०२
ध. क.	३३२	३२९	३७३	३४१	३३७	३६८	३३६	३४४
वृ. सिं.	३२१	३१४	४१९	३६३	३३३	४०८	३३१	३५०
ध. कं.	३०५	२९७	४३९	३५८	३२१	४१५	३१८	३४१

देशांतर लग्नमान सारिणी.

अमृतसर	जंबु	द्वारका	नागपुर	सिंहपुर	कांची	जबलपुर	भडोच	ढाका	रामगढ	लग्नमान
२०५	२०१	२२९	२३२	२७६	२५७	२२७	२३१	२२६	२१६	मे. मी.
२४०	२३८	२६०	२६२	२९७	२८३	२५८	२६१	२५७	२५०	वृ. कुं.
२९९	२९८	३०७	३०८	३२३	३१६	३०६	३०८	३०६	३०३	मि. म.
३४७	३४८	३३९	३३८	३२३	३३०	३४०	३३८	३४०	३४३	क. ध.
३५८	३६०	३३८	३३६	३०१	३१५	३४०	३३७	३४१	३४८	सिं. वृ.
३५१	३५५	३२७	३२४	२८०	२९९	३२९	३२५	३३०	३३९	कं. तु.

प्रसिद्ध नगरों के चरखंडा.

श्रीनगर	७९।६३।२६	काशी	५७।४६।१९	मदरास	२७।२२।९	अमृतसर	७३।५९।२४
लाहोर	७३।५९।२२	सिंधहैं०	५६।४५।१८	रामेश्वर	१९।१५।६	जंबु	७७।६१।२५
जोधपुर	५९।४७।१९	द. हैदराबाद	३७।२९।१२	लंडन	१५१।१२०।५०	द्वारका	४९।३९।१६
जयपुर	६१।४०।२०	ग्वालियर	५९।४७।१९	काबुल	८०।६४।२६	नागपुर	४६।३७।१५
रामगढ	६२।४९।२०	उदयपुर	५५।४४।१८	जगन्नाथ	४३।३४।१४	कांची	२१।१६।७
सीकर	६१।५९।२०	उज्जैन	५१।४०।१७	पारीस	१३७।१०९।४५	जबलपुर	५१।४१।१७
दिल्ली	६५।५२।२१	कलकत्ता	४८।३८।१६	पुना	४०।३२।१३	भडोच	४७।३८।१६
नेपाल	६३।५०।२१	मुंबई	४१।३२।१३	बीकानेर	६३।५१।२१	सिंहपुर	२।२।०

सूक्ष्म गति चक्रम्.

सूर्य.	चन्द्र.	उच्च.	राहु.	भौम.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१३	०	०	०	३	०	०	०
५९	१०	६	३	३१	६	४	३६	२
८	३४	४०	१०	२६	२४	५९	५९	०
१०	५३	५१	४८	३१	८	८	४०	२३
२७	५६	२६	२५	३	७	३४	६	४
९	०	०	०	०	०	०	०	०
५९	७९०	६	३	३१	१८६	५	३७	२
८	३५	४१	११	२६	२४.	०	०	०

द्वि· पंचाशदवधौराभ दुर्ग चर पलं अय० २३।०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
४७ क्रं.	६१	७२	८३	९४	१०५	११३	११७	१२२	१२६	१३१	१२५	११९	११६	११३	१०६	९९	
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	
८४	७२	६३	४७	३३	१९	६ क्रं.	६ घं.	२२	३७	५०	६५	७६	९५	१०७	१११	११५	
३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
११८	१२४	१२९	१२४	१२०	११६	११३	१०५	९३	८१	६५	५५	४१	२६	१२ घं.	२ क्रं.	१६	३०

त्रयोदश दिनात्मक चाल. १३

र.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	५	०	११	०	१	०	०	०
१२	२२	१	२९	६	१०	१	८	०
४८	१७	२६	१८	४८	२३	४	०	२६
४६	३३	५१	३१	४५	१४	४९	५६	५

चतुर्दश दिनात्मक चालनं १४

सू.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	६	०	१२	०	१	०	०	०
१३	४	१	११	७	१२	१	८	०
४७	१८	३३	१५	२०	२९	९	३७	२८
५५	८	३२	२१	११	२८	४८	५५	६

पंचदश दिनात्मक चालन. १५

र	चं	उ.	रा.	मं	बु.	गु.	शु.	श.
०	६	०	११	०	१	०	०	०
१४	१७	१	२९	७	२६	१	९	०
४७	३८	४०	१२	५१	३६	२४	२४	२०
२	४३	२३	१८	३८	२	४०	५५	६

षोडश दिनात्मक चालन. १६

र.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु	गु.	शु.	श.
०	०	०	११	०	१	०	०	०
१५	०	१	२९	८	११	१	१	०
४६	४९	४६	९	२३	४२	११	५१	३२
११	१८	५४	७	५	२६	४६	५५	६

सप्त दिनात्मक चालन.

सू.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	चं.	चं.उ.
०	०	०	०	०	०	०	३	०
६	३	२१	०	४	०	०	२	०
५३	४०	४४	३४	१८	१४	२२	१४	४६
५७	६	४९	४५	५८	३	१६	४	४६

वक्र मार्गोदयास्त भागाः

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रहाः
२८	२०५ पु. उ. ५० प. उ.	१४	२४ प. उ. १८३ पु. उ.	१७	उदय
३३२	१५५ प. ऽस्त ३१० पु. ऽस्त	३४६	१७७ प. ऽस्त ३३६ पु. ऽस्त	३४३	ऽस्त
१६२	१४५	१२५	१६७	११३	वक्र.
१९७	२१५	२३५	१९३	२४७	मार्गी.
१७	११	११	९	१५	कालां.

सूर्यलब्धिकोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
सूर्य. लब्धि	०	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९
	०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१७	१६	१५
	०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८
	०	२०	२०	३०	४१	५१	२	१२	२२	३३	४२	५३	३	१३	२५	३४	४४	५४
कोष्ठ	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
सूर्य लब्धि.	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	८
	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	४	३	२	१	०	१९
	२७	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६
	५	१५	२६	३७	४६	२५	६	१७	२७	३६	४८	५८	८	१८	२९	३९	५०	०
कोष्ठ	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
सूर्य लब्धि	१०	०	२	४.	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८
	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४
	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१५	२४	३२	४०	४८	५६	४	१३
	१०	२०	३१	४१	५१	२	१३	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	४
को.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
सूर्य लब्धि	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	५	६
	१३	१२	११	१०	९	९	८	७	६	५	४	३	२	२	१	०	२९	२८
	२१	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	३४	४

सूर्यशेषांक कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सूर्य शेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७
	०	८	१६	२५	३३	४१	५०	५०	५	१४	२२	३०	३८	४६	५४
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
सूर्य शेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४
	३	१२	१९	२०	३५	४३	५२	५२	८	१६	२५	३०	४१	४९	५७

सूर्य ओषांक कोष्ठक.

कोष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
सूर्य-ओषांक	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१
	५	१४	२३	२०	३८	४६	५४	०	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९

कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
सूर्य-ओषांक	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	९
	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२

चन्द्रलब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	२	४	७	९	११	२	४	६	९	११	१	४	६	८	११	०	३
अं.	०	१०	२१	१	१२	२२	३	१४	२४	५	१५	२६	६	१७	२८	८	१९	२९
क.	०	३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४२	१७	५२
वि.	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५५	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	५१	४३

को०	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	६	८	७	९	३	६	८	१०	१	३	५	८	१०	०	३	५	६	१०
अं.	१०	२१	१	१२	२२	३	१३	२४	५	१५	६	६	१७	२८	८	१९	२९	१०
क.	२७	२	१७	१२	४७	२१	५६	३१	६	४२	६	५१	२५	०	१५	१०	४५	२०
वि.	३५	२७	१९	११	३	५४	४६	३८	३०	२२	१४	६	५८	५०	४२	३४	२६	१८

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	०	३	५	७	१०	०	२	५	७	९	०	२	४	७	९	११	२	४
अं.	२०	१	१२	२२	३	१३	२४	४	१५	२६	६	१७	२७	८	१९	२९	१०	२०
क.	५५	३०	४	३९	१८	४९	२४	५९	२४	८	४३	१८	५३	२८	३	३८	१३	४७
वि.	१०	२	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५	५७	४९	४१	३३	२५	१०	९	१	५२

कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	७	९	११	२	४	६	९	११	१	४	६	८	११	१	३	५	७	१०
अं.	१	११	२२	३	१३	२४	४	१५	२६	६	१७	२७	८	१८	२९	१०	२०	१
क.	२१	५७	३२	७	४२	२७	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५६	३०	५	४०	१५
वि.	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८

चन्द्र शेष कोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६
अं.	०	१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४
क.	०	१०	२१	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८
वि.	०	३५	१०	४४	१९	५४	२९	४	३९	१४	४९	२४	२८	३३	८
कोष्ठ	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	०	०
अं.	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१९	३	१६	२९	१२	१५	८	२२
क.	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	६
वि.	४३	१८	५३	२८	२०	३७	६२	४७	२२	५७	३२	७	४१	१६	५१
कोष्ठ	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
अं.	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	९
क.	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५२	३	१३	२४	३४	४५
वि	२६	१	३६	११	४५	२०	५५	३०	५	४०	१५	४९	२४	५९	३४
कोष्ठ	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१
अं.	२२	६	१९	२	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१४	२७
क	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४
वि	९	४४	१९	५४	२८	३	३८	१३	४८	२३	५८	३३	७	४५	१७

उच्च लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३
क.	०	४०	२२	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५३	३४
वि.	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४
कोष्ठ.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३
क.	१५	५६	३०	१८	५८	३९	२०	१	४२	२३	४	४४	२५	६	४७	२८	९	५०
वि.	२५	१७	९	०	५१	४२	२४	२६	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	८	०

उच्च लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठ	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
अं.	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२४
क.	३०	११	५२	३३	१४	५५	३६	१६	५७	३८	१९	०	४१	२२	२	४३	२४	५
वि.	५९	४३	३४	२५	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	८	०	५१	४३	३४	२६

कोष्ठ.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३
अं.	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२४	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२५
क.	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२	१३	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२०
वि.	१७	८	०	५१	४३	३४	२६	१७	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	४६

उच्च शेष कोष्ठक

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
क.	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३
वि.	०	४१	२२	३	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२

कोष्ठ.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
क.	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५३	०	७	१३
वि.	१३	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	३९	२१	१	४२	२३	४	४५

कोष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क.	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३
त्रि	२६	७	४७	२८	९	५०	३१	१२	५३	३३	१४	५५	३६	१७	५८

कोष्ठ.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
क.	०	७	१४	२०	२७	३४	४३	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४
वि.	३९	१९	०	४१	२३	३	४४	२५	५	४६	२७	८	४९	३०	११

राहु लब्धि कोष्ठक.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अं.	०	२६	२३	२०	१७	१४	१०	७	४	१	२८	२५	२२	१८	१५	१२	९	५
क.	०	४९	३८	२७	१६	५	५५	४४	३५	२२	११	१	५०	३९	२८	१७	७	५६
वि.	०	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३५	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७

को.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८
अं.	२	२९	२६	२३	२०	१६	१३	१०	७	४	०	२७	२४	२१	१८	१५	११	८
क.	४५	३४	२३	१३	२	५१	४०	२९	१९	८	५७	४६	३५	२४	१४	३	५२	४१
वि.	२९	४०	५२	४	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४६

को.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६
अं.	५	२	२९	२५	२२	१९	१६	१३	१०	६	३	०	२७	२४	२०	१७	१४	११
क.	३०	२०	९	५८	४७	३६	२६	१५	४	५३	४२	३२	२१	१०	५१	४८	३८	२७
वि.	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३२	५१	९	१४

कोष्ठ.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४
अं.	८	५	१	२८	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३	०	२६	२३	२०	१७	१४
क.	१६	५	५४	४६	३३	२२	११	०	४९	३९	१८	१७	६	५५	४५	३४	२३	१२
वि.	२६	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६

राहु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	०	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९
क.	०	५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८	२५	२१	१८	१५
वि.	०	४९	३८	२८	१७	७	५५	४४	३४	२३	१२	१	५०	३९	२९

कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
क.	१२	९	५	२	५९	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३७	३४	३०	२७
वि.	१८	७	५६	४५	३५	१३	१३	२	५१	४१	३०	१९	८	५७	४७